# कहत कबीर

(व्यग्य-सग्रह)


ज्ञान भारती
४/१४, रूपनगर दिल्ली ११०००७

# कहत कबीर

## हरिशंकर परसाई



ज्ञान भारती
४/१४ रूपनगर
दिल्ली ११०००७
द्वारा प्रकाशित

 ● मूल्य ३५ ००

प्रथम संस्करण
१९८८

प्रदीप प्रिंटर्स नयी दिल्ली
में मुद्रित
[158 1 11 1088/G]

KAHAT KABEER (Satire) by Hari Shankar Parsai Rs 35 00

सुखिया सब ससार है खावै और सोवै
दुखिया दास कबीर है जागै और रोवै

# कैफियत

इस पुस्तक म मेरे कुछ 'सुनो भई साधो' स्तभ सव[illegible] स्तभ मैं सन् १९५८ से दैनिक 'नयी दुनिया', अब 'नवीन दुनिया' जबलपुर, में लिख रहा हू। १९४७ से ही मैं नियमित स्तभ-लेखन कर रहा हू। १९४७ से 'प्रहरी' साप्ताहिक, जबलपुर मे 'अघोर भैरव' के उपनाम से कभी-कभी स्तभ लिखा। फिर 'कल्पना' मे 'और अत मे', 'सारिका' मे 'कबिरा खडा बाजार मे', 'तीसरी आजादी का जाच कमीशन' और 'तुलसिदास चदन घिसै' लिखे। १९५६-५७ मे 'परिवतन' जबलपुर मे 'अरस्तू की चिट्ठी' स्तभ लिखा। 'करेंट' मे 'माटी कहे कुम्हार से' तथा 'जनयुग' मे 'ये माजरा क्या है' स्तभ लिखे। अभी भी 'सुनो भई साधो' चल रहा है। 'देशबधु' मे 'पूछिए परसाई से' सप्ताहिक स्तभ मे पाठको के प्रश्नो के उत्तर देता हू।

विपुल सामग्री इन स्तभो की मेरे पास है, जिसमे से बहुत थोडी पुस्तक-रूप मे आयी है। इस पुस्तक मे सुनो भई साधो' स्तभ के कुछ लेख हैं।

इन्हें पाठकों ने शुरू से बहुत पसद किया। साहित्य शास्त्रियो ने पहले खीजकर इनकी अवहलना की। पर मैं लिखता गया—

न सताइश की तमन्ना न सिला की परवा
न सही गर मरे अशआर मे मानी न सही।

तात्कालिक घटना के सदभ मे लिखे इन स्तभो के व्यापक और गभीर प्रयोजनो को पिछले कुछ समय से शास्त्री समझ रहे हैं और सौंदयशास्त्र मे तरमीम करने की जरूरत भी महसूस की जा रही है। बहरहाल, यह जो हो, पाठको के हाथ मे है।

पुस्तक की सामग्री का चयन और सपादन डॉ० श्यामसुदर मिश्र ने किया है।

—हरिशकर परसाई

## क्रम

# कहत कबीर

## बी जे पी. का नाटक बदला

साधो, भारतीय जनता पार्टी का सधा हुआ नाटक बहुत मनोरंजक है। इसे देखकर दिल खुश हो जाता है। अगर ये नाटक टिकिट में खेलें तो बहुत पैसे मिलें तथा चुनाव के लिए पैसा इकट्ठा हो। अभी एक ही हफ्ते में तीन नाटक हो गये। डायरक्टर के आदेश से राम जेठमलानी ने अकाली नेता लोंगोवाल की रिहाई की याचिका सर्वोच्च न्यायालय में पेश की। फिर निर्देशक के ही आदेश से एक पार्टी-नेता मदनलाल खुराना ने इस पर एतराज किया। तब निर्देशन पर राम जेठमलानी ने यह बयान दिया कि मैं ठीक कर रहा हूं। मैं हमेशा हिंदू सिख भाई-चारे का समर्थक रहा हूं। मैं तो लोंगोवाल के पार्टी के लोगों को एतराज है तो मैं उपा हूं।

साधो, यह हम लोगों के लिए बड़ा सस्पें की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे। पार्टी में फूट पड़ जायेगी ? दर्शक सांस रोके करता रहा। तब भारतीय जनता पार्टी की क सीन बदला। बैठक में तय हुआ कि पार्टी तो हमेशा समर्थक रही है। हम अपने अकाली भ राम जेठमलानी ठीक कर रहे हैं वे कृपाकर राम जेठमलानी ने कृपा करके इस्तीफा वापस

गयी कामेडी मे। मैंने समाचार पढा तो बडी देर तक तालियां बजायी।

साधो, हिटलर का प्रचारमंत्री गोबिल्स कहा करता था कि एक झूठ को सौ बार कहो तो लोग उसे सच मान लेते हैं। भारतीय जनता पार्टी वास्तव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है जो हिटलर की नाजी पार्टी की पद्धति पर ही चल रहा है। इसलिए भारतीय जनता पार्टी के लोग लगातार झूठ बोलते है। गलती से भी सच नही बोलते, न सच्चा आचरण करते। आज एक बात कहकर, कल ठीक उसके उल्टा कहने लगेंगे। यह भी हिटलर की नीति थी। १९४० मे हिटलर ने फ्रांस और ब्रिटेन से म्यूनिख समझौता किया मगर कुछ दिनों बाद हमला कर दिया। यही आचरण भारतीय जनता पार्टी करती है।

साधो, स्वर्ण मंदिर परिसर में सैनिक कार्यवाही के पहले दो महीनों से सरकार से मांग कर रहे थे कि तुरंत सैनिक कार्यवाही की जाये। कारण यह था कि पंजाब मे उनकी पार्टी के लोग मारे जाने लगे थे और अटलबिहारी बाजपेयी को भी जान से मारने की धमकियां मिलने लगी थी। तब लाखों स्वयंसेवकों की शिक्षित फौज जिनके पास है उन्होंने सरकार से प्रार्थना की कि अटलबिहारी की सुरक्षा का प्रबंध किया जाये। साधो सैनिक कार्यवाही हो गयी। स्वर्ण मंदिर परिसर से आतंकवादी गिरफ्तार कर लिये गये और बहुत से मार दिये गये। अब वहां बिलकुल शांति है। मगर नाटक देखो, सेना भेजने की मांग अटल बिहारी ने की थी। मगर अब कार्यकारिणी एक प्रस्ताव पास करती है कि सैनिक कार्यवाही की उच्चस्तरीय जांच होनी चाहिए। खुद ने ही सैनिक कार्यवाही की मांग की थी और जब वह हो गयी तब खुद ही मांग करते हैं कि उसकी उच्चस्तरीय जांच होनी चाहिए। तीन महीने से अकालियों को एक चेहरा दिखा रहे थे और अब उससे ठीक अलग चेहरा दिखा रहे हैं। सेना प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के आदेश से गयी थी। इनसे उच्च स्तर का और कौन है इस देश के शासन में ! तो उच्च स्तरीय जांच किनसे करवाएंगे ? मैं समझता हूं कि यह पार्टी चाहती है कि रोनाल्ड रीगन और जनरल जिया उल हक मिलकर सैनिक कार्यवाही की जांच करें। अटलबिहारी शायद दोनों से प्रार्थना भी

करेंगे कि हुजूर आप दोनों जांच करके बतायें कि भारत सरकार ने सैनिक कार्यवाही की तो ठीक की या गलत।

साधो, अब दूसरा सीन भी। तीन महीने पहले से तो यह पार्टी अकालियों के खिलाफ कठोर से कठोर कार्यवाही करने की मांग करती रही। राष्ट्रपति ने नजरबंदी के लिए एक अध्यादेश जारी किया। उस अध्यादेश में छेद हैं जिनमें से अकाली बाहर निकल सकते हैं। सारे आतंकवादी भी बाहर निकल सकते हैं और फिर हत्या शुरू कर सकते हैं। इस छेद को बंद करने के लिए राष्ट्रपति ने अध्यादेश में संशोधन किया। इसका भारतीय जनता पार्टी को स्वागत करना चाहिए था क्योंकि लगातार कठोर सैनिक कार्यवाही की मांग यही पार्टी कर रही थी। मगर अकालियों को खुश करने के लिए कार्यकारिणी ने इस संशोधन का विरोध किया।

साधो इस कार्यकारिणी में एक और दर्दनाक बात हो गयी। कई महीनों से चौधरी चरणसिंह यह कह रहे हैं कि लोकदल और भारतीय जनता पार्टी का विलीनीकरण हो जायेगा। चौधरी को राजनीति बहुत कम समझ में आती है। वे यह नहीं समझ सकते कि भारतीय जनता पार्टी वास्तव में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है जिसकी कार्यपद्धति और उद्देश्य चौधरी से भिन्न है। कोई फासिस्ट संगठन इस तरह किसी में विलीन नहीं होता। वे लोग चौधरी का उपयोग कर रहे हैं उनका शोषण कर रहे हैं और उनके राजनीतिक प्र
तक निचोड़ लेंगे। कार्यकारिणी ने साफ नि
अपने अस्तित्व को अलग रखेंगे। किसी के
चौधरी चरणसिंह दिल्ली में बैठे-बैठे सिर
की मीठी लच्छेदार भाषा ने बूढ़े जाट नेता

साधो, तुम पूछोगे कि यह सब नाटक
लोग अब कह रहे हैं कि हम हिंदू सिख एक
येंगे। सही बात यह है कि पंजाब में हिंदू
नहीं। किसी सिख किसान ने किसी
किया। सिख आतंकवादियों ने उन्हें मारा

चाहे सिख हो, या हिंदू। ऐसे में जब इसकी जरूरत ही नहीं है तो हिंदू सिख भाई चारे का अभियान चलाने का मतलब है—हिंदू और सिख में झगड़ा पैदा करना। असल में ये निराश लोग हैं। सी० आई० ए० की योजना में यह था कि पंजाब में एक हिंदू मारा जायेगा तो बाकी भारत में कई सिख मारे जायेंगे। मगर ऐसा बिलकुल नहीं हुआ। इससे सी० आई० ए० भारतीय जनता पार्टी और अकाली दल निराश और दुखी है। वे सारे भारत में उपद्रव नहीं फैला सके। इसलिए हिंदू सिख भाई चारा अभियान के नाम पर यह नयी कोशिश है।

साधो योजना यह है कि अकालियों को पटाकर ऐसी स्थिति बनायी जाये कि आगामी चुनाव में अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी में मिली जुली सरकार बनायी जाये। मगर अटलबिहारी लोंगोवाल को यह विश्वास कैसे दिलायेंगे कि मैंने सैनिक कार्यवाही की मांग नहीं की लस्सी पिलाने की मांग की थी।

१ जुलाई, १९८४

# फिसलने के सिद्धांत

साधो, इस दृश्य पर हंसा जाय कि रोया जाय ! अगर यह मदारी का खेल होता और बंदर बन्दरिया को दुल्हन बनाकर घूमता, तो हम हंसते और पैसा देते। मगर यह राजनीति है जिस पर ७० करोड़ आदमियों का भला बुरा निर्भर है। न चरणसिंह बंदर और न अटलबिहारी वाजपेयी बंदरिया। या न वाजपेयी बंदर, न चरणसिंह बूढ़ी बंदरिया। ये राजनेता हैं। ये इस देश पर राज कर चुके हैं। चरणसिंह प्रधानमंत्री रह चुके हैं। अटलबिहारी विदेशमंत्री रह चुके हैं। ये फिर इस देश के भाग्य विधाता बनने की कोशिश कर रहे हैं। और हमें यह सोचकर हंसी नहीं आती, रोना आता है कि इनका फिर राज हमारे देश पर हो सकता है।

साधो, अटलबिहारी आजकल चरणसिंह को लेकर आम सभाओं में जाते हैं। आम सभाओं में अटलबिहारी की चुटकुलेबाजी के कारण भीड़ काफी होती है। सभा के मंच पर ७८ साल के बूढ़े चरणसिंह को लेकर अटलबिहारी इस तरह पहुंचते हैं, जैसे ऐलान करते जाते हैं—बेचारा बूढ़ा अपंग है। बुद्धि भी मंद पड़ गयी है। सीधा आदमी है। जैसा लोग बहका देते थे, बहक जाता था। एक से एक दुष्ट पड़े हैं, राजनीति में। मगर अब मैंने बेचारे बूढ़े को संभाल लिया है। आदमी भला है। जाटों में बड़ी इज्जत है। जाट पूजते हैं, इस बाबा को।

साधो, अटलबिहारी चुस्त, चालाक, चतुर राजनीतिज्ञ हैं। वे भूले नहीं हैं, इसी आदमी ने आर० एस० एस० का विवाद उठाकर जनता

पार्टी तोड़ी थी और दवरम की उस घोषणा को झूठा कर दिया था कि ढाई साल म जनसघ सरकार पर कब्जा कर लेगा—यानी अटल बिहारी प्रधानमत्री होगा हमारा स्वयसेवक। वाजपेयी को याद है। वह इस बूढे को निचोडने की कोशिश मे है जिसस इसका रस—जाट वोट—ले लें और इसे मरे नेर की खाल की तरह भूसे से भरवाकर रख दें। तब जाट उसके दर्शन करें और अटलविहारी के ब्राह्मण चरण छूकर उन्हे वोट दें।

साधो, चौधरी ने सावजनिक बयान दिया है—मैंने राजनारायण के कहने म आकर तब जनता पार्टी तोड दी थी। राजनारायण ने मुझे बहका दिया था। अगर मैंने तब वाजपेयी जी की बात मान ली होती, तो जनता पार्टी नही टूटती। चौधरी खुला एलान कर रहे है कि मैं ऐसा वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ हू, जो किसी के बहकावे म आ जाता हू। इसका एक अर्थ यह भी है कि इस बार मैं वाजपेयी के बहकाने म आ गया। फिर गलती हो गयी। खैर, मैं गलती सुधारता हू। भारतीय जनता पार्टी म सबध तोडकर पाच पार्टियो के मोर्चे म जा रहा हू। राजनारायण का कहना मान लेता तो इस बार आर० एस० एस० के चक्कर मे नही पडता।

साधो, राजनारायण तब जानता था कि चौधरी बिना प्रधानमत्री हुए रहेगा नही। और जनता पार्टी के तोडे बिना वह प्रधानमत्री बन नही सकता। इसके साथ ही इदिरागाधी का समर्थन लेना पडेगा। इसके लिए राजनारायण ने सजय से बात की। और चरणसिंह ने इदिरा जी का समर्थन इस विश्वास से मान लिया कि दोनो एक मा के जाये भाई-बहन हैं। बहन अपने प्यारे भैया को प्रधानमत्री बना रही है। सब जानते थे कि इदिरा गाधी मझधार म डुबायेंगी। मगर चौधरी तो भारत के प्रधानमत्रियो की लिस्ट म अपना नाम लिखाना चाहते थे। राजनारायण ने चरणसिंह की इच्छा ही पूरी की थी।

साधो, जिसे जोकर समझा जाता है वह बडा काइया राजनीतिज्ञ है। जो हसी हसी म चरणसिंह का 'कुत्ता' बन गया था। फिर हनुमान बन गया था। फिर प्रोमोट होकर लक्ष्मण हो गया था। वह

चमत्कारी पुरुष जिसने विंध्येश्वरी देवी की पूजा की थी, तो हफ्ते भर मे देवी के आभूषण चोरी चले गये थे। वह जादूगर—सिर पर लाल कपडा बाघे, दाढीदार ठुड्डी को छडी के बेंट पर टिकाये, काइयापन से देख रहा है, सब कुछ। हनुमान कौन-सी कुलाच लेगा, इसका कुछ ठिकाना नही है। और चरणसिंह को पार्टी बदलने मे एक सेकड लगता है। पूरी जिंदगी उनकी पार्टी बदलते निकल गयी है। अभी चौधरी भारतीय जनता पार्टी के गले म है पेट मे नही गये। कहावत है—जाट मरा तब मानिय जब तेरही हो जाय। हनुमान राजनारायण अपने राम को अहिरावण की कैद से छुडाकर फिर कधे पर बिठाकर ला सकता है। अटलबिहारी गले पर मजबूत पट्टी बाघे रह। चौधरी वही गला फाडकर न निकल जायें।

साधो, अब चद्रशेखर के सयोजकत्व म पाच पार्टियों के गुट का हाल सुनो। चद्रशेखर ने बहुत अच्छी बात कही है कि अब व्यक्ति की राजनीति नही, कायक्रम और सिद्धात की राजनीति होनी चाहिए। चद्रशेखर न कायक्रम घोषित भी किया है। दोना कम्यूनिस्ट पार्टिया ने समथन भी किया है। कुछ कायक्रम और सुझाये भी है। यह वाम-पथी मोर्चा बन सकता है। मगर ये जानत है कि हम दिल्ली म अपनी दम पर सरकार नही बना सकते। महाराष्ट्र म शरद पवार को अपने को जमाना है कोई राष्ट्रीय क्राति नही करना है। उन्ह जमाने मे भारतीय जनता पार्टी सहायक हो सकती है। उन्ह कायक्रम स क्या मतलब? रतूभाई अदानी को माधवसिंह सोलकी से लडने के लिए किस कायक्रम की जरूरत है!

साधो, अटलबिहारी जानते हैं कि उनका मोर्चा दिल्ली म अकेला सरकार नही बना सकता। चद्रशेखर का मोर्चा भी यह जानता है। इसलिए 'कायक्रम' पर आधारित कछुए की राजनीति चल रही है। धीरे धीरे कछुए बढ रहे हैं। अटलबिहारी कहते हैं—हमार द्वार खुले हैं। हमारा गाधीवादी समाजवाद कायक्रम है। इधर अगर अखबार की रिपोट सही है तो चद्रशेखर ने कहा है—अगर आर एस एस वास्तव म सास्कृतिक सगठन है, तो भारतीय जनता पार्टी से समझौता वार्ता हो

सकती है। साधो मैं चंद्रशेखर से पूछता हूं—तुम्हें कितने जन्म लेने पड़ेंगे यह पता लगाने को कि आर० एस० एस० सांस्कृतिक संगठन है या नहीं? भूतपूर्व कम्यूनिस्ट नेता चंद्रजीत यादव को भी क्या इस बारे में रिसर्च करना बाकी है? सुभद्रा जोशी को भी नये सिर से क्या पता लगाना पड़ेगा कि संघ सांस्कृतिक संगठन है?

साधो मुझे आशा बंधने लगी है। राजनीति व्यक्ति की नहीं, कार्यक्रम की ही होगी। विपक्षी एकता भी होगी। यह कार्यक्रम पर ही होगी। और कार्यक्रम सीधा होगा—'इंदिरा हटाओ।' इन्दिरा विरोधी होने के बावजूद कम्यूनिस्ट पार्टियां संघ के कारण इस मोर्चे से दूर रहेंगी।

७ अक्टूबर, १९८४

# काश्मीर मे दो घटनाए

साधो, काश्मीर म इस समय खास घटनाए हो रही है। अभी वहा विपक्षी दलो के नेताओ की मीटिंग हो गयी जिसमे कुछ इस तरह की बातें हुई, जसी मध्ययुग मे होती थी। तब क्या हाल था—इधर शिवाजी का राज्य, उधर मालवा का, इधर कन्नौज का उधर बूदी का, इधर मेवाड का, उधर विदर्भ, इधर मगध, उधर इद्रप्रस्थ। सब अलग-अलग और आपस मे लडने वाले। केद्रीय सत्ता लगभग नही के बराबर। नतीजा यह होता था कि करोडो भारतीयो का कुछ हजार विदेशी हमलावर हराकर राज करने लगते थे। लेनिन ने कहा था—मुझे बडा आश्चय है कि ३० करोड हिंदुस्तानियो पर सिफ १० हजार अंग्रेज राज कर रहे है। लेनिन का पता होगा कि इसका कारण था—नौ कनौजिये तेरह चूल्हे। श्रीनगर मे फारुख अब्दुल्ला ने जिन्हे बुलाया था, वे भी कनौजिये तेरह चूल्हे बनाने पर आमादा थे। गनीमत है कि वहा राजेश्वर राव थे, जिन्होने बडी मेहनत से इन सूबेदारो को समझाया कि केंद्र को कमजोर करना देश के लिए खतरनाक होगा।

साधो, डॉक्टर फारुख अब्दुल्ला को एक बात समझ लेनी चाहिए कि शेरे काश्मीर का बेटा भी शेरे काश्मीर होगा, यह जरूरी नही। ऐसा तो जानवरो म होता है कि शेर का बटा शेर होता है और कुत्ते का बेटा कुत्ता। आदमियो म ऐसा नही होता। होता, तो जवाहरलाल नेहरू, मोतीलाल नेहरू की तरह बडे बैरिस्टर होकर अंग्रेज रईस की तरह जिदगी गुजार देते। हुआ उलटा। जवाहरलाल ने पिता के सूट

टाई उतरवाकर सादी व मोटे धागे से बुनी खादी का कुरता पहनवा दिये। गाव ग्रब्दुल्ला ने संघर्ष किया था। वे सही शेर कश्मीर थ। फारूख ने एसा किया है ज्यादातर विलायत म व शेर कश्मीर नहीं हो सकते। हो सकता है अगर आगे वैसे संघर्ष करें। हम उन्हें शेर हिन्द मान लेंगे। मगर अभी वे अपनी जबान पर लगाम लगायें। अपनी मा बेगम ग्रब्दुल्ला से कह कि वे एक बड़े दबंग राजनेता की बीवी है और एक मुख्यमंत्री की मा। वे कल्लू की मा की तरह कहती हैं—हमारा कल्लू बडा साहब बनेगा। ये बेटे को गैरजिम्मेदारी की बात करने और बर्ताव करने के लिए उकसाती है। फारूख के चुनाव प्रचार म उनके एक तरफ मुस्लिम फंडामेंटलिस्ट' (मूलवादी) मौलवी फारूख बैठते थे, और दूसरी तरफ हिंदू फंडामेंटलिस्ट' विश्व हिंदू परिषद के भूतपूर्व अध्यक्ष राजा करणसिंह। यह खतरनाक मानसिकता की बात है। यह गृह युद्ध करा सकती है—इधर करणसिंह ने भी कह दिया है कि हिंदू संगठित हो जायें और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ म शामिल हो जायें।

साधो, राजनीति की बात खत्म करता हूं। कश्मीर मे हुए इससे बड़े हादसे की बात म करता हूं। कश्मीर म जब ये विपक्षी नेता राज्यों को और अधिकार देने तथा इंदिरा सरकार को गिराने की बातें कर रहे थे तभी दो समाज कल्याण अधिकारी इसलिए गिरफ्तार कर लिये गये कि उनके पास पाकिस्तान से बुलायी गयी २५ किलोग्राम चरस पकड़ी गयी। हो सकता है ये समाज कल्याण अधिकारी इन नेताओं के लिए ही चरस ला रहे हों। चरस के नशे म बुद्धि के सारे दरवाजे खुल जाते है और चेतना का स्तर बढ जाता है तथा विस्तृत हो जाता है। मगर इन समाज कल्याण अधिकारियों को बीच म ही पकड लिया गया। यह खबर बड़े अक्षरों म विशेष महत्त्व के साथ छपी है।

साधो, मुझे इस खबर को पढकर दुख हुआ। रामाराव अब साधु हो गये है, भगवा पहन लिया है। एक कान मे कुंडल पहनकर 'अर्द्ध नारीश्वर हो गये है। उनके ३ ४ एकड के प्लाट म एयर कंडीशंड कुटिया बन गयी है—यानी अब उन्हें गांजा, चरस की जरूरत है। हर साधु को होती है। वैसे वे जिस तरह शासन चला रहे हैं उससे लगता है, वे

भाग का गोला लिये रहते ह। पर गाजा, चरस, मोदक, चड का मजा ही अलग है। आल्डस हक्सले ने गाजा पीकर प्रयोग किया था। उनका निष्कप था कि गाजा पीने के कारण ही भारतीय ऋषि त्रिकालदर्शी' होते थे।

बहरहाल, साधो य जो पकडे गये, समाज कल्याण अधिकारी ह। इनका काम समाज का कल्याण करना है। समाज को चरस चाहिए, तो इनका कत्तव्य है कि ये चरस का इनजाम करें। सारी दुनिया म नशे की आदत बढ रही है। भारत म बहुत तेजी से नशीले पदार्थों का सेवन बढ रहा है। अखबारो म खबरें पढता हू कि सरकारी अस्पतालो म रोगियो को पेलेडिन' नहीं मिलती। कैसे मिले ? लगभग आधे डाक्टरो को पेलेडिन लेने की आदत हो गयी है। मुफ्त म मिलती है न! मेडिकल कालेजो के होस्टलो म आधे छात्र नशीली गोलिया लेते ह। कुछ कम प्रतिशत होगा पर लडकिया भी नशे की गोलिया लेती है। दिल्ली विश्वविद्यालय म पचास फीसदी छात्र नियमित नशे की गोलिया लेते है और तीस प्रतिशत छात्राए। इनमे स बहुतो के पिता चाचा, मामा भी य गोलिया लेते ह।

साधो तुमने कभी मरिजुआना,' और 'हशीश' के 'ट्रिप' और 'ट्रिप' का मजा लिया है ? एक पूरे जोर से पी लो 'ट्रिप' हो जाती है। साधो ये नशे ऐसे है कि पकड़ पर म [illegible] शिथिल हो जाता है—शिथिल। वह मुर्दा हो जाता है। उसकी आत्महत्या करने की इच्छा होती है। मैं जब अस्पताल म भर्ती था, तब मुझे एक लम्बा, चगा, अधेड, पढ़ा लिखा आदमी मिला। वह खुद डॉक्टर था। वह खुद भरती था। उसे रोग क्या था ? वह 'हिरोइन' का आदी था। 'हिरोइन' सबसे ऊचा नशा होता है, जो नेपाल से लाया जाता है। वे दिन म आठ बार 'हिरोइन' लेते थे और परेशान हो गये थे। यह नशा छुडवाने के लिए अस्पताल म दाखिल हो गये थे। कहने लगे—डॉक्टर ने आठ की जगह अब चार बार कर दिया है। धीरे धीरे छुडाएंगे। पर मैं बेचैन रहता हू। लौ लगी रहती है। आपसे बात कर र पर मन म यही लगा है कि कब घटा भर बीते और मैं [illegible]

ल लू।

गाधा काश्मीर के व गमाज कल्याण मधिकारी समाज म पीडिता था कल्याण चरम से करत रह हाग। व कई वर्षों स 'चरस' 'स्मगल' कर रह हाग। भारत से भी ता रम' और ठर्रे को गातले इस्लामी हुकूमत की मदद के लिए पाकिस्तान स्मगल' हाती ह। दा दशा म सबसे मजबूत दास्ती नशे के स्मगलिंग' स ही होती है। तस्कर हमार सबसे अच्छे मैत्री प्रतिनिधि हैं।

१४ अक्टूबर, १६८३

## चर्बी का हल्ला और

साधो, इन दिनों चर्बी ही चर्बी है। दिल्ली में जैन बंधुओं से ऐसी गलती हुई कि राष्ट्र उन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। तुम शायद सोच रहे होगे कि जैन बंधुओं से यह गलती हुई कि उन्होंने वनस्पति तेल में मिलावट के लिए विदेश से गाय की चर्बी बुलायी ? अभी कुछ नहीं कह सकते क्योंकि मामला सिद्ध नहीं हुआ। मैं यह नहीं कहता कि इन लोगों ने मिलावट के लिए चर्बी क्यों बुलायी। चर्बी तो कई सालों से बुलायी जा रही है देश में भी निकाली जा रही है। राष्ट्र को और राष्ट्रवासियों को इस पर कोई एतराज नहीं है। हमें शिकायत इन जैन बंधुओं से यह है कि इतने [illegible] [illegible] पकड़ क्यों लिए गये। हम इनके पकड़े जाने के [illegible] [illegible] में चर्बी मिलाने के लिए नहीं। इनसे भूल कहां हो गयी ? क्या [illegible] वालों को ठीक पैसा नहीं दिया ? क्या [illegible] [illegible] उनका जायज पेमेंट नहीं किया ? क्या मिलावट पकड़ने वालों को संतुष्ट नहीं किया ? क्या राजनीतिक संबंधों में ढील आ गयी ? कहीं भूल जरूर हुई जो चर्बी पकड़ ली गयी।

साधो, इनकी इस भूल से हमारा मुंह काला हो गया। [illegible] जैन अहिंसा परमोधर्म मानते हैं। सो अभी परेशान। मगर जैन बड़े शालीन होते हैं। किसी मुनि ने, और धर्म गुरु ने, किसी जैन संगठन ने इसकी निंदा नहीं की। मुनि सुशील कुमार जी चुप। आचार्य तुलसी भी चुप। अणुव्रत वाले भी चुप। धार्मिक मामलों में [illegible]

सहिष्णुता होनी चाहिए कि धर्म भी निभता रहे और व्यापार भी चलता रहे। साधो लोग यह कहते हैं कि गौ माता वाला देश, गौ रक्षा के आंदोलन करने वाला देश, मगर घी मे गौ माता की चर्बी मिलाकर उससे पकवान बनाकर खाता है। मैं इनसे कहता हू कि अगर कपनी के मालिक मुसलमान होते, तब हम गोभक्ति बतलाते। फिर यह चर्बी आयात की हुई है विदेशी गाय की। हर देश की गाय हमारी मा नही है। अब तुम कहोगे—गुरु विदेशी चर्बी इतने कारखानो के लिए काफी नही है देशी गाय की चर्बी का इस्तमाल भी होता है। तो म कहता हू—इसम क्या अनैतिक है ? जो गाय हम दूध पिलाती है, वह माता अगर हमे मिलावट के लिए चर्बी दे देती है ता क्या बुरा करती है ? गौमाता धम स धधे का ज्यादा पवित्र मानती है।

साधो, धधे और मुनाफे की नैतिकता अलग होती है। धम आचरण अलग होता है। कानून किताबा की चीज है धधे म आचरण की नही। अगर यह सिद्ध हो जाय कि आदमी की चर्बी ज्यादा अच्छी 'क्वालिटी' की और सस्ती होती है ता गुप्त रूप से स्वस्थ आदमियो के बूचडखान खुल आयेंगे और आदमी की चर्बी निकलने लगेगी। सरकार के मत्रिया क पुलिस अफसरा के शासन के अधिकारिया के सहयोग से ही ये बूचडखाने चलेग इसलिए जैन एड कम्पनी सरीखे पकडा जाने का डर नही रहगा। बस धार्मिक उन्माद के कारण धीरे धीरे सारा देश आदमी का बूचडखाना हुआ जा रहा है। पथ की रक्षा के लिए जिन उग्रवादी सिखा को आदमी की हत्या करनी पड रही है, वे वनस्पति घी की कपनिया स सौदा क्या नही कर लेते ? अभी हैदराबाद के दगे म सौ हिंदू मुसलमाना की चर्बी बेकार चली गयी। जिन नेताओ ने, इत्तेहादुल मुसलमान और सघ क लोगा न राजपुरुषा ने य दगा कराया उन्ह पहले से हैदराबाद की किसी वनस्पति घी के कारखाने से ऊची क्वालिटी की चर्बी की सप्लाई का सौदा कर लना था। राजनीति भी सधती और आमदनी भी हाती। या तो लोग इस देश म गरीबी और भुखमरी से लाखा अकाल मौत मरते हैं पर कम्बख्त सूखकर मरत हैं। चर्बी नही हाना। किसी काम की मौत नही इनकी।

साधो, अब तो बाजार की हर चीज खाने मे डर लगता है। सुबह पेस्ट से मुह साफ करते है, तो समझते है, जहर मुह म डाल रहे हैं। उधर बचारे चरणसिह और अटलबिहारी वाजपयी बारह घटे के लवे अनशन पर बैठने वाले है चर्बी की मिलावट के खिलाफ। इनकी एक नो ग्राम चर्बी घट गयी तो राष्ट्रीय राजनीति कमजोर हो जायेगी। वैसे हम आश्वस्त ह। सौ मे से पचहत्तर भारतीय जनता पार्टी के सदस्य और समथक मिलावटी, मुनाफाखोर व्यापारी होते है। यह पार्टी उन्ही की है और सामतवादियो की। अटलबिहारी अनशन करके इन्ह निभय कर रहे हैं।

साधो, चर्बी की मिलावट का हल्ला हुआ, तो राज्य सरकारें भी सुगबुगायी। खाद्य विभाग का सख्त हुक्म दे दिया गया कि मिलावट रोको। खाद्य विभाग के लोगो ने व्यापारियो से कहा—सैंपल दो जाच के लिए। अब व्यापारियो ने कहा—हम सैंपल नही देंगे। अधिकारियो न कहा—हम सैंपल लेंगे। ऊपर के आदेश ह। साधो तो व्यापारियो ने विरोध मे एक दिन बाजार बद किये। अधिकारियो स कहा—तुम्ह ऊपर का हुक्म है न ! तो हम ऊपर राजधानी जाकर ठीक करा लेते ह। साधो, मिलावट कई स्तरो पर होती है, सिफ उत्पादन के स्तर पर नही। डिस्ट्रीब्यूटर, होलसेलर फुटकर व्यापारी—सब स्तरो पर होती है। इस सपल की जाच म अधिकारियो को आमदनी अच्छी होती, यह सही है। मगर व्यापारियो को डर यह था कि दुकानें बदनाम हो जायेंगी। साधो, अब 'सैंपल' का हल्ला शात है। इसका मतलब है कि व्यापारी ऊपर राजनीतिक नेता वग से मिल गये। व्यापारियो ने कहा होगा—आप लोगो का आगामी चुनाव का तो ख्याल करना चाहिए।

तो साधो ये सब कसरतें बेकार है। मुझे उम्मीद है जन बधुओ का भी कुछ बिगडेगा नही। 'पयूषण पव' कभी 'प्रदूषण पव' नहीं होगा। बीच बीच मे हल्ला होता है और फिर दुराचार ड्योढा होकर आगे बढता है। कौन किसे सदाचार सिखाये, कौन रोके कौन पकडे कौन सजा दिलाये—कडी में कडी तो फसी है।

साधो, राष्ट्रपति ने साबुन से नही नहाने की घोषणा कर दी कि

वह चर्बी से बनता है। उन्हें सलाह दो कि यह प्रतिज्ञा छोड़ दें। कई देशों के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, उनकी पत्नियाँ जैलसिंह की बगल में बैठते हैं। अभी भी उन्हें यह अड़चन होती होगी। साबुन से नहीं नहायेंगे, तो उनसे ये लोग ठीक से बात नहीं कर सकेंगे। जल्दी उठ जायेंगे।

१२ अक्टूबर १९८३

## अशांति के भूतों की शांति सेना

साधो, बेरुत में कांड ही कांड होते रहते हैं। पिछले साल इन्हीं दिनों बेरुत में फिलिस्तीनी नागरिकों, स्त्री बच्चों को इसराइलियों ने इस तरह काटा जैसे सब्जी के लिए भिंडी काटते हैं। यह इसराइल ने अमेरिकी दम पर किया था। मगर हम भारतवासी किसी से पिछड़े हुए नहीं हैं। हमारे यहां के 'देशभक्तों' ने असम में, नेली में बेरुत जैसा ही हत्याकांड करके दिखा दिया। स्त्री और बच्चों को भी घास की तरह महान संस्कृति वाली जाति के बीच कायरों ने काटा। जैसे इसराइली हत्यारों को पछतावा नहीं है, वैसे ही हमारे इन कायर जानवरों को भी पछतावा नहीं है।

साधो, अभी बेरुत में एक और कांड हो गया। वहां लेबनान में संयुक्त राष्ट्र संघ ने शांति स्थापना के लिए सेना भेजी है, जिसमें ज्यादा अमेरिकी सिपाही और कमांडर हैं। कुछ फ्रांसीसी सैनिक हैं। साधो, ये सैनिक हैं। पेट पालने के लिए सेना में नौकरी कर रहे हैं। ये राजनीतिज्ञ नहीं हैं। राज सत्ता के हुक्म से ये चाहे जिस पर गोली चला देते हैं। यह इनकी नौकरी है। ये वहां शांति स्थापना के लिए भेजे गये हैं। हफ्ता भर पहले वहां कुछ उग्रवादी ट्रकों में बम भर कर उन विशाल इमारतों में घुस गये जिनमें अमेरिकी और फ्रांसीसी फौजी रहते हैं। बमों से इमारतें उड़ गयीं। काफी अमेरिकी और फ्रांसीसी सैनिक मारे गये। ये शांति सेना के लोग थे। शांति सेना पर कभी हमला

नही किया जाता। मगर यह हुआ। यह उन उग्रवादियों ने किया, जो खुद भी मर गये। वे आत्महत्या छापामार थे। इन मौतों से सब दुखी हैं। सब निंदा कर रहे हैं।

मगर साधो कई सवाल उठते हैं। ये उग्रपंथी खुद मरकर अमरीकी सिपाहियों को मारने पर क्यों आमादा हुए? इनका उद्देश्य क्या है? ये इतने उन्मादी क्यों हो गये? साधो, एक बात समझ लो—जो फ्रांसीसी मारे गये वे गेहूँ के साथ घुन थे। हमला असल में अमेरिका पर था। मगर अमेरिका वहाँ शांति स्थापना के लिए उपस्थित था।

साधो इस क्षेत्र में सारी गड़बड़ी लड़ाई हिंसा, हत्या, पिछले कई सालों से अमेरिका करवा रहा है। अमेरिका ने ही हथियार और पैसा देकर इसराइल को आक्रामक बनाया। इसराइल ने फिलिस्तीनियों को उनके देश से भगाया। सीरिया की जमीन छीनी। लेबनान में लगातार जो गृहयुद्ध हो रहा है, वह भी अमेरिका का ही भड़काया हुआ है। अमेरिका लेबनान की सरकार को अपने कब्जे में रखना चाहता है। लेबनान को इसराइल के आतंक में रखकर उसका इस्तेमाल करके पूरे अरब क्षेत्र में आतंक कायम रखना चाहता है। अमेरिका शांति के लिए भी सिर्फ बंदूक और बम की भाषा जानता है। इसके सिवा उसे अंग्रेजी भाषा नहीं आती। अमेरिकी शासक पूरी तरह भ्रष्ट हैं।

साधो, राष्ट्रसंघ के महासचिव की बुद्धि क्या भ्रष्ट हो गयी थी या उन पर पागलपन का दौरा पड़ा था, जो उन्होंने संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना में अमेरिकी भेज दिये? यह अमेरिका के दबाव के कारण किया होगा। अमेरिका वहाँ लड़ाई भी कराता है अशांति फैलाता है अराजकता पैदा करता है—और फिर शांति स्थापना के बहाने और फौज भेज देता है। अमेरिका इस क्षेत्र के सारे झगड़े में प्रमुख पार्टी है। अपराधी पार्टी निष्पक्ष शांति स्थापना की शक्ति कैसे हो सकती है? हत्यारों को पुलिस सुपरिंटेंडेंट कैसे बनाया जा सकता है? डाकुओं को हाईकोर्ट का न्यायाधीश कैसे नियुक्त किया जा सकता है?

साधो राष्ट्रसंघ ने यही किया। हत्यारों को पुलिस बना दिया। नतीजा यह हुआ कि जिस कौम की हत्या अमेरिका करवा रहा है

उसके कुछ उग्रपंथियो को इतनी नफरत पैदा हुई, ऐसा क्रोध आया कि उन्होने इन झूठे पुलिसवालो को मार डाला और खुद मर गये। साधो, इस काड से समझ मे आ सकता है कि वहा के लोग अमेरिकी लोगो से कितनी नफरत करते हैं। उधर राष्ट्रपति रीगन मूर्खता से भरी वहा दुरी दिखा रहे है। कहते हैं—हम वहा से हटेंगे नही। हम और फौज भेज रहे है और गोला-बारूद भेज रहे हैं। बमवर्षक भेज रहे है।

साधो, यह पागलपन है। उस क्षेत्र म शांति तब हो सकती है जब (१) फासिस्ट इसराइल को अमेरिका प्रोत्साहित न करे, (२) वहा फिलिस्तीनिया का अपनी मातभूमि म स्वतत्र राष्ट्र बने और उसे सब सुरक्षा की गारटी दें, (३) इसराइल सीरिया की तथा आसपास की हडपी हुई अरब भूमि वापस करे, (४) लेबनान म राष्ट्रीय सहमति से सरकार बन और दो क्षेत्रा का स्वायत्तता दी जाय, (५) अमेरिका एक देश को दूसरे से लडवाना बद करे (६) अमेरिका पूरी तरह इस क्षेत्र से हट जाये।

साधो, मगर अमेरिका न यह करेगा, न होने देगा। पिछले ३० सालो का रिकार्ड है कि अमेरिका जहा गया है, अशाति पैदा की है। वियतनाम मे क्या अमेरिका शाति के लिए गया था? जब तक वियत-नामियो ने उसे पीटकर भगा नही दिया वह बम बरसाता रहा। कोरिया मे क्या शाति के लिए घुसा था? कभी कोरियाई विमान के २६६ निर्दोष यात्रियो को क्या शाति के लिए मरवा दिया? पाकिस्तान वगैरह को क्या शाति के लिए हथियारो से भर रहा है? लैटिन अमे-रिकी देशो मे क्या शाति के लिए फौजी हस्तक्षेप कर रहा है?

साधो अब अमेरिका का अर्थ हो गया है उपद्रव, युद्ध, अशाति। दुनिया मे कोई अमेरिकी शासन का भरोसा नही करता—सिवा गुडे तानाशाहो के। अमेरिका की उपस्थिति का मतलब है अशाति। अमे-रिकिया ने समूची गोरी जाति को बदनाम कर दिया है। कहीं गोरा दिखता है तो लोग मानते है यहा यह उपद्रव करायेगा।

साधो राष्ट्रसघ की यह बेहद नासमझी है कि अशान्ति के एजेंट अमेरिका को लेबनान म शान्ति स्थापना के लिए भेजा। राष्ट्रसघ को

यहाँ भी शांति स्थापना के लिए 'गोरों को खासकर अमेरिकियों को नहीं भेजना चाहिए। राष्ट्रसंघ को एशिया, अफ्रीका के गुटनिरपेक्ष देशों को शांति-स्थापना के लिए भेजना चाहिए। इन पर लोग विश्वास करेंगे।

१८ अक्टूबर, १९८३

# मुहर्रम और दशहरा की बधाई

साधो, मुहर्रम और दशहरा एक ही दिन हो और शहर साम्प्रदायिक मामले में नाजुक हो तो, पन्द्रह दिन पहले से पुलिस और प्रशासन घबड़ाने लगते हैं, साधारण नागरिक भी चिंतित हो जाता है। जिला शासन ऊपर भयंकर रिपोर्टें भेजता है कि शहर में बड़ा तनाव है। यह इसलिए किया जाता है कि ये पर्व शांति से निकल जायें, तो राजधानी में राजनीतिक मालिकों पर यह प्रभाव जमे कि हालत तो बड़ी खराब थी, कुछ भी हो सकता था—मगर सक्षम और विशेष बुद्धिमान अफसरों ने शांति से निपटा दिया। सरकारी नौकरी में ये तरकीबें चलती हैं। खरगोश की घेराबंदी के लिए दो-तीन बटालियनें लगा देते हैं और बाद में अखबारों में लंबा समाचार छपा देते हैं कि पाँच शेरों की घेराबंदी की थी, मगर वे भाग निकले।

साधो, जब मुहर्रम और दशहरा शांति से निकल जाते हैं, तब एक-दूसरे की पीठ ठोकते हैं। खुद अपनी पीठ भी ठोकते हैं। नागरिक चैन की सांस लेता है। पुलिस और शासन की तारीफ करता है। साधो, मेरा शहर दो विशेषणों से विभूषित है। विनोबा भावे ने इसे 'संस्कारधानी' कहा था और पंडित नेहरू ने 'गुंडों का शहर'। तो यहाँ के नेताओं पर तथा शासन पर दुहरी जिम्मेदारी आ जाती है—दोनों की बात निभाने की। इसलिए कभी इस शहर की छवि संस्कारशील बनायी जाती है और कभी गुंडागर्दी की। दशहरा मुहर्रम शांति से हो गये तो अखबारों

मे ऐसे समाचार छपते है जैसे कोई चमत्कार हो गया हो। जैसे आम स्वाभाविक तर्कपूर्ण बात यह होती है कि हिंदू मुसलमान लडे। पर वे नहीं लडे। भाई साहब, चमत्कार हो गया। अखबारों मे सपादकीय टिप्पणी छपती है—कि नागरिकों को साधुवाद कि उन्होंने 'संस्कारधानी' की लाज रख ली। शासन को भी धन्यवाद। नागरिकों ने भाईचारे का आदर्श पेश किया।

साधो, यह पढकर मुझे शर्म आती है। शर्म इसलिए आती है कि हम इतने गिर गये है कि हमने साम्प्रदायिक झगडे को सहज घटने वाली घटना मान लिया है। एक जरूरी राष्ट्रीय प्रक्रिया मान लिया है। हम मानसिक रूप से इतने बीमार हो चुके है कि मानने लगे है कि दो सम्प्रदायों के लोगों के जीवन का उद्देश्य सिर्फ आपस मे झगडना है। हमारे मन मे बहुत गहरे मे जहर है। हमे इसका आभास नहीं है। इसीलिए जब दगा नहीं होता तो हम इसे चमत्कार मानते हैं।

मगर साधो, नागरिकों को बधाई क्या देना! सामान्य नागरिकों के क्या श्रेय है? आम मध्यवर्गीय आदमी तटस्थ भाव से हर झूठी अफवाह पर भरोसा करता हुआ घर मे दुबका रहता है। उसका रोल कुल इतना है कि वह डरे, नफरत करे और अफवाह फलाये। साधारण नागरिक न दगा शुरू करता, न उसमे हिस्सा लेता। दगे कराते हैं विशिष्ट नागरिक, इज्जतदार नागरिक, राजनेता, धर्मनेता, सस्कृति नेता। इन्हें पुलिस के एस० पी० और कलेक्टर जानते है। ये लोग ही दगे की योजना बनाते है। ये दगे कराये हुए अनुभवी लोग है। उनके ऊचे राजनीतिक सबध है, ये अपनी पार्टियों के नेता हैं। हमारे लोकतत्र की यह ट्रेजेडी और कामेडी है कि कई लोग जिन्हें आजन्म जेलखाने मे रहना चाहिए वे जिंदगी भर ससद या विधानसभा मे बैठते है।

साधो, चोरो, गुडो, उचक्को, जुआडियों, अपराधकर्मियों को तो शासन त्यौहार के पहले जेल मे डाल देती है। यह ठीक है। मगर दगे मे इनका काम बाद मे शुरू होता है। पहला काम है—दगा शुरू कराना। इन्हें पुलिस अफसर जानते है कलेक्टर जानते है, मगर ये कभी जेल मे बद नहीं किये जाते। ये वे लोग है जो हिसाब लगाते है कि कब दगा

कराने से राजनीतिक फायदा होगा। किनके आर्थिक हित साधे जायेंगे। यही तय करके बताते है कि कैसी वारदात करे, कैसी अफवाह उडाकर उत्तेजना पैदा करना है। ये हरे कभी दगा नही कराते। मौका तय करके कराते है। इसलिए नागरिकों का अपनी और एक दूसरे की पीठ ठोकना मुझे हसी की बात लगती है। दंगे के देवताओं को दगा नहीं कराना था, तो नही हुआ। जहा आम हिंदू मुसलमान का सवाल है— वे कभी आपस म नही लडते।

साधो, हैदराबाद म बार बार दगा यही बडे लोग कराते है। पिछले दगे के पहले मुख्यमत्री रामाराव ने इत्तेहादुल मुसलमान के नेता को राजी कर लिया था कि वे हैदराबाद बद का आह्वान वापस ले लें। मगर उन्हे फुसलाकर ले गये अन्य विधायक 'राक कासेल' पाचसितारा होटल। वहा उन्ह समझाया कि तुम अपनी राजनैतिक आत्महत्या कर रहे हो। अरे बद करवाओ। वे बहक गये। शहर बद और दगा चालू। वे विधायक जिन्होने दगा कराया, आगे मत्री होगे। उन्ह होना चाहिए जेल मे। बल्कि फासी होना चाहिए।

साधो, दगे के आसार दिखें तो साप्रदायिक सगठनो के नेताओं, कुछ राजनेताओं, कुछ काले धधे वालो को जिलाध्यक्ष और एस० पी० बुलाकर कहे— हमे ऊपर से सरकार ने पूरी छूट दे रखी है कि हम चाहे जिस तरह दगा रोकें। आप लोगो को हम खूब मानते हैं। आप इज्जतदार है पर आप दगा कराते हैं। अगर जरा भी हम इशारा मिला कि आप खुराफात कर रहे हैं तो हम पहले तो आपको हवालात मे बद करके आपके कूल्हो की चमडी उधेडेंगे और हाथ-पाव तोडेंग। फिर मुकदमे दायर करेंगे। आप चाहे कोई हो, कितने भी बडे हो। हम सरकार ने आदेश और अधिकार दिये हैं। मगर एसी सख्ती होगी नही। दगे होगे। तुम और हम अफवाहो के चक्कर मे पडेंगे।

साधो, अफवाह ऐसी होती है। पिछले दगे के वक्त एक प्रोफेसर साहब आये। कहने लगे सुबह दो मुसलमान परियट टैंक म जहर डालते देखे गये। परियट टैंक म विशाल जलाशय है, जिसम शहर को पानी सप्लाई किया जाता है। उस विशाल जलाशय मे दो आदमी जहर

डाल रहे थे। मैने प्राफेसर साहब से पूछा—इतने बडे टैंक के लिए कितना जहर लगेगा ? दो चार टन से कम तो नही लगेगा। फिर उसे सारे जलाशय मे फैलाने का इतजाम करना होगा। यह चार पाच दिन का काम है कई लोगो का। तब वह पानी जहरीला होगा। और आप कहते है—दो आदमी जहर डाल रहे थे। आप बुद्धि और तर्क से काम क्या नही लेते ?

साधो, अफवाह बुद्धि का भ्रष्ट कर देती है। अभी अपने को बधाई मत दो। पीठ मत ठोको। आगे चुनाव आ रहे है।

६ नवबर, १९८३

## चर्बी, गगाजल और एकात्मता यज्ञ

साधो, तुम पूछोगे कि गुरु यह मामला क्या है—चर्बी, गगाजल और यज्ञ ? देखो, यह आगामी चुनाव के लिए कायक्रमो का घोषणा-पत्र है। अब तुम कहोगे कि गुरु चुनाव घोषणा पत्र मे तो दुनिया भर म इस तरह की चीजें होती है—आर्थिक नीति, उत्पादन की योजना, कृषि विकास, विज्ञान और तकनीक, सामाजिक सुधार, गरीबी दूर करने के उपाय, विदेश नीति वगैरह। मगर यह क्या घोषणा पत्र है—चर्बी, गगाजल और यज्ञ ! साधो, दूसर देशो की बात छोडो। न वहा भगवान पैदा हुए, न इतने देवी देवताओ ने अवतार लिया, न वहा स्वग जाने के इतने रास्ते है, न वहा इतन धम मूढ है। इसलिए वहा लबे चौडे प्रोग्राम बनते है। हमारा मामला दूसरा है, रास्ता सीधा है। यहा सिफ भगवान को अवतार लेना है और धम की स्थापना करना है। बस, चमत्कार से सब सुखी और समृद्ध हो जायेंगे। दूध दही की नदिया बहगी। यहा भगवान अवतार लेने को तैयार है। ठीक वक्त की तलाश मे है। अगर जनता पार्टी सरकार १९८२ तक रहती, तो भगवान अवतार ले लेते। पर चरणसिंह ने वह सरकार गिराकर भगवान को अवतार लेने से रोक दिया। अब चरणसिंह को गलती समझ मे आ गयी। अब चरणसिंह अटलबिहारी वाजपयी के साथ मिलकर भगवान के अवतार की भूमिका बना रहे हैं।

साधो, या तो भगवान के अवतार की तैयारी जनता सरकार न १९७८ मे शुरु कर दी थी, जब उसने विदेशो से गाय की चर्बी के

ग्रायात को खोल दिया था। तब भगवान के ग्रपन दूत धम के रक्षक जनसघ वाले सरकार म थे। उह पाप बढाना था क्योकि पाप बढे बिना भगवान ग्रवतार नही लेते। ग्रदाज है कि तभी स वनस्पति घी म गाय की ग्रायातित चर्बी मिल रही है। मगर मोहनधारिया कहत ह कि तब नही मिलायी गयी क्योकि वह महगी पडती है। ग्रब मिलायी जा रही है जब दिल्ली की एक फम को इस मामले म पकडा गया। पकडे जाने का यह ग्रथ नही है कि सिद्ध हो गया। मगर विपक्षी ग्रारोप लगा रह है कि इस ग्रधर्मी काग्रेस सरकार के राज म वनस्पति घी म गाय की चर्बी मिलायी जा रही है। जवाब मे काग्रेसी कहते ह—१९७७ के पहले तक जब हमारी सरकार थी तब गाय की चर्बी ग्रायात की सामान्य सूची में नही थी। गो भक्त जनसधियो वाली जब जनता सरकार बनी तब गाय की चर्बी के ग्रायात की छूट द दी गयी। पाप इन दक्षिणपथी विपक्षियो के सिर पर है। इन्ही ने गो माता की चर्बी बुलवायी ग्रौर इन्ही न वनस्पति घी म मिलाने दी। धम भ्रष्ट इन्होने किया।

ग्रब साधो, सवाल यह उठता है कि सन १९७८ म एकाएक एसी कौन सी जरूरत ग्रा पडी थी कि चर्बी के ग्रायात की छूट देनी पडी ? उसके पहले भी तो बिना इस चर्बी के काम चल रहा था। क्या तब वनस्पति घी बनाने वालो से सौदा पट गया था ? क्या उनका सरकार पर इतना दबाव था कि गौभक्त सघियो को भी गाय की चर्बी बुलाने की छूट देनी पडी ?

साधो काग्रेस ग्रौर भारतीय जनता पार्टी वाले राष्ट्रीय मोर्चे मे यह विवाद जोर पर है। तुम्हारी सरकार म वनस्पति मे गाय की चर्बी मिल रही है। जवाब—गाय की चर्बी बुलाने की छूट तुमने दी थी। जवाब—मगर हमारे शासन म चर्बी नही मिलायी गयी। जवाब—झूठ है। मिलायी जाती थी, पर तुमने पकडी नही। हमने मिलावट पकडी। जवाब—तुमने मिलावट पकडी तो पाप तुम्हारे सिर पर। तुमने हिंदुग्रो का धम भ्रष्ट किया। कोई हिंदू तुम्ह वोट नही देगा। जो तुम्ह वोट देगा, वह नक जायगा। गौ माता उसे वैतरणी पार नही

करायेगी। साधो, इस विवाद मे चाहे जो जीते, बहुत से परिवारों में इस दिवाली पर पकवान नही बने।

साधो, इसी चर्बी के साथ कार्यक्रम लगा है—विश्व हिंदू परिषद का 'एकात्मकता यज्ञ'। यह धर्म की चर्बी है, जिसे देश में ही निकालकर राजनीति मे मिलाया जा रहा है। काइयाँ साम्प्रदायिक राजनेता जानते है, इस देश का मूढ आदमी न अर्थनीति समझता, न योजना, न विज्ञान, न तकनीक, न विदेश नीति। वह समझता है—गौ माता, गौ हत्या, चर्बी गगाजल, यज्ञ। वह मध्ययुग मे जीता है और आधुनिक लोकतत्र मे आधुनिक कार्यक्रम पर वोट देता है। इस असरय मूढ मध्ययुगीन जन पर राज करना है तो इसे आधुनिक मत होने दो। इसे गौ माता, गगाजल, यज्ञ और रथ मे उलझाये रखो। तो साधो, विश्व हिंदू परिषद की योजना है—'एकात्मकता यज्ञ'। विश्व हिंदू परिषद क्या है? एक ही ब्रह्म की माया के कई रूपों मे एक रूप है यह। वह ब्रह्म कौन है? वह ब्रह्म है, हिंदू साम्प्रदायिकता और पुनरुत्थानवाद। इस ब्रह्म का कारोबार सघ देखता है? इस ब्रह्म की माया के दूसरे नाम है–भारतीय जनता पार्टी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विवेकानद शिला स्मारक, कुछ हद तक अरविंद आश्रम, कल्याण आश्रम, महिला सम्मान आदोलन, गिरिजन कल्याण सघ। किसी का कल्याण नही छूटा इस माया से। विद्वानो के कल्याण के लिए दीनदयाल उपाध्याय शोध सस्थान है, भारतीय विद्वत परिषद है। मजदूरा के लिए भारतीय मजदूर सघ है।

तो साधो, एकात्मकता यज्ञ भारत यात्रा के रूप म होगा। यह धारा मे निकलेगा, मगर कार का रूप रथ का होगा। साथ म साधुओं को इकट्ठा चलाया जायगा। गगाजी और गगासागर से लिया हुआ जल साथ म होगा। इसे आचमन के लिए श्रद्धालुओ को दिया जायेगा। प्रवचन होंग। उत्तर से दक्षिण और पूर्व स पश्चिम तक यह यात्रा होगी। पश्चिम म यात्रा सोमनाथ तक यह याद दिलाने के लिए होगी कि सोमनाथ को महमूद गजनवी ने लूटा था। यह बात भुला दी जायेगी कि गजनवी के मार्गदर्शक हिंदू थे। आधे सिपाही हिंदू थे।

सोमनाथ में महुना ने गजनवी से सौलाजाजी करनी चाही थी।

साधो, यह 'एकात्मकता यज्ञ' कहलायगा—तामझाम वाला। किनमें एकात्मकता ? किसलिए एकात्मकता ? कौन सा संकट आ गया देश पर ? अभी क्या एकता नहीं है ? तीन लड़ाइयां इस देश ने १६४७ से लड़ी ? क्या किसी लड़ाई में एकता की कमी थी ? कोई भारतीय या कोई तबका क्या शत्रु में मिल गया था ? यह किनकी एकात्मता है ? इसका उद्देश्य क्या है ? देखो, ये सब सवाल पापी पूछते हैं। तुम साधु हो। इतना समझ लो कि जो लोग देश को धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण के आधार पर बांटने वाले हैं—वही लोग 'एकात्मता यज्ञ' कर रहे हैं। चोर पुलिस की वर्दी पहनकर गश्त लगाते हैं—ऐसा एकात्मकता यज्ञ है यह। यह जनता को अंधविश्वासी, धर्मांध, अवैज्ञानिक मूढ़ संकीर्ण साम्प्रदायिक द्वेषपूर्ण रखकर एक साम्प्रदायिक पार्टी को वोट दिलाने का अभियान है। अब तुम समझ गये होगे—रथ में गाय की चर्बी और गंगा जल दोनों रखे हैं। इसके साथ अटलबिहारी वाजपेयी और चरणसिंह के चर्बी विरोधी एक दिन के उपवास का पुण्य है। यह यज्ञ वास्तव में 'इलेक्शन मैनिफैस्टो (चुनाव घोषणा पत्र) है। यह १५ नवंबर ८३ से जारी किया जायगा।

मगर साधो यज्ञ शुरू होने के पहले विघ्न पड़ गया। दो पीठों के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद ने इसका विरोध किया है। इसे पाखंड बताया है। कहा है कि यह धर्म विरुद्ध और शास्त्र विरुद्ध है। ऐसे यज्ञ का विधान कहीं प्राचीन वेद शास्त्रों में नहीं है। उन्होंने यह भी घोषणा की है कि कोई शंकराचार्य इसमें भाग नहीं लेगा।

मगर साधो, 'एकात्मता यज्ञ' होगा। यह धर्म नहीं, राजनीति है। मैंने कहा ही है शुरू में कि आगामी चुनाव चर्बी और गंगाजल का होगा।

२१ नवंबर, १९८३

# राजीव गाधी की अखबारो को नसीहत

साधो, राजीव गाधी व्यावहारिक राजनीति मे अभी आये ह। उन्हे उनकी पार्टी के लाग सजय गाधी बनाने की पूरी कोशिश कर रहे है पर वे बन नही रहे है न बनेंगे। उनका चरित्र दूसरे किस्म का है। साधो, कहने है—नया मुल्ला ज्यादा नमाज पढता है यानी नया होने के कारण उसका विश्वास खुदा म ज्यादा होता है। आगे चलकर वह मुल्ला जब घिस जाता है तब नमाज को रस्म मानता है खुदा है तो होने दो। नमाज पढना और पढाना रोजी रोटी कमाने का जरिया है। यही वह मानने लगता है।

साधो, काग्रेस के राजनीतिक दाव-पेंच छोडा तो राजीव गाधी कुछ मौका पर सही और समझदारी की बातें कहते हैं। भापाल मे पत्रकारा के सम्मेलन मे उन्होंने कहा—अखबार राजनताओ के भाषण ज्यादा छापते है। दूसरी सास्कृतिक, वैज्ञानिक, सामाजिक गतिविधिया के समाचारो की अवहेलना करते ह।

साधो, बात राजीव गाधी ने काफी ठीक कही। मगर उस रैली मे नारा लग रहा था—

उत्तर दक्षिण — राजीव गाधी।
पूरब पश्चिम — राजीव गाधी।

समथक, चाटुकार, चापलूस, पार्टी वाले तो राजीव को चारा दिशाओ म व्याप्त भगवान बना रहे थे, क्योकि आगे चुनाव टिकिट

यही देने वाले है। सजय थे ता मार लगाय जाते थे देश की नेता—इदिरा गाधी। युवका के नेता—सजय गाधी ! लोगो ने मजाक वना लिया था बच्चो का नेता—वरुण गाधी !

साधो सवाल राजीव गाधी से यह है कि—उत्तर दक्षिण, पूरब-पश्चिम राजीव गाधी का समाचार अखबार छापें या न छापें ? यदि न छापें तो खुद राजीव गाधी बुरा मानेंगे। इधर अखबार के मालिक सपादक को डाटेंगे कि आप हमारे सबध खराब करा रहे हैं, सरकार से। साधो राजनेता प्रचार पर जिंदा रहते हैं। बड़े से लेकर, मध्यम और छुटभया नेता तक रोज अपना नाम अखबारो मे छपाना चाहते हैं। वे भाषण देते है बयान जारी करते हैं। कभी एक दो किलोमीटर की पदयात्रा करके चार कालम का समाचार छपाना चाहते है। ये अखबार वालो का घेरते है। मालिक से कहते है। इनके समथक अखबार तय हैं।

साधो दूसरी बात यह है कि फिल्मी हीरो हीराइन के बाद सबसे मनोरजक इस देश के नेता ही ह। सबसे हास्यास्पद रोल और सबसे मजेदार बात यही करते हैं। कितने नेता है जो अगर फिल्मो म मसखरे का रोल करत तो विश्वविख्यात हात। चरणसिंह और जगजीवन राम जैसे बुजुग नेता जो मनोरजक बातें कहते हैं वैसी कोई फिल्मी कामेडियन भी नही कहता। लोग इतजार करते है कि आज बाबू जी और चौधरी साहब क्या बोलते है। पाठको को इस मनोरजन से वचित कसे कर सकते ह ! मुसीबत छोटे शहरो से क्षेत्रीय अखबार निकालने वालो की है। स्थानीय विदूषक नेता ता सपादको को हर कही सडक पर मिल जाते हैं और शिकायत करते हैं—हमारा समाचार नहा छापा आपने ! इनसे कोई पत्रकार कस बचे !

साधा, यह बात सही है कि भारतीय आदमी राजनीति की सबसे कम समझ रखकर भी राजनीति म सबसे अधिक दिलचस्पी लेता है। अमेरिका माम रूस के लोग राजनीति मे इतनी दिलचस्पी नही लेते। मगर भारतीय पाठको को अखबार खोलते ही राजनीति चाहिए। मगर राजनीति की समझ गौ माता गगाजल, मस्जिद, मदिर, गुरुद्वारे से

बनती है। सैद्धांतिक राजनीति बहुत कम लोग समझते और अपनाते हैं। ज्यादा लोग नेताओं की देशव्यापी नाटक मंडली के अभिनय में दिलचस्पी लेते हैं।

साधो, मेरे सामने दो अच्छे स्तर के अखबारों के पृष्ठ हैं। एक के पहले पृष्ठ पर ज्ञानी जैलसिंह, इंदिरा गांधी और यासेर अराफात हैं। दूसरा समाचार मुख्यमंत्री की पदयात्रा का है। गांधी नेहरू की जन्म-तिथि के आयोजनों के समाचार हैं। ये समाचार भीतर के पृष्ठों पर भरे पड़े हैं। ये मौके होते हैं—गांधी जयंती, नेहरू जयंती जब छोटे छोटे लोग नेता, जिनका विश्वास गांधी में नहीं है, गांधी को अच्छे आचरण का सार्वजनिक सर्टिफिकेट देते हैं। कहते हैं—हम गांधी और नेहरू के बताये मार्ग पर चलना चाहिए। यानी दूसरे लोग चलें। हम इस मार्ग पर नहीं चल सकते क्योंकि हमारे एक पांव में स्वार्थ का और दूसरे में बेईमानी का कांटा गड़ा है। इन नेताओं के सुभाषित छपेंगे ही, वरना ये परेशान कर देंगे।

साधो, एक पृष्ठ क्रिकेट को समर्पित है। कहीं न कहीं टेस्ट मैच होता ही रहता है। कपिलदेव और गावस्कर वगैरह भारतीय क्रिकेट के लिए बहुत जरूरी हैं। इधर नयी दिलचस्पी पैदा हुई है—फिल्म अभिनेत्रियों का क्रिकेट खिलाड़ियों के पीछे भागना। अभी सबसे दिलचस्प समाचार छपा था—अभिनेत्री [illegible] का इमरान खां के पीछे भागना। यह शादी होते होते रह जाती है। अब ज़हीर अब्बास के पीछे रीना राय पड़ी हुई है। यह जान-बूझकर प्रचार के लिए होता है। [illegible] अभिनेत्रियां अपने घर में सुंदर प्रेम-पत्रों का ढेर लगाती हैं।

प्रति रुचि पैदा की। धीरे धीरे यह पाठकों की जरूरत हो गयी और अखबार की मजबूरी! यह परस्पर क्रिया प्रक्रिया है। अब हालत यह है कि कोई अखबार अगर अपराध खासकर यौन अपराध के चटखीले समाचार न दे तो उसकी ग्राहक संख्या घटती जायगी। धंधा चौपट हो जायगा। अब हाल यह है कि सिर्फ अपराध की पत्रिकाएं निकलती हैं और लाखों बिकती हैं। फौजदारी वकीलों की केस फाइलों से कई लोकप्रिय लेखक हो गये हैं और खूब कमाते हैं।

गाथा फिर जरूरी है राशि फल। भविष्य। अखबार दिन के लिए भविष्य फल ज्योतिषी द्वारा बनाया गया जरूरी है। यह सब झूठा होता है। यह अवैज्ञानिक है। मगर ज्योतिषी यह दें कि तुम्हें शनि लगा है तो वह आदमी घबराहट में गलतियां करके खुद ही शनि लगा लेगा और जिंदगी खराब कर लेगा।

गाथा अब बताओ भाभा अणु अनुसंधान केंद्र में क्या हो रहा है इससे किसी का क्या मतलब? विज्ञान से संस्कृति से क्या मतलब? मगर हालत इतनी खराब है नहीं। मेरे पास के अखबार में ही अंतरिक्ष विज्ञान पर लेख है। सांस्कृतिक उत्सव का भी विवरण है।

२८ नवंबर, १९८३

## बारूद पर बैठकर माला पहनना

साथियो, यह बड़ा हास्यास्पद नहीं, खेदजनक दृश्य है। इससे मन में बड़ी खीज उठती है। दृश्य यह है—कोई सुरंग बिछा रहे हैं और कोई शोभा यात्रा निकाल रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी, संघ, चरणसिंह, तमाम प्रतिक्रियावादी 'नवास्मिता मंच' तथा पर्चों के प्रचार से सुरंग बिछा रहे हैं, जिसके विस्फोट से इन्दिरा जी की कांग्रेसी सरकार के पुर्जे उड़ जायें। मगर कांग्रेसी नागसभी गैरजिम्मेदारी, भ्रम और आलस्य के रोग से पीड़ित होकर, जगह जगह शोभा-यात्राएं निकलवा रहे हैं हाथ जोड़कर, मुस्करा प्रणाम कर रहे हैं, फूल मालाएं पहनकर आत्ममुग्ध होकर, मुस्करा रहे हैं। बड़े से बड़े जयकार कांग्रेसी भी आत्म-छलना का यह गन्दा नाटक कर रहे हैं। उन्हें यह तनिक भी बोध नहीं है कि सुरंग बिछ रही है बारूद तैयार है। आग लगेगी, विस्फोट होंगे और इनके पुर्जे उड़ जायेंगे। कहां रहेगी यह माला? यह मुस्कान? यह जय-जय कार? सब 'हाहाकार' करेंगे। साथियो वे इस स्थिति को अपनी अकर्मण्यता, कायरता और मूर्खता से प्राप्त हों, इसमें हमें एतराज नहीं। यह उनकी अपनी इच्छा है। चिन्ता की बात यह है कि वे देश को हाहाकार की स्थिति में पहुंचा रहे हैं।

साथियो गांव गांव में प्रचार हो रहा है कि यह कांग्रेस की सरकार हिन्दुओं का सर्वनाश में लगी है। पर्चों और मुसलमानों का मुखर की पर्चा लिखा रही है। इसके साथ ही साम्प्रदायिकता का ज़हर फैला रहे

है। तनाव पैदा कर रही है। जेट युग म रथ ग्चिया रही है। सरकारी जाच कहती है कि वनस्पति मे चर्बी नही मिलायी जाती। विशेषज्ञ वैज्ञानिक कहते हैं कि वनस्पति म चर्बी मिल ही नही सकती। इसके बावजूद चर्बी का प्रचार चल रहा है। गरीब और मध्यम वग की मुसीबत हो रही है। यह सब क्या हो रहा है ? यह दगे कराने के लिए हो रहा है। देश का विघटन करने के लिए हो रहा है। यह काग्रेसी और उसकी सरकार की मिट्टी पलीद करने के लिए हो रहा है। मगर काग्रेसी इस प्रचार की काट नही करते। शहरो, कस्बो म दात निपोरते हुए शोभा-यात्रा निकाल रहे हैं। उन्हे खबर नही है कि उनकी शोभा पर डामल पोता जा रहा है।

साधो, काग्रेस मे जाते ही जवान भी बूढा हो जाता है। वह भी बूढे काग्रेसी की तरह हाथ जोडते हुए ह हें करते हुए, मुस्कराते हुए माला पहनकर घूमना चालू कर देता है। देश की, भीतर की और अतर्राष्ट्रीय राजनीति उसे समझ मे नही आती। उसे समझ म आता है—इदिरा गाधी की जय बोलने से सत्ता मिलती है। वह देख चुका है कि इससे अब सत्ता नही मिलती। आध्र, कर्नाटक और काश्मीर म इदिरा गाधी की जय बोलने के बाद भी सत्ता नही मिली। अब जनता म जाना होगा। काम करना होगा। लोगो को समझाना होगा। शिक्षित करना होगा। उन्हें दुष्प्रचार के प्रभाव से बचाना होगा। इसम मेहनत लगती है। समझ लगती है। निष्ठा लगती है। मगर हाल यह है कि भरी जवानी वाला युवक काग्रेसी भी यह काम नही करेगा। किलकारी मारने वाले बच्चे से कह दो कि तू काग्रेसी है तो वह कहेगा—मुझे माला पहनाओ और मेरी जय बोलो। मेरी फोटो अखबार म छपाओ।

साधो यह देश अतर्राष्ट्रीय षडयन्त्र मे फस गया है। ईरान हाथ से निकलने के बाद अमेरिका ने पाकिस्तान को हथियारो का भण्डार बना दिया है। ये हथियार अफगानिस्तान के खिलाफ काम आने के बहाने से दिये जा रहे है। मगर हम जानते हैं ये हथियार भारत पर हमले के लिए दिए जा रहे हैं। जब प्रधानमत्री या दूसरे समझदार देशभक्त यह बात कहते है तो भारत म अमेरिका और पाकिस्तान के समथक

भारत माता के कुछ सपूत नेताओं को खास जगह मिर्ची लग जाती है। क्यों लग जाती है इन्हें मिर्ची ? क्या इनकी राष्ट्रभक्ति का यह तकाजा है कि इनके राष्ट्र पर हमले की तैयारी जब अमरिका पाकिस्तान से करवाये, तब ये बुरा न मानें ? तो ये किस भारत माता के सपूत हैं ? वह भारत माता क्या अमेरिका में है जिसका दूध इन्होंने पिया है ? यही 'एकात्मता यज्ञ' करते हैं यही साम्प्रदायिकता फैलाते हैं यही चर्बी का प्रचार करते हैं, यही असम में गड़बड़ी चालू रखे हैं। डाक्टर सुब्रह्मण्यम स्वामी और उनके साथ के लोग भी इस देश की सारी नीतियाँ बदल देना चाहते हैं।

साधो अमेरिकी षड्यंत्र यह है कि उत्तेजना पैदा करके पाकिस्तान से भारत पर हमला करवाया जाय। काश्मीर पर पाकिस्तान का कब्जा करवा दिया जाय। युद्धबंदी हो। इंदिरा गांधी और कांग्रेस इस देश में उखड़ जाय। तब भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में दक्षिण पंथी सरकार बने। यह सरकार पाकिस्तान से मित्रता करे और अमेरिका के आधिपत्य में यह भारत पाक मोर्चा, रूस के विरोध में बने। यानी भारत की स्वाधीनता खत्म। स्वतंत्र विदेश नीति खत्म। स्वतंत्र आर्थिक विकास खत्म। यानी भारत फिर से गुलाम देश बन जाय। यह योजना है। इस योजना के समर्थक 'देशभक्त' इस देश में बहुत हैं। *इंदिरा गांधी सही कहती हैं कि देश में पाकिस्तान के बहुत से वकील* हैं। ये मुसलमान नहीं हैं दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी हिंदू नेता हैं।

साधो, इस अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र का मुकाबला इंदिरा गांधी बड़ी ताकत और सूझ बूझ से कर रही हैं। दृढ़तापूर्वक उन्होंने हर चाल को अभी तक नाकाम किया है। इसीलिए बहुगुणा, चंद्रजीत यादव वगैरह तथा दोनों कम्यूनिस्ट पार्टियों ने समर्थन दिया है। हर देशभक्त इस मामले में इन्दिरा गांधी का समर्थन करेगा। अब तुम हिसाब लगाओ कि राष्ट्रीय स्वाधीनता के इस अहम मामले में भी कौन अमेरिका और पाकिस्तान की तरफ से बोलते हैं। कौन साम्प्रदायिकता और क्षेत्रीयता उभार कर संकट के समय देश की एकता को नष्ट कर रहे हैं। और यह भी देखो कि कौन नेता चुप बैठे हैं। बोलते ही नहीं। न

दिखता, न सुनायी देता। वे तटस्थ है, जैसे आइसलंड के निवासी हैं। उनका यह मौन भी अमेरिका पाकिस्तान के षडयन्त्र का समर्थन करता है। इनकी देशभक्ति के सामने बड़ा भारी प्रश्नचिह्न लगा है।

साधो ऐसे वक्त जब काग्रेसमैन को, खासकर युवको का कसबे कसबे, गाव गाव जाना चाहिए। शहरो के मुहल्ले मुहल्ले में जाना चाहिए, लोगो को समझाना चाहिए उन्हे सचेत करना चाहिए तब ये अकमण्य लोग अपनी शोभायात्रा निकाल रहे है और फोटो छपा रहे है। बगलो की राजनीति के दिन गये। इन्हे हिम्मत करके जनता में जाना चाहिए। काफी आराम हो गया। अब थोडी सडक गली की खाक छानना चाहिए। साधो, मगर ये अपनी बात नही सुनेंगे। न सुनें लेकिन कहते जाना हमारा कर्तव्य है। इसे हम करते जायेंगे। ये बारूद पर बैठे माला पहनें।

५ दिसबर, १९८३

# कामनवेल्थी भाईचारा

साधो, एक खर्चीला जलसा और खत्म हुआ। इसे 'कामनवेल्थ' का जलसा कहते हैं। ब्रिटिश साम्राज्य दूसरे महायुद्ध के बाद खत्म हुआ, तो इसके उपनिवेश स्वाधीन हो गये। इन देशों में जिनका शोषण अंग्रेजी साम्राज्यवाद ने किया था, ब्रिटेन के रिश्ते कैसे हों, यह सवाल था। ब्रिटिश कामनवेल्थ संगठन पहले भी था, पर इसमें वे देश थे जिनमें अंग्रेज जाकर बस गये थे। गांधी जी कहते थे कि हमारा विरोध साम्राज्यवाद से है, अंग्रेजों से नहीं। अंग्रेज तो हमारे भाई हैं। एक तो गांधी जी की यह नैतिकता। दूसरे, दूरदर्शी जवाहरलाल नेहरू की यह समझ कि ब्रिटेन से किसी तरह का संबंध बनाये रखने में हमें आधुनिक तकनीक सुभीते से मिलेगी। व्यापार में ब्रिटेन हमें विशेष रियायत देगा और दिलायेगा। नव-स्वतंत्र देशों में आर्थिक सहयोग होगा। ये एकत्र होकर साम्राज्य विरोध में और शांति के पक्ष में एक ताकत बनेंगे। तो नेहरू ने कहा—'ब्रिटेन' हटा दिया जाय सिर्फ कामनवेल्थ रहे। इसमें ब्रिटिश साम्राज्य से मुक्त हुए देश बराबरी की हैसियत से ब्रिटेन के साथ शामिल हों। अंग्रेजों ने कहा—मगर हमारी रानी का क्या होगा? नेहरू ने कहा—रहने दो तुम्हारी रानी को बाइज्जत। नेहरू के ध्यान में यह भी था कि पाकिस्तान पहले ही ब्रिटिश कामनवेल्थ में शामिल होने को राजी है और वह खुराफात करेगा।

साधो, यह नेहरू का सपना था। अच्छा था। मगर हुआ कुछ नहीं। ब्रिटेन क्या मदद करता, जबकि वह फ्रांस, जर्मनी के सामने

कई साल हाथ जोड़े खड़ा रहा कि हम यूरोपीय साझा बाज
यूरोपीय आर्थिक समुदाय' में शामिल कर लो। बड़ी बेइज्जती
उसे यूरोप में शामिल किया गया। तकनीक यूरोप के देश ब
ब्रिटेन भी बेचता है। तुम्हारी हैसियत है, तो तकनीक खरी
हम बेचते हैं, तुम भी खरीद लो। पूंजी चाहिए? हां, हम
देश में पूंजी लगाते हैं, मगर मुनाफा हम पूरा लेंगे। जहां तक
माल खरीदने का सवाल है, उसे खरीदकर हम अपने उद्योग को
नहीं पहुंचाएंगे। हम इसके मामले में 'प्रोटेक्शनिज्म' की
चलेंगे। हथियार चाहिए? तो हमारे कारखाने के हथियार खरी
मगर बिना लड़ाई के हथियार किस काम के? तो आपस में
नहीं लड़ोगे, तो हम तुम्हें आपस में लड़वायेंगे क्योंकि हम
बेचना है। साधो, ये औद्योगिक देश जो हथियार बनाते हैं,
अस्सी फीसदी ये गरीब विकासशील देश खरीदते हैं। कामनवेल्थ
आपस में लड़ते हैं। अफ्रीका के कई देशों में हमेशा गृह युद्ध होते
हैं। जहां तक स्वाधीनता का सवाल है—एक छोटे से फाकलैंड
स्वतंत्र होना चाहा, तो ब्रिटेन ने फौजी समुद्री बेड़ा भेजकर उसे
दिया। जहां तक विश्व शांति का सवाल है, मैडम थैचर ब्रिटेन
अमरिकी पर्शिंग मिसाइल की अगवानी करके दिल्ली प्रेम
आयी थी।

साधो, सब झूठ है। राष्ट्रकुल का भाईचारा झूठ है। परस्प
योग की बात झूठ है। स्वाधीनता की बात झूठ है। शांति की
होने की बात झूठ है। मगर झूठ एक बार चल जाय, तो उसे खूब
से निभाते जाते हैं। इसीलिए हर दो साल में कामनवेल्थ के नेत
इकट्ठे होते हैं। मीठी बातें करते हैं। तू मेरा भाई है। नहीं
भाई है। ऐसा करते हैं। तुम महान हो। तुम भी महान हो।
बढ़िया संस्कृति है। तुम्हारी भी महान संस्कृति है। हम तुम्हारी
चाहते हैं। हम भी तुम्हारी उन्नति चाहते हैं। हम तो सबका
चाहते हैं। हम भी सबका भला चाहते हैं। सब माया है। चा
की जिंदगी है। इसमें पुण्य कर लो। भगवान में लौ लगाओ।

अच्छा खाना खाओ। सैर-सपाटा करो। पिकनिक हो जाय। नाच देखो। गाना सुनो। और जिस देश ने हमें खिलाया पिलाया, सैर सपाटा कराया, नाच दिखाये, उसके बारे मे कहो—हम आपकी संस्कृति से बहुत चमत्कृत है। आप बहुत महान हैं। चलो, घर चलें। साधो, कई छोटे छोटे देशों के प्रधान इस नाटक मे आये थे। एक देश की तो कुल आबादी ही साठ हजार है। साठ हजार की आबादी मे म्यूनिसिपल कमेटी बननी है। परन्तु इस देश का राष्ट्राध्यक्ष आया। पता नही तैरकर आया, या डोंगी से। बेचारे ने चंदे से नया सूट सिलवाया होगा।

साधो, मामला ग्रेनाडा का था गंभीर। यह पहले ब्रिटिश उपनिवेश था। अब स्वाधीन है, पर पतले धागे से ब्रिटेन से जुड़ा है। इसमें वाम-पंथी सरकार थी। इसकी आबादी कुल सवा लाख। मगर अमेरिका ने इसे अपने लिए खतरा माना और नंगा हमला कर दिया। अभी अमेरिकी सेना उस पर कब्जा किये है। इसको सब गलत मानते है। मगर मार्गरेट थैचर तथा दूसरे कुछ राष्ट्राध्यक्ष कहने लगे—भई, अमरिका का नाम मत लो। कुछ ऐसा प्रस्ताव बनाओ कि ग्रेनाडा से विदेशी फौजे हट जायें। ईश्वर भी निराकार है। हम तो निराकार भगवान के उपासक हैं। अमेरिका का नाम मत लो। तो ऐसा निराकार प्रस्ताव पास हो गया। ठीक इसी वक्त अमेरिकी शासन की तरफ से घोषणा की गयी—हम निकारागुआ पर हमला कर सकते है। वहा मार्क्सवादी सरकार है और हम अपने पड़ोस मे ऐसी सरकार नही रहने देंगे। एक जूता चला वाशिंगटन से और सारे एशिया अफ्रीका के गैर गोरे राष्ट्राध्यक्षो के मुह पर लगा। अमेरिका ने कहा—ऐसी-तैसी तुम्हारे प्रस्ताव की। ऐसी-तैसी तुम्हारे राष्ट्रमंडल की। ऐसी-तैसी गुटनिरपेक्ष संगठन की। ऐसी-तैसी विश्वशांति के प्रस्तावों की। माई फुट !

साधो, सबसे बड़ी चिंता थी इस सम्मेलन मे भी विश्व शांति की परमाणु युद्ध रोकने की। दोनों महाशक्तियों मे समझौते की। मगर जब अमेरिका कहता है कि कहीं सरकार होगी तो हमारे पसंद की होगी, जनता के पसंद की नही। हमे जो सरकार नापसंद है, उसे हम हमला करके गिरा देंगे। यह क्या शांति की भाषा है? और ऐसी भाषा बोलने

वाले से कोई बातचीत क्या हो सकती है ?

साधो, यूरोप की जनता तो अब समझ गयी है कि ये जो नयी मिसाइलें, अमरिका हमारे यहाँ लगा रहा है ये हमारे नाश के लिए हैं। इनमें से एक भी अगर अमरिका ने रूस पर छोड़ी तो दो मिनट में रूसी मिसाइलें हमारे ऊपर बरस जायेंगी। सारे यूरोप में लाखों की रैलियाँ निकल रही हैं, ससद घेरी जा रही हैं, धरने दिये जा रहे हैं ब्रिटेन में स्त्रियाँ एक दूसरे का हाथ पकडे चौबीसों घंटे घेराव करती खड़ी हैं—मगर उनकी सरकारों ने इन मिसाइलों का लगवाना चालू कर दिया है।

साधो इसीलिए रूस जेनेवा शांतिवार्ता से हट गया। यह क्या बदमाशी है ! तुम हमसे बात कर रहे हो हथियार घटाने की मगर उधर नये हथियार लगा भी रहे हो। रूसी रक्षा मन्त्री ने घोषणा कर दी—अब हम अमेरिका के बिल्कुल पास मिसाइलें लगवायेंगे। वाशिंगटन बच नहीं सकता। दूसरी बात—हम फौजी ताकत में किसी को अपने से सवाया नहीं होने देंगे।

साधो, रामफल खुश थे कि नमीबिया की आजादी पर अच्छा प्रस्ताव पास हो गया। अब रामफल सिर पीटें। अमेरिकी शासन के प्रवक्ता ने कह दिया है कि नमीबिया को आजाद नहीं किया जा सकता क्योंकि अंगोला में क्यूबा के सैनिक हैं। नमीबिया में दक्षिण अफ्रीका रहेगा। गॉड हैल !

१२ दिसंबर, १९८३

## ब्रेन-ड्रेन की चिंता नहीं जी!

साधो, एक संयुक्त शब्द है—'ब्रेन ड्रेन'। कहते हैं—भारत से बहुत ब्रेन-ड्रेन हो रहा है। इसे रोकना चाहिए। प्रधानमंत्री तथा दूसरे नेता भी ब्रेन ड्रेन पर चिंता प्रकट करते हैं। ब्रेन का अर्थ दिमाग होता है। बहुत से दिमागी लोग अपना दिमाग लेकर दूसरे देशों में चले जाते हैं। यह 'ब्रेन ड्रेन' कहलाता है। इसमें चिंता की बात यह है कि इन दिमागों का उपयोग देश के भले के लिए नहीं होता। मगर साधो मेरा दुखी मन आशा से भर गया जब पिछले महीने राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने एक भाषण में कहा—'ब्रेन ड्रेन' की कोई चिंता नहीं करनी चाहिए। भारत में बहुत ब्रेन है।

साधो वैसे तो हम यों ही बेफिक्र होना चाहिए कि हमारे राष्ट्रपति 'ज्ञानी' से विभूषित हैं। फिर पंजाब में अनगिनत 'ज्ञानी' और संत हैं। तो कितना भी दिमाग विदेश चला जाय, यहां कमी होगी नहीं। समुद्र भरा है ज्ञान का। इतने 'ज्ञानी' हैं। मगर साधो, कारपोरेशन और नगरपालिका के सफाई विभाग में 'ड्रेन' का मतलब जरा गंदा होता है। ड्रेन का संबंध 'गटर' से होता है। तो चिंता कुल इतनी है कि सैकड़ों ज्ञानियों का ज्ञान तो हो, मगर वह नगरपालिका का 'ड्रेन' यानी 'गटर' का न हो जाय। जो कुछ हो गया है, उसी के नतीजे बहुत डरावने हैं। राष्ट्रपति जी का वश चलता हो तो 'ज्ञानियों' और संतों के 'ब्रेन' को और ज्यादा 'ड्रेन' बनने से रोकें।

अब साधो, इस पर विचार कर लें कि ब्रेन ड्रेन होना क्या है। आम शिकायत है कि हमारा लाखों लाख रुपया एक डाक्टर या एक इंजीनियर बनाने में लग जाता है। मगर ये डॉक्टर और इंजीनियर विदेश चले जाते हैं और दूसरे देशों को भारत के पैसे से बनाये ये लोग मुफ्त में मिल जाते हैं। मगर साधो यह भी तो देखो कि कितने इंजीनियर तथा डाक्टर बेकारी से पीड़ित हैं। एक विकासशील देश में इंजीनियर बेकार हों और गरीबी के कारण बीमारियों से जो देश ग्रस्त हो, उसमें इंजीनियर और डॉक्टर बेकार रहें, यह बात समझ में नहीं आती। एक तरफ हल्ला होता है कि चिकित्सा-सुविधाएं बहुत कम हैं और दूसरी तरफ डाक्टर बेकार घूमते हैं। एक पिन जो बनती है, उसका उपयोग तय है कि वह कागज नत्थी करने के काम आयेगी। पर एक इंजीनियर जो बनाया जाता है, उसका क्या उपयोग होगा, यह तय नहीं होता। तो मौका मिलते ही ये लोग विदेश चले जाते हैं।

साधो, जो नौकरी में लगे हैं, वे भी चले जाते हैं। ये दो तरफ जाते हैं—जिन्हें पैसा कमाना है, वे तीन चार साल के लिए तेल देशों को चले जाते हैं। वहां बहुत पैसा मिलता है। लौटकर ये दो-तीन लाख का मकान बना लेते हैं और बैंक में पैसा डाल देते हैं। ऐसा डॉक्टर ज्यादा करते हैं। दूसरी तरह के लोग यूरोप या अमरिका जाते हैं। यहां ज्यादा पैसा नहीं मिलता। वहां बेइज्जती भी होती है। फिर ये यूरोप तथा अमरिका क्यों जाते हैं? इनकी हीनता की भावना इन्हें वहां ले जाती है। गोरी जाति ने हम पर राज किया। हम गोरी जाति के गुलाम रहे। हम गोरों के साम्राज्यवाद से लड़े और उन्हें यहां से भगाया। मगर भारतीयों का एक वर्ग गोरों को देवता मानता है, आदर्श मानता है, रहन-सहन, पोशाक में उनकी नकल करता है। ये भारतीय नहीं जानते कि सोलहवीं शताब्दी में अंग्रेज आये तब भारतीय उनसे ज्यादा सभ्य थे। यूरोप के लोग हमारी तुलना में असभ्य थे। हमारे यहां यूरोप से बहुत अच्छे कारीगर थे। हमारा उत्पादन यूरोप से बहुत अच्छा था। मगर आजादी के बाद भारतीयों के एक वर्ग को भारतीय होने में शर्म आने लगी। ये गोरी जाति में मिलने को मरे

जाते हैं। व इसीलिए गारा की नौकरी करने जात ह, भारतीया का असभ्य समभते ह । बडी शान स कहते है— आइ एम इन दी स्टेट्स ।] स्टटस यानी अमेरिका । म गोरे सभ्य लोगो म स ह और तुम काल असभ्य हिदुस्तानी यही इडिया म पडे हो । ये लाग सास्कृतिक विकृ तिया ह ।

साधा, अब इस बहुत ऊच दिमाग के वज्ञानिका को लो। भारतीय वैज्ञानिक यूरोप या अमेरिका क्यो चले जात है। एक कारण ता यह है कि वहा शोध काय के लिए अधिक सुविधाए है। दूसरा कारण शमनाक है—विश्व प्रसिद्ध इन भारतीया का उनक अपन देश म नौकरी नही मिली ढग की । यहा नौकरशाही का राज है। यह राज टाइपराइटर, फाइल और मैन्युअल पर चलता है। चपरासी और नाबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक मे नौकरशाही काई फक नही करती। साधा, डॉक्टर हरगोविन्द खुराना का नाबल पुरस्कार मिला, ता जय जयकार मच गया। अहा, हमारे भारतीय को नोबल पुरस्कार मिला। हमार राष्ट्रीय गौरव का पट इतना फूलन लगा कि फूटन ही वाला था। डॉक्टर खुराना भारत आय। उन्होने भारत म ही रहकर पढाने और शाध-काय करने की इच्छा जाहिर की। पर इस देश म उन्ह कोई काम उनके लायक नही दिया गया। डॉक्टर खुराना साचते थे कि मुझे बाइज्जत आमन्त्रित किया जायगा। व नही जानत थ कि उन्ह दरख्वास्त छोट बाबू को देना था। वह टीप के साथ उसे बडे बाबू के सामन रखता। बडे बाबू आगे छोटे साहब के सामन रखत। नौकरशाही है। डाक्टर खुराना आखिर अमेरिका लौट गय।

साधा, अभी डाक्टर चद्रशेखर का नाबल पुरस्कार मिला है। व अमरिका म हैं। हम अपनी पीठ ठोक रह है। यही डाक्टर चद्रशेखर जब आक्सफोड स डिग्री लेकर आय थे, तब उन्ह यहा डिमान्स्ट्रेटर' की नौकरी भी नही मिली थी। यह बहुत छाटी नौकरी हाती है। हताश हाकर य अमेरिका चले गय। उन्ह अतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली। सन् १९८० म जब पडित नहरू अमेरिका गय, तब डॉक्टर चद्रशेखर स उन्होने कहा कि आप भारत लौट आइए। डाक्टर चद्रशेखर राजी हो गये। इधर

पंडित नेहरू ने गायन सेक्रेटरी से कह दिया कि डाक्टर
बुलाना है। दुनिया भर में तरीका यह है कि विशि
सम्मानपूर्वक आमंत्रित किया जाता है। मैं तो बहुत छा
पर सागर विश्वविद्यालय में मुक्तिबोध पीठ पर जाने के
विभाग ने मुझसे अनुरोध किया था। मैंने कोई प्रार्थना
था।

साधो, उधर डाक्टर चंद्रशेखर भारत से आमंत्रण
कर रहे थे। मगर इधर से उन्हें एक प्रार्थना पत्र का फार्म
कि इसे भरकर भेजिए। नौकरशाह यही करते हैं। डॉक्टर
ने उसे फाड़कर फेंक दिया। साधो, लेकिन कुछ साल बाद न
ने और कमाल किया। अपना अज्ञान दिखाया। डॉक्टर भ
मृत्यु के बाद उन्हें पत्र भेजा गया कि आप एटमिक रिसर्च इंस्
के संचालक हो जाइए। डाक्टर चंद्रशेखर ने माथा ठोंका।
दिया कि आपको यह भी पता नहीं कि मेरा विषय क्या है। मैं
वैज्ञानिक नहीं हूं और उस पद के लायक नहीं हूं। यह ज्ञान है
नेताओं का और नौकरशाहों का। साधो, 'ब्रेन ड्रेन' इन्हीं कार
होता है। मगर जब राष्ट्रपति जी ने कह दिया है कि देश में ब्रेन हैं
भरा पड़ा है तो हम अब इसकी चिंता भी नहीं है कि देवताओं के
बृहस्पति अमेरिका जाकर बस जायें।

११ दिसंबर, १९६३

# दुनिया के कोतवाल की नयी हरकत

साधो, अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक प्रमुखवाद म एक नयी तरकीब अमेरिका न अभी खोजी है और उसका प्रयोग भी हो चुका है। यह तरकीब वैसी ही है, जैसी अपने यहा के खुर्राट शहर 'कोतवाल' काम म लाते है। कोई आदमी किसी मुहल्ले मे है। वह कोतवाल को सलाम नही करता। कोतवाल के जुल्म और ज्यादती के खिलाफ रहता है। स्वतत्र है। दूसरो का फसाने मे पुलिस की मदद नही करता। तो साधो, ऐसे आदमी को ठीक करने के लिए कोतवाल यह तरकीब करता है। वह मुहल्ले के चार-पाच लोगो को बुलाता है जो पुलिस से डरते है। उनसे उस आदमी के बारे म रिपोर्ट लिखवाता है—वह गुडा है भले आदमियो से मारपीट करता है औरतो को पकडता है, किसी का भी सामान छीन लेता है। लिहाजा हुजूर से दरख्वास्त है कि इस खतरनाक आदमी से हम गरीबो, कमजोरो की हिफाजत की कारवाई करें। खुदा हुजूर को सलामत रखे।

साधो, अब इन चार पाच आदमियो की शिकायत पर जो कोतवाल ने खुद करायी है साहब उस आदमी पर जुर्म कायम करेगा। उसे हवालात मे बद करेगा। फौजदारी मुकदमा दायर करेगा। सिपाही और हवलदार उसके घर रोज भेजकर तग करवायेगा और आखिर उसे दबाकर रखेगा। चौबीस घटे अपने घर मे रहते हुए वह अनुभव करेगा कि म पुलिस हवालात मे हू और कोतवाल मूछो का

एठ रहे है।

साधो भारत ने दुनिया का बहुत ज्ञान दिया—शून्य दी दशमलव दिया गणित दिया रेखागणित दिया अंतरिक्ष विज्ञान दिया आयुर्वेद दिया। इसके साथ ही भूत प्रेत दिये। पिशाच दिये। हमने अपने पुलिस कोतवाल की कुशल-पद्धति भी दी। तुम जानते ही हो, दूसरे महायुद्ध के बाद से अमेरिका ने अपने को सारी दुनिया का पुलिस कोतवाल मान लिया है। इस कोतवाल का एक तरीका तो यह है जो भारतीय है—दो को लड़ाया। फिर कोतवाल बनकर पहुंच गये—क्यों बे क्यों लड़ते हो? दोनों को हवालात में डाल दूंगा। जिंदगी भर जेल में सड़ोगे। निकालो दोनों पैसे। और आइंदे हमारा हुक्म मानना वरना साला चूतड़ की चमड़ी उधेड़ दूंगा। ऐसे कई देश अमेरिका के निगरानी सुदा गुंडे हैं—हालांकि ये शरीफ मगर कमजोर देश हैं।

साधो, अपने पुलिस कोतवाल की शिक्षा के अनुसार दूसरी तरकीब अमरिकी शासन ने अभी आजमायी। कैरीबियन में एक सवा लाख की आबादी का द्वीप है—ग्रेनाडा। ऐसे कई द्वीप हैं छोटे छोटे। ये स्वतंत्र देश हैं। इनमें चार पांच को अमेरिका ने अपने आधीन बना रखा है। ये वैसे ही देश हैं जैसे पुलिस के बने-बनाये झूठे गवाह मरीचे हैं। जैसा हुक्म अमेरिकी मालिक दें, वैसा करेंगे। अब ग्रेनाडा में जिस पार्टी की सरकार थी, वह अमेरिका को पसंद नहीं थी। वह पार्टी कुछ वामपंथी है। उसका क्यूबा से सहयोग है। ग्रेनाडा में कुछ क्यूबियाई भी थे जो सैनिक नहीं थे। डॉक्टर इंजीनियर प्रशिक्षक थे। पर महाशक्ति अमेरिका न जाने क्या एक भी क्यूबाई को देख लेता है तो डर से कांपता है। यह डर शायद १९६२ में समा गया था जब क्यूबा की सुरक्षा के लिए रूस ने वहां मिसाइलें और राकेट लगा दिये थे।

साधो राष्ट्रपति रीगन को इस सरकार को गिराना था, ग्रेनाडा पर कब्जा करना था और अपनी इच्छा की सरकार बनाना था। सीधा हमला अमरिका करना नहीं चाहता था। बदनामी होती। विरोध होता। हमलावर कहलाता। वैसे तो अमरिकी शासन उठाईगीर गुंडे

ग्रौर लफगे के रूप मे इतने बदनाम हो चुके है कि उन्हे बदनामी की परवाह नही। वियतनाम, कोरिया, ईरान मे पिट भी इतने चुके हैं कि अब पिटने में शर्म भी नही आती। मगर बहाने के लिए अमेरिका ने अपने पिछलग्गू इन देशो से अपने लिए आवेदन बुलवाये—हुजूर रीगन साहब, आप महान हैं। हम छोटे-छोटे कमजोर देश है। हमे ग्रेनाडा की सरकार से खतरा है। मेहरबानी करके हमारी रक्षा कीजिए। बस इन देशो के दस पाच सिपाही लिए और अपनी सेना ग्रेनाडा मे उतार दी। अभी वहा कब्जा किये बैठे है। रीगन दुनिया को समझाते है—भई, हमे तो इन छोटे-छोटे कमजोर देशो की रक्षा के लिए ग्रेनाडा मे फौज भेजनी पडी। वह सयुक्त सेना थी। यह हमने को या उचित ठहराने की कोशिश की गयी।

साधो इस मूर्छे उमेठते दुनिया के कोतवाल की हरकतें अजीब हैं। यह कही चोरी रोकने जाता है और खुद चोरी करने लगता है। कही दो गुटो मे झगडा रोकने जाता है और एक गुट की तरफ से खुद दूसरे पर गोली दागने लगता है। अमेरिका लेबनान मे चार देशो के साथ सयुक्त राष्ट्र सघ की तरफ से शाति स्थापना के लिए गया था। मगर वहा इसराइल से मिलकर खुद सीरिया पर बम बरसाने लगा।

साधो अब जरा घर लौटो। यानी दक्षिण पूर्व एशिया मे देखो। कोतवाल ने पूरे हिंद महासागर मे सैनिक जाल बिछा रखा है। मगर जो फार्मूला उसने ग्रेनाडा मे लगाया, वही इस क्षेत्र मे भी लगाना चाहता है। अभी नेपाल के राजा वाशिंगटन गये। उनका बडा स्वागत सत्कार किया गया। अब कोतवाल की बदमाशी देखो। राष्ट्रपति रीगन ने स्वागत भोज मे कहा—नेपाल एक छोटा और गरीब देश है। इसका धन विकास कार्यों मे लगना चाहिए। सैनिक तैयारी मे इसका सीमित धन बरबाद नही होना चाहिए। इसके लिए नेपाल को 'शाति क्षेत्र' बनाना चाहिए। वीरेन्द्र ने तो पत्रवार्ता मे कहा कि हिंद महासागर को 'शाति क्षेत्र' होना चाहिए। अमेरिकी अड्डे और युद्धपोत तथा रूसी युद्धपोत भी हट जाना चाहिए। मगर रीगन कहते हैं—नेपाल को शाति क्षेत्र बनाना चाहिए। अमेरिकी पत्रकार तो यह

समझे कि नेपाल की रक्षा के लिए सेना भेजी जा रही है। एक पत्रकार ने पूछा—आपको जल सेना की भी जरूरत पड़ेगी न? तो वीरेन्द्र ने हसकर जवाब दिया—नेपाल चारो तरफ से जमीन से घिरा है। हमारा कोई जलमार्ग नहीं है।

साधो अब जरा दुनिया के कोतवाल की बात पर चिंता से गौर करो। नेपाल को शांति क्षेत्र' बनाना चाहिए। इसे शांति क्षेत्र कौन बनायगा? निश्चित ही अमेरिका बनायगा। अब पिछले पच्चीस तीस सालो से अमेरिका कैसे शांति क्षेत्र बना रहा है यह सब जानते है। पश्चिमी एशिया मे अमेरिका ने ही तो शांति क्षेत्र बनाया है जहा कई सालो से रोज लडाई हो रही है।

साधो सवाल यह है कि नेपाल को किस देश से खतरा है? कौन उस पर हमला करने वाला है? किसके खिलाफ नेपाल को सुरक्षा चाहिए? चीन से तो अमेरिका कोई खतरा नही मानता क्योकि दोनो की दोस्ती है। अभी अमेरिका ने चीन को खरबो डालर के आधुनिक हथियार देने का समझौता किया है। मगर भारत से अमरिका नाराज है। नाराज है—भारत की विदेश नीति से रूस से दोस्ती से, स्वाधीनता मे, गुट निरपेक्ष आदोलन को ताकतवर बनाने से। तो अगर नेपाल को खतरा है तो कोतवाल साहब की नजर मे भारत से ही होगा।

साधो, अब भविष्य देखो। पहले भूत को देखो। ग्रेनाडा पर अमेरिका ने चार-पाच छोटे देशो की सुरक्षा के लिए हमला किया था—ऐसा उसका तर्क है। उधर पाकिस्तान लका अमेरिकी खेम मे हैं। जनरल इरशाद लगभग अमरिकी पिछलग्गू हो चुके। मलाया, सिंगापुर थाईलैड जापान अमेरिकी गुट मे हैं। नेपाल सतुलन रख रहा है।

तो साधो किसी दिन अमेरिका नेपाल, लका, पाकिस्तान वगैरह से दरख्वास्त बुला लेगा कि मालिक इस दैत्य महाराष्ट्र भारत से हम खतरा है। लिहाजा गरीबपरवर हमारी रक्षा करें।

तब साधो, दुनिया के कोतवाल आ धमकेंगे।

२७ अप्रल, १९८३

## चरणसिंह गांधी से नाराज हैं

साधो अब मैं इस निष्कर्ष पर पहुंच चुका हूं कि संसार के इतिहास में कोई एक आदमी ऐसा हुआ है जो पूरी तरह सही और सत्य था, तो वह आदमी चौधरी चरणसिंह है। बाकी सब महापुरुष चिंतक दार्शनिक गलत थे। सारे राजनेता गलत रहे हैं और अभी भी हैं। वैदिक ऋषि उपनिषदकार, स्मृतिकार, शंकराचार्य, विवेकानंद अरविंद आदि सब गलत थे। सुकरात से लेकर कार्लमार्क्स तक सब गलत थे। राजनेताओं क्रान्तिकारियों में ग्रीक पुराण के प्रामथियस से लेकर फिदेल कास्त्रो तक सब गलत हैं। राष्ट्रपतियों प्रधानमंत्रियों में लिंकन, जेफरसन, डिसराइली, चर्चिल दीगाल आदि सब गलत थे। महात्माओं में देवताओं के गुरु बृहस्पति से लेकर अब तक के सारे महात्मा गलत थे। बुद्धिवादियों में अरस्तू से लेकर बर्नार्ड शा, बरट्रेंड रसेल तक सब मूर्ख थे। सारे अर्थशास्त्री गलत हुए हैं। समाजशास्त्री भी सब गलत हुए हैं। वैज्ञानिकों में आर्यभट्ट से लेकर गैलीलियो, न्यूटन, आइंस्टीन सब गलत। एक मात्र महापुरुष विराट मानव जाति ने कई शताब्दियों में पैदा किया है जो ज्ञान, विज्ञान राजनीति, दर्शन, अर्थशास्त्र में सोलहों आने सही है और उस आदमी का नाम है—चौधरी चरणसिंह। कहा है

मत हमको सहल समझो, फिरता है फलक बरसों
तब खाक के पर्दे से इंसान निकलता है।

साधो, इस शेर में 'इंसान' की जगह 'चरणसिंह' कर दो। शेर का अर्थ होगा—हमें आसान मत समझो। आसमान बरसों घूमता है

तब खाव के पर्दे से एक चरणसिंह निकलता है। साधो, चरणसिंह दुनिया के सारे ज्ञानियो, महात्माओ को खतम कर चुके थे। बस एक महात्मा है जो उनके रास्ते म आता है और जिससे वे सन्त नाराज है। उसका नाम महात्मा गाधी है। पिछले कई साला से चरणसिंह महात्मा गाधी की एक बडी गलती बता रहे है मगर कोई आदमी उनकी बात मान नही रहा है। अभी आठ-दस दिन पहले चरणसिंह ने फिर बडी सख्ती से महात्मा गाधी पर हमला किया है। साधो, चरणसिंह बहुत सीधी बात कहते है। उनका मतलब है कि यो तो महात्मा गाधी ठीक ठाक थे – हालाकि मुझसे बहुत छोटे दर्जे के महात्मा थे। पर उन्होंने सबसे बडी भूल यह की कि जवाहरलाल नेहरू को प्रधानमत्री बनाया। नेहरू की गलती वे यह बताते है कि उन्होंने अर्थसत्ता का केंद्रीयकरण करके देश का बहुत नुकसान किया।

अब साधो महात्मा सब बातें साफ-साफ विस्तार से तो बताता नही है। वह कूट वाक्य बोलता है जिसकी व्याख्या करनी पडती है और उसे समझना पडता है। कबीरदास ने ता उलटबासी कह दी—जल बिच मीन पियासी मोहि देखत आवे हासी। अब इसकी व्याख्या करके अर्थ समझना कठिन काम है। अर्थ सत्ता के केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण पर बहुत विवाद अर्थशास्त्रियो म है और एक सतुलन की खोज की जा रही है। मगर चरणसिंह का गूढ अर्थ यह है कि नेहरू ने देश को आधुनिक बनाने का सूत्रपात किया और समाजवादी उद्देश्य से योजना बनाना शुरू किया। चौधरी चरणसिंह का विश्वास है कि देश को अठारहवी शताब्दी म लौटाना था जिसम सामती व्यवस्था होती। बडे-बडे जमीदार और भूमिपति होते जिनके खेतो पर गुलाम काम करते। कोई वाजिब मजदूरी मागने की बदतमीजी करता, तो उसे कोडे लगवाये जाते। मगर जवाहरलाल नेहरू ने जमीदारी खतम की और वे सहकारी खेती के पक्षधर थे। चरणसिंह कोई योजना वगैरह नही चाहते थे। पूजीवाद पनपे और गरीब और गरीब होकर मरता जाय। नेहरू इसलिए चौधरी जी को नापसद है। फिर अगर सरदार पटेल को प्रधानमत्री गाधी जी बना देते तो उनकी मत्यु १६५२ म उनकी

क़िस्मत म लिखी ही थी। सरदार पटेल की मत्यु के बाद १९५२ म ही चरणसिंह प्रधानमन्त्री वन जाते और अभी तक वही हमारे भाग्यविधाता रहते। गाधी जी ने हमे इस सौभाग्य से वचित कर दिया। तीसरी बात यह कि गाधी जी जानते थे कि इदिरागाधी जवाहरलाल की बेटी है। जिस आदमी की बेटी इदिरा हो, उसे कदापि प्रधानमन्त्री नही बनाना था। गाधी जी ने यह भूल की जिसका नतीजा यह हुआ कि इदिरा गाधी प्रधानमन्त्री हो गयी। इससे चौधरी जी जैसे कई सतो को जितनी तकलीफ हुई और हो रही है, उससे गाधी जी की आत्मा को शाति नही मिल रही होगी। साधो, म सोचता हू कि महात्मा गाधी के प्रति चौधरी साहब के गुस्से को कैसे खत्म किया जाय। एक तरकीब है—एटनबरो की फिल्म 'गाधी' म एक दृश्य जोड दिया जाय। इस दृश्य म चरणसिंह गाधी जी की पीठ पर पीछे से लाठी मारकर यह कहते हुए भाग जाय—तू जवाहरलाल का प्रधानमन्त्री बनाने की सजा भोग। यह दृश्य फिल्म म आ जाय तो चौधरी जी महात्मा गाधी का माफ कर दें।

साधो, जहा तक चौधरी चरणसिंह का सवाल है, वे पूर्ण महात्मा है जैसे कृष्ण सोलह कलाओ से पूर्ण भगवान का अवतार थे। राम सिर्फ बारह कलाओ के अपूर्ण अवतार थे क्योकि वे मर्यादाए मानते। चौधरी जी सोलह कलाबाजियो से पूर्ण राजनीतिक अवतार हैं। वे कोई मर्यादा नही मानते और जब जो भी करते है, सही करते हैं। वे तीन और दो का जोड पाच करते हैं, तब भी सही है। और तीन और दो का जोड सात करते ह तब भी सही है। वे १९६७ म काग्रेस मे निकले और सविद सरकार बनायी तब भी सही थे। और फिर वापस काग्रेस म लौट गये तब भी सही थे। फिर काग्रेस छोडी तब भी सही थे। और दुबारा इदिरा गाधी के चरण छूकर काग्रेसी हुए तब भी सही थे। फिर काग्रेस छोडी और 'क्रातिदल' बनाया, तब भी सही थे। वे मर्यादा से नही बधते। सिद्धात मनुष्य को गुलाम बनाता है इसलिए वे सिद्धात नही मानते। फिर 'लोकदल' बनाया, तब भी सही थे। फिर 'सपूर्ण क्राति म शामिल थे तब भी सही थे। १९७७ मे 'जनता

पार्टी' मे और सरकार मे शामिल हुए तव भी सही थे। फिर जनता पार्टी तोडी, तव भी सही थे। तव राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ से विरोध था तव भी सही थे। आजकल राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ की गोद म बच्चे की तरह बैठे हैं, तव भी सही हैं। १९७९ म इदिरा गाधी के हाथ जोडकर समथन लेकर प्रधानमत्री बने, तव भी सही थे। एक दिन भी प्रधानमत्री के रूप मे ससद को दशन नही दिये, यह भी सही किया। लोकदल तोडा, यह भी सही किया। किमी जाट को नेता नही होने दिया, यह भी सही किया।

साधो अव जो 'भारतीय जनता पार्टी' के साथ सयुक्त मोर्चा वना कर बैठे है, वह भी सही कर रहे है। राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ को अव अच्छा कहते है यह भी सही कर रहे है। वे शायद नही जानते कि सघरूपी मगरमच्छ के जवडो मे अभी वे है। वे छिटककर कभी भी वाहर चले जायेंगे तो भी सही करेंगे। और अगर मगरमच्छ के पट म चले जायेंगे तो भी सही करेंगे। चौधरी चरणसिह कभी गलती नही करते। गलती तो महात्मा गाधी वगैरह करते रहते है। चरणसिह इतिहास के सबस वडे सत्तालोलुप और दल वदलू ह। उनका कोई भरोसा नही करता। शायद वीवी और वटा-वेटी भी भरोसा नही करते होग।

साधो इस राजनीतिक 'सत्यनारायण' की यह कथा सुनकर तुम पूछोगे—गुरु जड वुद्धि और ज्ञानी म क्या अतर है? क्षुद्र और महान मे क्या अतर है? देखो, वहुत वारीक अतर है। मगर कोई समझ नही सकता।

३ जनवरी, १९८४

## जनरल जिया का
## पेकिंग में कत्थक

साधो, खबर दिलचस्प है। पाकिस्तान से लड़कियों का एक दल चीन जा रहा है। इसमें गायिकाएं और नर्तकियां भी हैं। इससे पहले चीनी लड़कियों का एक दल पाकिस्तान आया था और उन्होंने नृत्य किया था। अब जिया उल हक के इस्लाम के सामने सवाल था कि ये लड़कियां चीन में नाचें या नहीं? इस्लाम के नाम पर पाकिस्तान में गाना, बजाना, नाचना बंद है। नूरजहां जब भारत आयी थीं, तब उन पर बंदिश थी कि वह यहां गायेंगी नहीं। तीस पैंतीस साल पहले के नूरजहां के गीत भारतीयों को याद थे, खासकर उसकी कव्वालियों में एक है

आह न भरी शिकवे न किए, कुछ भी न जबां से काम लिया
तिस पर भी मुहब्बत छिप न सकी, जब तेरा किसी ने नाम लिया
हम दिल को पकड़कर बैठ गये, हाथों से कलेजा थाम लिया।

साधो, इस्लाम में संगीत का निषेध है। मगर जब मुल्ला अजान देता है, तो उसमें लय होती है। यह संगीत है। धर्म के नियम और तानाशाहों के कानून स्वाभाविक मानवीय प्रवृत्तियों को रोक नहीं सकते। बांगलादेश और पाकिस्तान दोनों में मजहब के नाम पर औरतों पर बंदिशें लगी हैं। उन्हें बुर्के में ढकी रहना होता है। ऊपर से चादर से अपने को बंद रखना पड़ता है। रवीन्द्रनाथ ने उन्हें 'चलती फिरती कब्रें' कहा था। मगर तानाशाहों की बदकिस्मती देखो, वे कितने हास्यास्पद हैं। दोनों देशों में लोकतंत्र की बहाली के आंदोलनों का

नतृत्व ग्रारतें ही कर रही ह—इधर नुसरत व बनजीर भुट्टा, तथा बगम वली गा और उधर शेख हसीना वाजेन्ट और बगम खालिदा रहमान। जिन स्त्रिया को चलती फिरती कब्रें बनाकर रखना चाहत हैं वही औरते मजहब की माला फेरने वाल तानाशाहो की मूछें नाच रही ह। मगर जिया उल हक लडकिया का गाने नही देंगे नाचने नही देंगे, खेलन नही देंगे।

साधो धम के नियम तत्कालीन परिस्थितिया के हिसाव स बनत हैं। पैगबर मोहम्मद के जमाने म कबीला म लडाई होनी रहती थी। हारे हुए कबीले की औरतें लाकर जीतने वाले घरा म डाल देते थे। एक एक की पच्चीस तीस बीविया होती थी। इसे मिटाने के लिए पैगबर ने तीन बीविया का नियम बनाया। कहा यह जाता है कि मुसलमाना को तीन चार बीविया रखने का सुभीता है। घर म चार बीविया सुभीता है कि मुसीबत? सगीत, नत्य पर प्रतिवध विलासिता को रोकने के लिए लगाया गया। तब मक्का व्यापार का बहुत बडा केंद्र था और खूब विलासी जीवन था। इसे रोकने के लिए य बदिशें लगायी गयी। मगर अब बीसवी शताब्दी है, यह छठवी शताब्दी नही है। मगर तानाशाह और शाह जनता को छठवी शताब्दी म रख कर, मजहब के नाम पर उन्ह गुलाम बनाकर रखना चाहते है।

साधो, धर्मो की कल्पनाए विचित्र है। जो चीजें मनुष्य के लिए इस लोक मे वर्जित ह, वे सब स्वग मे धर्मात्मा आदमी को मिलती हैं। यहा स्त्री को दखना पाप है मगर स्वग म अप्सराए सप्लाई होती है। इस्लाम की कल्पना मे भी जन्नत म हूरें (अप्सराए) खूब मिलती है। स्वग और जन्नत म शराब के तालाब भरे हाते है। जितनी चाहो पीओ। मगर आदमी क लिए यहा स्त्री भोग और शराब पीना पाप है। साधो चाणक्य ने राजा के लिए नीति बनायी है कि वह निष्कटक राज करने के लिए प्रजा म अधविश्वास और अज्ञान का प्रचार करे। इसी नीति पर ये शाह, राजा और तानाशाह चलते है। अधविश्वास और अज्ञान फलाने का सबसे अच्छा जरिया धम का उन्माद है। उधर पाकिस्तान मे इस्लाम, तो इधर भारत मे हिंदू धर्म और इस्लाम दोना

का उन्माद अधविश्वासी और अज्ञानी बनाना है।

साधो, बात मन उठायी थी पाकिस्तान की गायिका और नर्तकी लडकिया के चीन जाने की मगर बात करने लगा मजहब की। खैर, थोडी बात और हो जाय। अमानवीय और अप्राकृतिक बधनो के खिलाफ डटकर विद्रोह हुआ। तवायफो ने गान और नाचन की बदिश तोड दी। दरबारो म तवायफे नाचन-गाने लगी। उनके कोठो पर गाने-नाचने का आनद लेने बडे-बडे लोग जाने लगे। मौलवी भी छिप कर जाने लगे। और सुनने लगे दादरा

नजरिया की मारी मरी मरी गुइया !

फिर बदिशें तोडी शायरो ने। मुसलमानो म, शेख, वाइज, जाहिद धर्म के पहरेदार होते है। ये बडे पवित्रतावादी होते है। धार्मिक आडंबर वाले होते है। उनकी काफी दुगति उर्दू शायरी म है, जो फारसी से आयी है

वाइज शराब पीने दे मसजिद म बैठकर
या वो जगह बता कि जहा पर खुदा न हो

और

लुत्फे मय तुझसे क्या कहू जाहिद
कम्बख्त तूने पी ही नही

और गालिब ने तो कमाल ही कर दिया। कहते है -

कहा मयखाने का दरवाजा कहा वाइज
इतना जानते है, वो जाता था कि हम निकले

यानी कहा शराबखाने का दरवाजा और कहा वाइज, धर्मोपदेशक तोबा—तोबा! पर, हम इतना जानते है कि हम पीकर निकले तो वो घुस रहा था।

अब साधो, आओ पाकिस्तानी लडकियो के चीन जाने पर। चीनी लडकिया पाकिस्तान म नाचने आती है। [illegible] लडकिया चीन जा रही है। [illegible] के लिए [illegible] अगर ये कह कि हम नाचने की [illegible] है, क्योंकि [illegible]

है, तो चीनी शासक कहेंगे—अच्छा, यह जिया अपने को हमसे बड़ा मानता है। गाया हमारी संस्कृति नहीं है इन उठाईगीरों की संस्कृति है। हमारी लडकियां इस्लामाबाद में नाचें और इसकी लडकियां हमारे पेकिंग में न नाचें। तो अब जनरल जिया धर्मसंकट में पड़ गये। अमेरिका और चीन की ताकतवर धुरी के बीच में पाकिस्तान बटेर के बराबर है। अगर चीनी नेता कहें कि हम जिया उल हक का नाच देखेंगे तो जिया को पेकिंग जाकर गुड़ बंदर की तरह नाच दिखाना होगा।

तो साथो, जिया हुजूर ने लडकियों को 'कत्थक' नाचने की मंजूरी दे दी है। मगर 'कत्थक' आया कहां से ? इस पीढ़ी के सारे कत्थक नर्तक बिरजू महाराज के चेले हैं। कत्थक भारतीय उपमहाद्वीप की सम्मिलित कला-परंपरा है। यह भारत, बांगलादेश, पाकिस्तान तीनों की संस्कृति है। इस संस्कृति से जिया उल हक पिंड छुड़ा नहीं सकते। पाकिस्तान में कत्थक और भरत नाट्यम ही नाचा जायेगा। और पाकिस्तानी गायक वही रागरागिनियां गायेगा जो हजारों सालों से गायी जा रही हैं। जिया उल हक नये संगीत का आविष्कार नहीं कर सकते, यह बदकिस्मती है। तो पाकिस्तानी गायक वही बोल गाता है—बता दो कोई कौन गली गये श्याम !

८ जनवरी, १९८४

# उपचुनावों में चर्बी निकल गयी

साधो सबसे पहले हम शोक प्रकट करें। चौदह उपचुनाव हो गये। इनमें कुछ लोग चर्बी में राजनीति के पकौड़े तल रहे थे कि कड़ाही उलट गयी और तलने वालों के हाथों में फफोले उठ आये, चेहरे पर छींटे पड़े तो दाग पड़ गये। चारों कोनों से चक्रवर्ती बनने के लिए जो अश्वमेध यज्ञ के घोड़े छोड़े गये थे, वे भाग गये। रथों के पहिये टूट गये। गंगाजल झूठा निकला। शायद रास्ते में नशा या पाखरा से भरा जाता होगा। साधो, गांव गांव, कस्बा-कस्बा, शहर के मुहल्ला मुहल्ला संघ वाले 'चर्बी चर्बी' चिल्लाते घूम रहे थे, धर्म नष्ट करने का आरोप लगा रहे थे। हिंदू अल्पसंख्यक हो रहे हैं—यह नारा लगा रहे थे। जैसे अटलबिहारी वगैरह तीस चालीस करोड़ नये हिंदू पैदा कर देंगे। मगर सब बेकार गया। लोकदल को तो दो सीटें मिल भी गयीं। भारतीय जनता पार्टी को एक भी नहीं। अब उबली हुई चर्बी के शरीर पर लगने से जो फफोले उठ आये हैं, उनकी मलहम पटटी करनी पड़ेगी। सारे साम्प्रदायिक प्रचार के बाद भी दंगा कहीं नहीं हुआ। बीच में दुष्ट डॉक्टर सुब्रह्मण्यम स्वामी ने बयान दे दिया कि एक भूतपूर्व केंद्रीय मंत्री, जो चर्बी कांड में अनशन पर बैठे थे, को मैंने खुद गाय का मांस खाते देखा। एक दिन के अनशन पर दो भूतपूर्व मंत्री बैठे—चरणसिंह और अटलबिहारी वाजपेयी।

साधो, जिस पार्टी पर यानी कांग्रेस पर चर्बी मिलाने का आरोप

था वह लोकसभा में सात में से तीन सीटें ले गयी। धर्म के एकमात्र सच्चे प्रचारक को एक भी सीट नहीं मिली। और गजब यह हुआ कि लोकसभा की एक सीट कम्यूनिस्ट पार्टी को मिल गयी। धर्म का नाश हो गया। अधर्मी जीत गये। अब भगवान को अवतार लेने के लिए आमंत्रित करना चाहिए। मगर गांधी जी जनता को 'जनार्दन' कहते थे। यह जनता जनार्दन प्रचार से बेवकूफ नहीं बनी। इसका साधुओं को बड़ा दुख है। जनता चलते चलते आगे बढ़ गयी है आम लोकतांत्रिक सड़क से। ये दक्षिणपंथी नेता सत्ता तक पहुंचने के लिए पगडंडियों की तलाश में बियाबान जंगल में भटके हुए वहीं वहीं चक्कर काट रहे हैं। पांव कांटों से छलनी हो गये हैं, लहूलुहान हैं। जिस जनता को बेवकूफ बनाना चाहते हैं, उसने सिद्ध कर दिया कि ये नेता बेवकूफ भी हैं और हास्यास्पद भी।

साधो, *अब क्या होगा? यानी आगामी आम चुनाव के लिए* क्या नया बनाव बनेगा? मोर्चे टूटेंगे, नये गठबंधन होंगे, महागठबंधन भी बनेगा। साधो फिर आवाज उठ रही है—विपक्ष की एकता कायम करो। यही नारा सन १९७७ में दिया गया था। साधो, भारतीय राजनीति में 'विपक्ष' है ही नहीं। यह वैकल्पिक विपक्ष उन लोकतंत्रों में होता है जहां दलों की राजनीति है। यह ब्रिटेन में है, जर्मनी में है, अमेरिका में है। इन दलों के बुनियादी सिद्धांत होते हैं, कार्यक्रम होते हैं, नियमित सदस्यता होती है। ये दल-बदल नहीं करते। भारत में विपक्ष तब होता जब कांग्रेस से अधिक वामपंथी एक बड़ी पार्टी होती। पर यहां *सिद्धांत और कार्यक्रम* के आधार पर दो कम्यूनिस्ट पार्टियां हैं। ये मिलकर भी ऐसा कारगर *विपक्ष नहीं बना सकतीं* जो केंद्र में कांग्रेस का विकल्प बन सके। ये ऐसी पार्टियां हैं जो कांग्रेस का अंधा विरोध नहीं करतीं। कुछ मामलों में समर्थन करती हैं, कुछ में विरोध। इनके सदस्य हैं। श्रमिक और किसान संगठन हैं। मजबूत यूनियनें हैं। ये ऐसा नहीं करते कि आज चरणसिंह के साथ हो जाओ, कल अटलबिहारी के, परसों चंद्रशेखर के। ये *विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, सम्प्रदाय विरोध,*

लोकतंत्र की रक्षा, साम्राज्यवाद विरोध, समाजवादी देशों से मित्रता आदि में कांग्रेस सरकार का समर्थन करती है। घरेलू नीतियों में विशेषकर आर्थिक नीतियों पर विरोध करती है।

साधो, बाकी नेता दक्षिणपंथी हैं जो या तो अकेले हैं या गिरोहों में हैं। इनके सिद्धांत और कार्यक्रम क्या हैं? एक ही कार्यक्रम है—इंदिरा हटाओ। चरणसिंह—इंदिरा हटाओ। चंद्रशेखर—इंदिरा हटाओ। जार्ज फर्नांडिस—इंदिरा हटाओ। इनकी पार्टी निश्चित नहीं है। समाजवादी अभी अभी तक लोकदल में थे, अब जनता पार्टी में हैं। महागठबंधन हुआ तो भारतीय जनता पार्टी के साथ हो जायेंगे। इनकी पार्टियां हैं ही नहीं। इनके सदस्य कोई नहीं है। जगजीवनराम से कोई पूछे कि आपकी पार्टी में कितने सदस्य हैं, तो वे क्या बतायेंगे। न चौधरी बता सकते, न चंद्रशेखर। ये सब नेता एक हो जायें, तो संसदीय राजनीति की भाषा में 'विपक्ष' नहीं कहलायेंगे। वास्तव में भारत में 'विपक्ष' है ही नहीं।

साधो, इन दक्षिणपंथियों का एक ही कार्यक्रम है—हर बात पर इंदिरा गांधी का विरोध। असम समस्या इंदिरा गांधी हल कर रही हों तो नहीं होने देना। पंजाब की समस्या का हल नहीं करने देना। इंदिरा गांधी कहें—दो और दो चार, तो ये कहेंगे—नहीं, दो और दो पांच।

साधो, इन दक्षिणपंथियों के इस रवैये के बारे में नंबूदरीपाद ने क्या कहा है, बताता हूं। तुम जानते हो कि सबसे ज्यादा विरोध इंदिरा गांधी से नंबूदरीपाद का रहा है। १९५८ में इंदिरा गांधी ने नंबूदरीपाद की केरल सरकार गिरायी है। मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी, जिसके नंबूदरीपाद महासचिव हैं, इंदिरा गांधी को शत्रु नंबर एक मानते आये हैं। मगर वे मार्क्सवादी हैं। देशी और अंतर्राष्ट्रीय वास्तविकताओं के संदर्भ में नीति तय करते हैं। न अंधे हैं, न मूढ़। तो नंबूदरीपाद ने महीने भर पहले कहा है—दक्षिणपंथी दल जो अपनी बंदूक हमेशा इंदिरा गांधी की तरफ तान रहते हैं, गलती करते हैं। इंदिरा गांधी साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष कर रही हैं। ये लोग उनका अंधा विरोध करके

एक तरह स साम्राज्यवाद का समथन करत हैं।

साधा अन बनाम्रो तुम कि अमेरिका साम्राज्यवाद का समथन करन वाले क्या राष्ट्रभक्त हो सकत है? सब जानते है कि अमेरिकी साम्राज्यवाद राष्ट्रा की स्वाधीनता छीनता है। भारत उसका निशाना है। भारत चारा तरफ स घेर लिया गया है। लका मे अमेरिकी अड्डा बन रहा है। दियगोगार्शिया म आणविक मिसाइलें लगा दी गयी है। पाकिस्ता को हथियारा मे भरे दे रहा है। बागला देश और नेपाल का खिलाफ कर रहा है। इस सबका विराध दोना कम्यूनिस्ट पार्टिया कर रही है और इदिरा सरकार का समथन कर रही हैं। मगर इदिरा गाधी जब कहती ह कि भारत का गभीर खतरा बाहर से है तब दक्षिणपथी नेता कहते हैं—भूठा प्रोपगडा करती है। वोट बटारन क लिए ऐसा कहती है।

साधा, इन नताम्रा म से एक न भी विराध म बयान नहा दिया ह कि पाकिस्तान को हथियारा स लम क्या कर रह हा, हमारे आस पास सनिक अड्डे क्या बना रहे हो, नयी मिसाइलें पाकिस्तान म क्या लगाना चाह्त हो। किसी ने विरोध म बयान नहीं दिया। अटक से कटक और काश्मीर से कन्याकुमारी तक अखड भारत के दावान भी कुछ नही बालत। तो साधो, सवाल उठना है कि य किसक पक्ष म हैं—भारत के पक्ष म या अमेरिका पाकिस्तान क पक्ष म? किसी न यह सच कहा है कि पाकिस्तान म जनरल जिया क जितने समथक है उनसे अधिक य लोग भारत मे ह।

१० जनवरी, १६८४

# भ्रष्टाचार पर फांसी

साधो, रूस में आयात-निर्यात विभाग के दो बड़े अधिकारियों को भ्रष्टाचार के अपराध में प्राणदंड दे दिया गया। यह समाचार रूस की सरकारी संवाद समिति ने ही दिया है। इस समाचार से भारत में कुछ हलकों में आनंद-ही-आनंद है। ये अधिकारी मामूली नहीं, अपने यहां के सचिव स्तर के होंगे। इन्होंने पैसा खाया होगा और उन्हें मौत की सजा हो गयी। समाजवाद विरोधी कहते हैं—क्या फायदा समाजवाद से? अरे, जो यहां होता है वही वहां होता है। वहां भी तो भ्रष्टाचार है।

साधो, भारत में मशहूर सरकारी विभागों के लोगों में भी प्रतिक्रिया है। एक सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारी कह रहे थे—इन रूसियों को पैसा खाना भी नहीं आता। अरे, पैसा अकेले नहीं खाया जाता। पैसे खाने का काम शृंखलाबद्ध होता है। नीचे से सबसे ऊपर तक खाता है। अकेला कोई खाने लगे, तो पकड़ा जायेगा। हम लोग तो पैसा खाने में मशहूर हैं। हम योजनाओं का सीमेंट और लोहा खुले बाजार में बेचते हैं मगर कभी पकड़े नहीं जाते। हम ठेकेदारों से पैसे खाते हैं। झूठे 'मास्टर रोल' भरते हैं। अकाल राहत कार्य का पैसा खा जाते हैं। पर क्या अकेले खाते हैं? सबसे पहले तो हम भ्रष्टाचार पकड़ने वाले विभाग के अफसरों को खिला देते हैं। फिर चपरासी-क्लर्क से लेकर ऊपर वालों तक को खिलाते हैं। विभाग के प्रधान को भी खिलाते हैं। वह मंत्री को खिलाता है। हम भगवान तक को खिलाकर

गाते हैं । कौन पकड सकता है ! नमूने के लिए कभी कोई चपरासी, बनर्क, नाकेदार पकडवा देते हैं । हमारे यहा बडा कोई नहीं पकडा जाता । और इन रूसी उल्लू अफसरो को देखो । बडे बाबू को नहीं खिलाया होगा, तो उसने चुपचाप खुफिया विभाग को बता दिया होगा । फिर जब इन अफसरो को भनक पड गयी थी, तो फौरन ऊपर वाला को खिलाकर ढाक लेना था मगर ये रूसी होते है कम अक्ल । इन्हे पसा खाना नही आता ।

साधो मैं सोचता हू कि भारत रूस के बीच सास्कृतिक आदान प्रदान के कई समझौते हैं उनमे 'भ्रष्टाचार शिक्षण' की योजना भी होनी चाहिए । हमारे यहा के उस्ताद भ्रष्टाचारियो को भेजा जाय । वे वहा हर महकमे मे भ्रष्टाचार के तरीके सिखाए । इससे दोनो देशो की मित्रता और गहरी होगी । भारत विश्व का गुरु है । कई प्रकार का ज्ञान भारत ने दुनिया को दिया है । हमारे यहा का मामूली असिस्टेंट इजीनियर भ्रष्टाचार की इतनी विद्या जानता है कि पूरे रूस को सिखा सकता है । साधो एक दो भ्रष्टाचार पारगतो ने मुझसे कहा—कुछ भी कहो सजा बहुत ज्यादा है । सीधे फासी । अरे, साल दो साल की सजा दो । खाया हुआ पैसा पत्नी के नाम से जमा कर दे । जेल से लौटकर धधा कर ले और जिदगी चन से काटे । मैंने कहा—तो आप लोग कुछ करो । भ्रष्टाचारी महासघ की तरफ से रूस की सरकार से अपील करो कि वह सजा कम करे । न्याय व्यवस्था मे परिवर्तन करे । मगर हमारे यहा के सर्वोच्च न्यायाधीश और न्यायविद सोवियत न्याय व्यवस्था के प्रशसक हैं । भूतपूर्व सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश गजेन्द्र गडकर तो बहुत प्रभावित थे । उन्होने शायद कोई किताब भी लिखी है । रिटायर्ड न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर तो सोवियत न्याय-व्यवस्था के अनुसार भारतीय न्याय प्रक्रिया म परिवर्तन के सबसे बडे समर्थक ह । न्यायमूर्ति देसाई ने एक जगह भाषण म कहा था कि रूस मे केस छ महीने म खत्म हो जाता है जबकि अपने देश मे केस छ महीने म शुरू ही नही होता । साधो न्यायविदो को कहने दो । हमे भाई चारे के नाते कुछ करना चाहिए । जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मवहाराबाद है, विश्व हिंदू परिषद

है, विश्व इस्लामिक सगठन है वसे ही भ्रष्टाचार का भी अतर्राष्ट्रीयतावाद है। इसी भाई चारे के हिसाब से जापान के प्रधानमत्री तनाका ने अमेरिका की लाक्हीड कपनी से घूस खायी थी। इस भाई चारे के नाते भारतीय भ्रष्टाचारी सघ को रूसी सरकार से सजा कम करवाना चाहिए। यह अपने भले के लिए भी जरूरी है। अपने देश म भी समाजवाद तो आना ही है। तब यदि घूस होने पर फासी होने लगी, तो अपने ही 'सदाचारी' मार जायेंगे।

साधो, इस मामले को लेकर पूजीवादी और समाजवाद विरोधी रूस और समाजवाद के खिलाफ प्रचार कर रह है। उनका कहना है कि रूस म खूब भ्रष्टाचार है। साधो, रूस वाले यह कभी दावा नही करते कि वहा अपराध होते ही नही। होते है। मगर किस तरह के और कितने? अपराध व्यवस्था के अनुसार होते है। रूस म प्राइवेट प्रापर्टी, प्राइवेट उद्योग और व्यापार नही है ठेकेदारी नही है जमीदारी नही है। यानी आर्थिक कारणो से जो अपराध होते है, वे कारण ही नही है। फिर भ्रष्टाचार का एक बडा कारण असुरक्षा है जिससे सुरक्षा का साधन सिफ पैसा माना जाता है, तो लाग घूस लेते ह, चोरी करते है। रूस मे जन्म स मत्यु तक सामाजिक सुरक्षा सविधान के अनुसार है। बेकारी नही है। फिर पीढी-दर पीढी समाजवादी सिद्धातो की शिक्षा दी जाती है सस्कार बनाये जाते हैं। इसलिए अपराध की मानसिकता ही नही है।

साधो, पैसा इकट्ठा करन की उपयोगिता भी नही है। उस पैसे मे प्राइवेट धधा कर नही सकते। प्रापर्टी खरीद नही सकते। शेयर खरीद नही सकत। बैंक म डालो तो पकड लिया जायेगा कि इस वतन वाले का इतना बक बैंलस कैसे हो गया। यह तो कह नही सकत कि हम दहेज मे मिला। अगर पसे मे खूब मौज मजा कोइ करने लगे, तो मुहल्ला कमेटी रिपोट कर देगी कि ये साहब हैसियत स बहुत ज्यादा खच कर रहे है। उनकी जाच शुरू हो जायेगी।

इस तरह साधो, व्यवस्था एसी है और चौकसी इतनी है तथा वैचारिक शिक्षण ऐसा है कि रूसी समाज म अपराध की सभावना न्यूनतम है। न्यूनतम इसलिए कह रहा हू कि आखिर व मनुष्य है।

काई अपराध कर भी बैठता है मगर यह अपवाद होता है। आम तथ्य यह है कि अपराध नहीं होते न उनकी ओर प्रवृत्ति होती। पर अगर किसी का पड़ोसी की बीवी पसंद आ जाये, तो इसमें काल मार्क्स क्या करे! पति और प्रेमी एक दूसरे के सिर फोड़ेंगे और सजा पायेंगे। रूसी साहित्य में और पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिलता है कि जल्दी गैस कनेक्शन देने के लिए पांच रूबल ले लिए सहकारी फाम के ट्रक पर सवारियां बिठा लीं, सहकारी दुकान से अच्छे जूते पहले ही अपने वालों को दे दिये। ये अपवाद होते हैं। रूसी पत्रों में अपने देश के भ्रष्टाचार पर व्यंग्य लेख छपते हैं।

साधो, बात यह है—हमारे देश में भ्रष्टाचार को आम मान लिया है वह जीवन मूल्य बन गया है और ईमानदारी अपवाद है। रूस में सदाचार आम है, वह मान्य जीवन मूल्य है और बेईमानी अपवाद है। यह मूल फर्क है—हमारे यहां ईमानदारी अपवाद है यहां बेईमानी अपवाद है। जिन दो बड़े अफसरों को भ्रष्टाचार के कारण दंड हुआ, वे अपवाद हैं। हमारे यहां भ्रष्टाचारी अपवाद नहीं आम है। रूस में सजा कठोर होती है जिससे लोग अपराध करते डरें। हमारे यहां भ्रष्टाचारी पकड़े ही नहीं जाते। कोई पकड़ भी लिया गया तो वह पिन्ना पिलाकर छूट जाता है। हमारे यहां तो सरकारी नौकरी में सदाचारी आदमी ही सजा भोगता है। उसे तंग किया जाता है बार-बार बुरी जगह तबादले होते हैं क्योंकि वह इस पवित्र 'धर्मचक्र' में शामिल नहीं होता। यह फर्क है।

२२ जनवरी, १९८४

## राष्ट्रीय एकता समिति भी हो गयी !

माधो, अलग-अलग जब बहुत डाके पड़ने लगते हैं, तब तमाम डाकू गिरोहों की मीटिंग बुलायी जाती है। इस बात पर विचार करने के लिए कि डाकेजनी कैसे बंद हो। इसमें हर डाकू कहता है—सब मनुष्य एक ही भगवान के बनाये हुए हैं। सब भाई भाई हैं। एक भाई के घर में दूसरा भाई डाका क्यों डाले? एक भाई को अपना धन ले जाकर दूसरे भाई के घर में डालना चाहिए। इससे प्रेम बढ़ेगा। हम भारत माता के सपूत हैं। हमें इस माता के दूध की लाज रखनी चाहिए। सत्य अहिंसा, निर्लोभ और दया का ग्रहण करना चाहिए। सब इन उत्तम विचारों से सहमत होते हैं। मगर हर डाकू आगे की योजना बनाता है और पुलिस मुठभेड़ से डरता रहता है। सब संतुष्ट होकर लौटते हैं कि मीटिंग हो गयी है तो डाकू समस्या हल हो गयी।

साधो, जब कुछ करते नहीं बनता, कोई समस्या हल नहीं होती, जिम्मेदार लोग विवश हो जाते हैं तब आवाजें उठती हैं—मीटिंग बुलाओ! हालत खराब होती जा रही है—मीटिंग बुलाओ! तो चार साल बाद राष्ट्रीय एकता परिषद की मीटिंग दिल्ली में बुलाई गयी और वह सफल रही। सफल इसलिए रही कि जो अरस्तु ने कहा था, तुलसीदास ने कहा था, विवेकानंद ने कहा था गांधी जी ने कहा था, वह एक बार फिर कहा गया। मानव सभ्यता के आदिकाल से जो कहा जाता था, वह जनवरी, १९८४ में भी कहा गया कि सब मनुष्य भाई-भाई हैं। कहा

गया है कि इस मीटिंग म एक सकारात्मक निष्क्प यह निकला कि सदने ग्रल्पसम्प्यका स्त्रिया ग्रौर नीची जातिया पर हिंसा का निषेध किया। ग्रगर इस मीटिंग म यह ग्राम सहमति हुई तो बतायें कि पहले किन मीटिंगो म यह निष्क्प निकला था—ग्रल्पसख्यका स्त्रिया ग्रौर नीची जातिया पर हिंसा होनी चाहिए ! हर मीटिंग मे ता ग्रहिंसा पर सहमति होती है। मगर हर मीटिंग के बाद हरिजन जिंदा जलाय जात हैं, दगे होते हैं, ग्रल्पसख्यक मार जाते है बहुग्रो का तल डाल कर ग्राग लगा दी जाती है। ग्रसहमत कोई नही हाता, मगर ग्रभय भी नही करना।

साधा, ग्रागे चुनाव है। जितन खुर्राट राजनेता वहा मीटिंग म बैठे पवित्र बातें कर रहे थे वे सब चुनाव मे जातिवाद साप्रदायिक भाषावाद, क्षेत्रीयता, नफरत, हिंसा का उपयोग करके वाट बटोरेंगे। इनके राष्ट्रीय एकता पर सहमत हाने स क्या होता है ! साधो इस मीटिंग मे न बाला साहब देवरस थे न सत लागोवाल ग्रौर न सत भिंडरावाले, न ग्रसम के नेता। इनकी सहमति के बिना एकता के निष्क्प का क्या मतलब रहा ? इंदिरा जी ने इंडियननेस' पर बहुत जोर दिया भारतीयता पर। मगर देवरस जी की भारतीयता ग्रलग है ग्रौर लागावाल की ग्रलग। कौन सी भारतीयता इस देश म चलेगी ? इसके साथ 'ग्रभारतीयता' के नारे भी ता उठते है पूर्वोत्तर से ग्रौर पश्चिमोत्तर से। इनम कौन-सी चलेगी ? भारतीयता पर सहमति, क्षेत्रीयता की निंदा धम ग्रौर पथ निरपेक्ष राष्ट्रीयता, ग्रलगाववाद की ग्रस्वीकृति—इन सब पर मीठी मीठी एकता हुई मीटिंग म। मगर २७ जनवरी से शुरू हान वाले ग्रकाली धमयुद्ध' के नय दौर को रोकने की कोई गारटी नही मिली।

साधा, त्रिपुरा के मुख्यमत्री नपेन चक्रवर्ती न कहा कि साम्राज्य वादी शक्तिया बहिसाब धन खच करके पूर्वोत्तर क्षेत्र म पथक्तावादी गतिविधिया चला रही है ग्रौर इनस कुछ देशी शक्तिया भी सहयाग कर रही हैं। यह सही है। मगर उन देशी शक्तिया के नता वही मीटिंग म बैठे थे।

उनके नाम भी बताये जा सकते है। कौन-कौन देशभक्तो को इस देश को कई खडा म तोडने के लिए विदेशी पैसा मिलता है, ये सब आपस मे जानते हैं। मगर ये ठाठ से राष्ट्रीय एकता की मीटिंग मे बैठते है। किसी एक क्षेत्र म नही, सारे देश मे विदेशी धन के नाले बह रहे है और देशभक्त घडे भर रहे हैं।

साधो, इस राष्ट्रीय एकता परिषद की इस मीटिंग की सबसे बडी चिंता राष्ट्रीय एकता नहीं थी।

सबसे बडी चिंता थी कि राज्यो की गैर-कांग्रेसी सरकारें कांग्रेस और इंदिरा जी न गिराए। इन्हे पूरे पाच साल काम करने दिया जाये। वहा रामकृष्ण हेगडे भी थे, जो यही कह रहे थे कि गैर-कांग्रेसी सरकारें न गिरायी जायें। यही रामकृष्ण हेगडे और बगल मे बैठे लाल कृष्ण आडवानी १९७७ म जनता पार्टी के सचिव थे, जब छ राज्यो की कांग्रेसी सरकारें एक साथ गिरा दी गयी थी।

साधो राजनीति मे दुहरी नैतिकता लागू करते किसी को शर्म नही आती। अब एक-सी नैतिकता पर शम आती है। कर्नाटक मे कैसा मजा आ रहा है! अभी एक विधायक की पत्नी ने बयान दिया है कि मेरा अपहरण करके फिर मुझ पर दबाव डालकर मुझसे झूठी रिपोर्ट करायी गयी कि मेरे विधायक पति का अपहरण किया गया है। कल य देवी बयान दे देंगी कि यह जो बयान मैंने दिया है, वह मुझसे धमकी देकर दिला दिया गया है। तीसरे दिन फिर बयान देंगी कि पिछला बयान मेरा अपहरण करके मुझसे दिलवाया गया था। यह लोकतन्त्र है कि नौटकी ?

साधो, हम तो यह मानते हैं कि चुनी हुई कोई सरकार न गिरायी जाये। राज्य मे आपातस्थिति बन गयी हो तभी कोई सरकार गिरायी जाय। मगर नजारा बडे मजे का है। य सारी पार्टिया और गुट रोज कहते हैं—इंदिरा सरकार को हटाओ। य इंदिरा सरकार को हटाने के लिए गठबधन भी कर रहे हैं। मगर इंदिरा गाधी से कहते है—हमारी राज्य सरकार को आप मत गिराना।

बहरहाल साथो, राष्ट्रीय एकता समिति की बैठक हो गयी तो राष्ट्र की एकता की चिंता तो अब रही नहीं। अब राष्ट्र को तोड़कर भी चुनाव जीतने की तैयारी करो।

२६ जनवरी, १९८४

# मूर्तिचोरी और जुलूस

साधो, म एक साधु के साथ बात कर रहा था। साधु कह रहा था—दखो, दाल नौ रुपय किलो हो गयी। महगाई बढ़ती जा रही है। पहले लोग सतोष से कह देते थे—भैया, हम बहुत नहीं चाहिए। हम तो रोटी दाल म जिंदगी चला लेंगे। मगर अब कोई यह भी नहीं कह सकता। रोटी-दाल कम-स-कम है जो आदमी चाहता है। मगर नौ-दस रुपय किलो दाल हो तो रोटी-दाल से भी नहीं काट सकता। लोग रोटी-प्याज के एक गट्टे के साथ खा लेते है। पर प्याज का भी भाव देखो। नमक रोटी स काटना पड़ेगा। मगर आगे चलकर रोटी भी मयस्सर नहीं हुई तो नमक से ता कटेगी नहीं।

साधो, तभी सुबह के अखबार म मदसौर का समाचार पढा और हम रोटी, दाल प्याज नमक सब भूल गये। समाचार यह है—'शहर मे गायित्री की मूर्ति का सिर काटकर कोई ले गया था। शहर म तनाव। बाजार बद। कोतवाली पर लोगो ने हमला कर दिया। छात्रो ने जुलूस निकाल दिया। लोग बेहद उत्तेजित है।

साधो जब भी हम जिंदगी की किसी गभीर समस्या पर ध्यान देते है सोचते है, तभी एसा कुछ हो जाता है और हम उस घटना मे उलझ जाते हैं। मुझे याद है एक दिन एक साधु से बात हो रही थी। वह कह रहा था—छात्र, युवको के बार-बार उपद्रव करने के ठोस कारण है। सबसे बडा कारण बेकारी है। नौकरी पक्की हो तो ये सब मन लगाकर पढ़ेंगे। फिर व्यवस्था के सपूर्ण भ्रष्ट जीवन मूल्यो से

इन्होंने भी मूल्य खोये हैं। एक कारण है—राजनीतिक दल धर्माधिकारी इमाम तथा गुरु बनाते हैं, उनकी रक्षा करते हैं और उनसे अपनी राजनीति करवाते हैं।

साधो हम बड़ी गंभीरता से इस समस्या पर विचार कर रहे थे, तभी मेरी अखबार पर नजर पड़ी। समाचार यह था कि महाराष्ट्र में कुंभोज में बाहुबली की मूर्ति पर किन्हीं ने पत्थर फेंके। बाहुबली जैनों के परम पूज्य प्राचीन पुरुष हैं—इस परमवीर ने भाई की खातिर राज्य पर अधिकार त्याग दिया था और संन्यास ले लिया था। मगर इस घटना के बाद श्वेताम्बर और दिगम्बर जैन पंथों में उस स्थान पर अधिकार के लिए विवाद मच गया। मार-पीट नहीं हुई। जैन ज्यादातर व्यापारी हैं। हिंसा पर नहीं उतरते। जैन धर्म का आविर्भाव ही उस युग में हुआ था, जब व्यावसायिक पूँजीवाद का विकास हो रहा था। व्यवसाय की सफलता के लिए शांति, अहिंसा, त्याग, क्षमा आदि सहायक होते हैं। ये गुण व्यापारी में नहीं, ग्राहक में होना चाहिए—शांति, अहिंसा, त्याग, क्षमा वगैरह। जहाँ तक व्यापारी का सवाल है, सूत न निकले और आदमी मर जाय, तो वह अहिंसा है। तो जैन मुनि ने अधिकार के लिए अनशन किया। कई शहरों में बाजार बन्द रहे। फिर उसी जगह मराठों ने शिवाजी की प्रतिमा स्थापित करने की जिद की और दलितों ने डॉक्टर अम्बेडकर की। चौमुखी झगड़ा। फिर खबर आयी कि यह पूरा स्थान सरकारी है और अतिक्रमण किया गया है। इसके बाद धर्म में महाराष्ट्र की राजनीति घुस गयी।

साधो, अवतारों, भगवानों, पैगंबरों, संतों ने मनुष्यों को विराट बनने की शिक्षा दी, पर वह उसी गुरु के नाम क्षुद्र हुआ। संतों ने मनुष्यों को सागर बनाना चाहा, मगर अनुयायी छोटे से गड्ढे डबरे हो गये। दिगंबर और श्वेतांबर में मुक्ति के मार्ग को लेकर विवाद है। पर मुक्ति किसे चाहिए? *मुनाफा चाहिए। मगर कर्मकाण्ड निभाये* जायेंगे, और झगड़ा होगा। बौद्धों का तो इसी पतन और संघर्ष में खात्मा हो गया। साधो, ऐसा क्या होता है? इसका कारण है, आर्थिक और राजनीतिक। जब तक अनेक के शोषण से एक सुखी होना चाहेगा

तब तक धम वा मही हागा। आर्थिक और राजनीतिक सत्ता का सवाल ह। तभी पेम, दया की शिक्षा दने वाले नानकदेव के मदिर से घणा और हिंसा फैलती है। कारण—एक उच्च वग का दल जो बहुत अल्प मत मे है और चुनाव जीतकर कभी सरकार नही वना सकता, वह आतक, हिंसा, धमकी से कब्जा करना चाहता है। इसके लिए नारा धम और पथ का दिया जाता है जिसस लोग उमाद मे आकर उनका साथ द।

साधो होता ऐसा ही है। जब कभी देश की, हमारे जीवन की, इस देश की गरीबो की दशा पर हम गभीरता से सोचते है और कुछ करना चाहत है तभी मूर्ति का सिर उड जाता है मदिर म चोरी हो जाती है, मदिर म गाय का मास फेंक दिया जाता है, मस्जिद म सूअर का मारकर टाल दिया जाता है। यानि इस दश म ऐसी राज नीतिक आर्थिक ताकतें है जो हमे ऐसे गभीर सकल्प म रोकना चाहती ह, जिसस यथास्थिति टूटे, सामाजिक परिवतन की कोशिश हो। हम हाथो से निपटना चाहते है, तो य हमारे कुरते म चूहा डाल देते ह। बुनियादी समस्या स हम निपटने नही देते—हम गाय, चर्बी, सूअर, मूर्ति वगैरह म उलझाये रहत ह। वडे-वडे बुद्धिमान इनम उलझ जात है।

साधो, मदसौर की यह घटना सहज भी हो सकती है और जटिल भी। सहज यो कि देश भर म प्राचीन मूर्तियो की चोरी होती है। वे यूरोप और अमरिका म ले जाकर बेची जाती ह। तस्करी, यह नियमित धधा है। इसम धम कही नही है। मूर्ति का सिर चोरी गया था, तो पुलिस म रिपोट करना था। मगर साधो, बात को उलझाने वाले शायद सक्रिय ह। बाजार बद और जुलूस का क्या मकसद है? क्या लोग सोचते हैं कि इससे मूर्ति चोरो का दिल बदल जायेगा? जिस पुलिस को चोरो का पता लगाकर मूर्ति का सिर बरामद कराने के लिए कहना था, उस पर पत्थर क्या वरसाये?

साधो, लगता है चुनाव की तैयारी म ऐसे मामले चोरी के न रहकर साम्प्रदायिक राजनीति के हो जायेंगे। मदसौर क्षेत्र म साम्प्रदायिकता प्रवल है। मगर एक साम्प्रदायिक दल का लाभ दिखा, तो

यह यह प्रचार करके कि अमुक धर्म के लोगों ने मूर्ति खंडित कर दी, दंगा करवा सकते हैं। गुंडे और लुटेरे इसमें पूरा सहयोग देंगे। एक चोरी की घटना भयंकर साम्प्रदायिक और राजनीतिक रूप ले सकती है। हम इतने असहनशील और अविवेकी हो चुके हैं यह पंजाब की घटनाएं बताती हैं। तरुण छात्र, जिनसे हम क्रांति की उम्मीद करते हैं, मूर्ति के सिर की चोरी के लिए जुलूस निकालते हैं जिसमें धर्म और अंधविश्वास दिमाग में ऊपर होगा। गर्मी की राजनीति फेल होने पर अब शायद मूर्ति चोरी की राजनीति साम्प्रदायिक दल चलायें।

१४ जनवरी, १९८४

## अकरम खा का
## जवाब क्यो नही ?

साधो अब जब जरनल अकरम खा के जहरीले लेखो की चर्चा खत्म हो गयी है, तब मै उस बात को उठा रहा हू तो तुम पूछोगे कि आखिर ऐसा क्यो कर रहे हो ? मै दो कारणा से बात उठा रहा हू । पहला तो यह जरनल जिया उल हक ने अब अमरिका से सिफ हथियार नही, सुरक्षा की गारटी माग ली ह । दूसरा कारण यह कि मै अब तक देख रहा था कि भारत मे जिन लोगो को उन लेखो पर तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट करनी चाहिए, वे कर रहे ह या नही । नही कर रह ह तो क्या नही कर रह है ? तीसरा कारण यह है कि वे लेख आगामी चुनावो को प्रभावित करने के लिए लिख गये ह । म उनम से नही हू जो पाकिस्तान से हमेशा दुश्मनी चाहते है । इस तरह दुश्मनी का सबस ज्यादा समर्थक पूव जनसघ रहा है । म दाना दशा के अच्छे सबध चाहता हू । म तो यहा तक कहता हू कि अगर भारत सरकार पाकिस्तान पर हमला करे तो हम साधुआ को इसका भी विरोध करना चाहिए । हमारा ही देश क्यो न हो—किसी पर हमला क्या करें ?

साधो, अकरम खा के लेखो मे विशेष ध्यान लायक यह है—एक तो उसने पिछले हजार सालो का इतिहास बताया है, जो यो है कि हमने हजार साल तक हिंदुओ पर हुकूमत की है, इन्ह दबाया है । इसलिए अग्रेजो को पूरा महाद्वीप हम सौप जाना था । दूसरी बात यह कही है कि भारत एक नही है और इसके बारह चौदह टुकडे हो जाना था ।

इससे कोई टुकडा, जो एक राष्ट्र होता, महाशक्ति नहीं बन सकता था। तीसरी बात यह नहीं है कि इन्दिरा सरकार महाशक्ति बन रही है इंदिरा गाधी नेपोलियन बनना चाहती हैं और उससे इस क्षेत्र के छोटे देशों को खतरा पैदा हो गया है। चौथी और सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह यही है कि भारत में ऐसी सरकार होनी चाहिए जो महाशक्ति न बनना चाहे और जिसकी नीतियां दूसरी हों। तब पड़ोसियों से संबंध अच्छे होंगे।

साधो, अकरम खां की बात पाकिस्तानी सरकार की बात है। मुझे आशा थी कि जब अकरम खां ने पिछले हजार सालों के इतिहास की यह व्याख्या की है और हिंदुओं के खिलाफ ओछी बातें कही हैं तो हिंदू जाति और धर्म के रक्षक बनने वाले जवाब देंगे। मगर न विश्व हिंदू परिषद वाले बोले न बाला साहब देवरस बोले न अटलबिहारी वाजपेयी बोले। असेतु हिमालय अखंड भारत माता के ये सच्चे वीर सपूत क्यों नहीं बोले? इसलिए नहीं बोले कि जो इतिहास अकरम खां बता रहे हैं वही इतिहास हिंदू साम्प्रदायिक नेता बताते हैं। दोनों एक ही इतिहास मानते हैं। हिंदू साम्प्रदायिक नेता भी यही प्रचार करते आ रहे हैं कि इन मुसलमानों ने हमले किये, हिंदुओं पर राज किया, हिंदुओं पर अत्याचार किये, हिंदू नारियों की बेइज्जती की, वगैरह। दोनों एक ही इतिहास मानते हैं और दोनों झूठ बोलते हैं, गलत बताते हैं। दोनों को वास्तविक इतिहास का कोई ज्ञान नहीं है। जो पाकिस्तान को हर बात पर रोज गाली देते थे वे अब चुप क्यों रहते हैं? हिंदू धर्म और जाति की एकता और रक्षा के शूरवीर जो कल गंगाजल बेच रहे थे और चर्बी का हल्ला कर रहे थे, जनरल अकरम खां का जवाब क्यों नहीं देते?

साधो, वे जवाब इसलिए नहीं दे रहे हैं कि अकरम खां उनकी मदद कर रहे हैं। चुनावों में अकरम खां की बात बड़े काम की है। वास्तव में अकरम खां उस योजना में एक आदमी हैं जिसके अंतर्गत भारत के भीतरी मामलों में हस्तक्षेप करके अपनी पसंद की सरकार बनवायी जाय। इस योजना में वे भी शामिल हैं जो नहीं बोल रहे

को 'इडियन डाग्ज ' कह दिया था, तो जवाब में हमारे माहम्मद करीम छागला ने कहा था--भुट्टो अपने बाप दादा को गाली दे रहा है। बाप दादो का कुत्ता कह रहा है।

साधो, अमेरिका और उसका गुट वतमान सरकार को पसद नही करते। कारण सब जानते है--यह सरकार गुट निरपक्ष सगठन को बढा रही है साम्राज्यवाद विरोधी है, रगभेद और नस्लवाद विरोधी है, अफ्रीका और लेटिन अमेरिका के देशो की स्वाधीनता की समथक है और सबसे बडा पाप यह कि इसने सावियत रूस से बहुत अच्छे सबध बना रखे है। राष्ट्र सघ म अमेरिका का अभी पूरा निशस्त्रीकरण के प्रस्ताव पर कुल पद्रह वाट मिले थे। शाति के इस प्रस्ताव के पक्ष म १२४ वाट पड थ। ता अपनी भू राजनीतिक व्यूह रचना म भारत की वतमान सरकार या एमी सरकार बडा अडगा है। दूसरी सरकार चाहिए और चुनाव का साल भर बचा है।

साधा, कैसी सरकार चाहिए फिर ? कम्यूनिस्ट सरकार तो कतई नही चाहिए और एसी सरकार बनने की कोइ सभावना नहीं है। उन्हे चाहिए घोर दक्षिणपथी सरकार जा रूस विराधी हा गुट निरपक्षता से जिसे मतलब न हा और जो अमेरिका समथक हा। जनरल अकरम ता ऐसी ही शरीफ, भोली सी प्यारी-सी सरकार भारत मे चाहते है, जा इस सरकार की तरह महाशक्ति न बनना चाहती हो। एसी सरकार स पाकिस्तान की दास्ती हो जायेगी। अमेरिका भी एसी सरकार को गले लगाकर चूम लेगा।

साधा, एसी सरकार कान बनाएगे ? यही अटलबिहारी वाजपेयी, चरणसिह, सुब्रह्मण्यम स्वामी, चद्रशखर ? और अटलबिहारी और चरणसिह कुछ भी कहते हो, चुनाव आते आते य समझौता कर लेगे। ,इनकी प्यारी-प्यारी, मासूम सरकार बननी चाहिए, इस बदमाश सरकार की जगह। देश के भीतर ये सब नेता रोज इदिरा सरकार पर हमला करते है। यहा तक कहते है कि पाकिस्तान से

खतर का झूठा हौआ खड़ा कर रहा है। इस पाकिस्तानी शासक पसन्द करते हैं। रानाल्ड रीगन भी पसंद करते हैं। उधर पाकिस्तान के शासक भी इंदिरा सरकार पर हमला करते हैं।

साधो इसका मतलब है कि इन दक्षिणपंथी दलों के चुनाव मैनेजर पाकिस्तान और अमेरिका में हैं। वे बहुत सक्रिय हैं। अकरम खां इनके चुनाव एजेंट हैं। अब तुम्हीं बताओ अकरम खां की बात अटलबिहारी क्या कैसे काटें। ये एक-दूसरे के दोस्त और एजेंट हैं।

१२ फरवरी, १९८४

# किस विधि नारि रचेऊ जग माहीं

साधो, जिस बात के लिए देश की चिंता होनी जरूरी है, उस बात को दिल्ली में होना चाहिए। बहुएं सारे देश में दहेज कम लाने के कारण जलायी जाती है और यह घरू धंधे का मामला मान लिया जाता है। मगर बहुएं दिल्ली में जलायी जायें और गरीब नहीं मध्यम या उच्च वर्ग की जलायी जायें, तो शोर होता है कि महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं।

बलात्कार निम्न वर्ग, विशेषकर हरिजन स्त्रियों के साथ देश भर में होते हैं। यह शर्म की बात है कि निम्नतम वर्ग में इसका विरोध तक नहीं होता। वे इसे अपना भाग्य मानकर बैठे हैं। यदि कोई स्त्री पुलिस थाने में रिपोर्ट करने जाये कि उस पर बलात्कार हुआ तो भारतीय पुलिस बड़ी मुस्तैदी से अपना कार्य करती है। पुलिस वाले खुद उस स्त्री पर प्रयोग करके पक्का कर लेते हैं कि जो हुआ, वह ऐसा ही हुआ, जैसा हमने किया। किसी एकाध मामले का हल्ला होता है, सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्त्ता दिलचस्पी लेते हैं, तब कार्यवाही होती है। मगर दिल्ली में जब बलात्कार होते हैं तब वह राष्ट्रीय समस्या होती है। जुलूस निकलते हैं, संसद पर प्रदर्शन होते हैं, संसद के भीतर सदस्य मामले को उठाते हैं।

साधो, पिछले दिनों स्त्रियों पर अत्याचार के विरोध में महिलाओं ने प्रदर्शन किये, विशेषकर बलात्कार के विरोध में। सचमुच बलात्कार से जघन्य अपराध कोई और नहीं है। इसमें दूसरे पक्ष का प्रतिरोध

करने के लिए प्रकृति ने कुछ नहीं दिया। वह न केवल शरीर पर आघात है बल्कि मानस और भावना पर भी। यह स्त्री के पूरे व्यक्तित्व को तोड़ता है। बलात्कार को 'पाशविक' कहा जाता है पर यह पशु की तौहीन है। पशु बलात्कार नहीं करते मगर आदमी करता है। और साधो, इस अपराध को स्त्री के परिवारजन खुद छिपा लेते हैं, क्योंकि बदनामी का डर है। बलात्कारी इससे बेखटके हो जाते हैं। कोई मुकदमा चलता भी है, तो अपराध सिद्ध करना कठिन होता है। स्त्री को सिद्ध करना होता है कि उसने विरोध किया, विरोध के प्रमाण देने होते हैं यानी बलात्कारी को नोचा हो काटा हो तो उसके निशान। मगर बलात्कारी पिस्तौल या छुरा अड़ा दे तो स्त्री समर्पण कर देती है। कानून 'समर्पण' को रजामंदी मान लेता है और बलात्कारी निर्दोष छूट जाता है।

साधो बलात्कारी एक मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार आदमी होता है। या ऐसा होता है जिसने संस्कारों से अपने यौन आवेग को नियंत्रित करना नहीं सीखा। बलात्कार तब ज्यादा होते हैं जब सजा का भय नहीं होता।

साधो, तुम कहोगे—गुरु आज तो तुम अपराध शास्त्र बघार रहे हो। देखो हम बहुत पाखंडी लोग हैं। हम अपने को प्राचीनतम और महान संस्कृति वाले कहते हैं आदर्शवादी समझते हैं, नैतिक मानते हैं मगर हमसे ज्यादा क्रूर और नीच जाति दुनिया में कोई नहीं। अफ्रीका के जंगली कबीलों में भी नारी पर उतने अत्याचार नहीं होते, जितने हम करते हैं और कहते हैं कि नारी पवित्र है पूज्या है माता है जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता रमते हैं।

साधो पिछले दिनों रायपुर के पास ५८ साल की एक वृद्धा पति की चिता पर सती हो गयी या करा दी गयी। सती प्रथा के मूल में क्या विश्वास है? यह कि पुरुष के मरने पर स्त्री का जीवन खत्म हो गया। उसे मर जाना चाहिए। यानी स्त्री का अलग से कोई शरीर या मन नहीं है। आदमी के मरने पर उसके कुरते को या जूते को उसके साथ नहीं जलाते पर स्त्री को जला देते हैं। धन्य है यह महान

संस्कृति। दुनिया मे सती प्रथा कही नही रही। इजिप्त म अलबत्ता राजा के मरने पर उसके साथ रानी और नौकर भी गाड दिय जाते थे। पर यह सिर्फ राजा के लिए होता था।

साधो, हमारे यहा विधवा को धतूरा या भाग पिलाकर नशे मे करके जबरदस्ती चिता पर डाल देते रहे है। हजारो स्त्री, पुरुष बच्चे इस दृश्य को मजे मे देखते हैं। सती मैया की जय बोली जाती है। स्त्रिया, खास कर बदचलन औरतें चिता म नारियल चढाती है, राख कपाल पर लगाती हैं, क्योकि—चली कुलबोरन गगा नहाय के। फिर प्रचार होता है सती के ताला से ज्वाला निकली सती के बैठते ही चिता मे अपने आप आग लग गयी। हम जनरल जिया को थूकते हैं जो इस्लामी कानून के नाम से लोगो को सरेआम कोडे लगवाता है और लोग देखते हैं। मगर हम हिंदू धम के नाम पर अपनी बहन बेटी और बहू को पताब्दियो से जिंदा जलाकर उत्सव मनाते रहे है।

साधो, पिछले साल बादा जिले म १६ साल की लडकी का जिसकी हाल ही मे माग भरी थी, एसे ही जला डाला था। अखबारो ने, सामाजिक कायकर्ताओ न बहुत पुकार की कि यह हत्या है, परिवार वालो पर मुकदमा चलाया जाये। पर कुछ नही हुआ। धम की जय का मामला है। सती काड के बारे मे कहा जाता है कि बेटे-बहुओ ने पीछे से पकडकर उस पति के साथ जला दिया।

साधो कानून है। जबरदस्ती या उकसाकर या प्रोत्साहित करके स्त्री को सती कराना जुम है। इसके लिए सजा का प्रावधान है। पर सजा दिलाय कौन? पुलिस जाच करे और जुम कायम करे तभी तो सजा होगी। अब पुलिस का हाल देखो। पुलिस वाले उवन सतीकाड वाले गाव म तहकीकात करने पहुचे, तो पहले सती की चिता के पास जाकर माथा टेका और राख कपाल पर लगायी। उन्होने सिपाहिन, हवलदारिन थानेदारिन और एस० पी० की साहबन को भी चिता में नारियल डालने भेजा होगा। जिससे ये पुलिस पत्निया पतिव्रता रह। पराये मर्द की तरफ आख न उठायें। ये हमारे पुलिस वाले क्या

रोकेगे अपराध ? इडियन पनल कोड ता सती मैया के साथ खाक हो गया ।

१४ फरवरी १९८४

## रेलें क्यों टकराती हैं ?

साधो, रेल दुर्घटनाएं काफी हो चुकीं और हर एक में मरने वालों की संख्या एक दो नहीं, चालीस पचास रही। दुर्घटनाओं में जब लोग मरते हैं तब एक बनी-बनायी प्रक्रिया चलती है—राष्ट्रपति से लेकर मंत्री तक का शोक संदेश, मरने और घायल होने के इनाम की घोषणा और जांच की मशीनरी। कभी ऐसा हुआ था कि रेल-दुर्घटना में छब्बीस आदमी मरने पर तत्कालीन रेलमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने इस्तीफा दे दिया। तब लोग जानते और कहते थे कि पंडित नेहरू शास्त्री जी को एक दो महीने में मंत्रिमंडल में ले लेंगे। ऐसा हुआ भी। ऐसा होगा, इसी विश्वास के कारण शास्त्री जी ने इस्तीफा दिया था। साधो, अब अब्दुल गनी खां चौधरी रेलमंत्री हैं। वे इस्तीफा नहीं दे रहे हैं क्योंकि उन्हें भरोसा नहीं है कि वे फिर मंत्रिमंडल में ले लिये जायेंगे। अब ऐसी प्रधानमंत्री हैं जो कह दें—गुड रिलीव्ड। चलो, पिंड छूटा। ऐसे में कोई मंत्री ऊंचा नैतिक स्तर बताने का खतरा मोल नहीं लेगा।

साधो, गनी खां चौड़े मुंह वाले मंत्री हैं। बहुत बोलते हैं और हर कुछ बोलते हैं। पहले घोषणा करते रहते थे कि ज्योति बसु की सरकार को बंगाल की खाड़ी में फेंक दूंगा। मगर यह नहीं कर सके। उनकी अपनी रेलवे गाड़ियां पटरी से उतरने लगीं। साधो, मद्रास में पिछले साल जब घोर जल संकट था, तब गनी खां चौधरी पानी की टंकियों की रेलगाड़ी लेकर खुद मद्रास पानी देने पहुंचे थे।

मुख्यमंत्री रामचंद्रन ने कहा कि हम यह पानी नही लेंगे। यह अशुद्ध होगा। तब नाटक हुआ—गनी खा पानी की टंकिया लिए स्टेशन पर है और मद्रास वाटर वर्क्स ले नही रहा है। पानी खराब हो रहा है। उधर टेलीविजन वाला का दन इतजार कर रहा है कि रेलमंत्री पानी सौंपे तो हम फिल्म करें। आखिर काई रास्ता निकाला गया। वाटर वक्स के अधिकारी ने पानी स्वीकारा। तमिलनाडु वा कोई मंत्री नही आया। मगर टेलीविजन पर यह मानवीय उदारता का दृश्य दिखाया गया। एसे सवेदनशील रेलमंत्री का चिंतित होने को जरूरत नहीं है। य रेल दुघटनाए जनता का ज्ञान वाध वढाती हैं। जैसे य सिखाती हैं कि बीमा हर बच्चे का भी होना चाहिए। बच्चा चाहे तीसरी कक्षा म हो क्या न पढता हो, उसे वसीयत लिखकर रेलगाडी मे बैठना चाहिए कि मेरी किताबें और स्लेट मेरे मरन के वाद किसे मिले। इन दुघटनाओ से ईश्वर क प्रति विश्वास बढता है। आध्यात्मिक भावना जागती है। मनुष्य देह के नाशवान और तुच्छ होन का बाध हाता है। आदमी परमार्थी हाता है। हम समझ म आता है—हानि-लाभ जीवन-मरण, जस अपजस विधि हाथ।' सारी ज्ञान विज्ञान की सावधानी के वाद भी भगवान को जिसे उठाना हाता है उसे रेलगाडी से उठा लेता है। जिन यात्रियो का वटा नहीं है उन्ह अपना श्राद्ध और पिंडदान खुद करके रेलगाडी म बैठना चाहिए।

मगर साधो जब काई बात ज्यादा हा जाती है ता चर्चा का विषय बनती है। तब पत्रकार ऊच अधिकारियो से मिलते हैं और पूछते हैं। यह एक जरूरी कमकाड है। तो पत्रकारो न गनी खा चौधरी का घेरा कि एमी भयानक दुघटना क्या हो रही हैं? ऐसे सवाल पहले भी होत रह हैं। और सबसे अच्छा जवाब मुझे किसी समय रेलवे बोर्ड के चेयरमन सरदार नरेंद्र सिंह का लगा। उन्होने कपाल ठोककर कहा—मेरी किस्मत ही खराब है। इस बात का कोई प्रश्न उठ ही नही सकता। जब चेयरमन की किस्मत ही खराब है ता

किसी तरह की जाच की जरूरत ही नही है। किस्मत का मामला है और किस्मत तो भगवान लिखकर फिर—चेयरमैन या मंत्री पैदा करता है। अब इसमे गार्ड या ड्राइवर या स्टेशनमास्टर क्या करें ?

साधो, गनी खा चौधरी के लिए एक और जवाब पहले से तैयार था, पर वह उन्होने नही दिया। रीति यह थी कि वे तुरत दुनिया के दो चार देशों के आकडे दे देते। कहते—अमेरिका मे इतने किलोमीटर रेलवे लाइनें है और एक्सीडेंट औसतन साल म इतने होते हैं। फास म ये आकडे ह ब्रिटेन मे ये हैं। भारत मे दुनिया मे सबसे बडा जाल रेलवे लाइनो का है पर दुघटनाए दूसर देशो की तुलना म एक तिहाई होती हैं। अब अगर इतनी भी न हो इस देश का भविष्य *कितना अधकारमय हो जायेगा ?* मुझे याद है, *जनता पार्टी सरकार* के जमाने म ससद म सदस्यो ने बहुत हल्ला मचाया कि दिल्ली मे बहुत हत्याए हो रही है। जवाब म प्रधानमत्री ने आकडे दे दिये—वाशिगटन म रोज इतनी हत्याए होती है, लदन म इतनी, पेरिस म इतनी, बान म इतनी और दिल्ली म सिफ इतनी! कितनी कम हत्याए होती हैं हमारी राजधानी म। हमे शम आना चाहिए कि हम इतने पिछडे हुए है। हम हत्याओ की सख्या बढानी चाहिए। मगर हमार जन-प्रतिनिधि उलटे शिकायत करते हैं कि इतनी हत्याए भी क्यो होती हैं ? राष्ट्र गौरव का भी ध्यान नही है!

साधो, दो कारण दिये जाते ह—एक है मैकेनिकल फाल्ट और दूसरा है ह्यूमन फाल्ट। मशीन की गलती या कमचारी की गलती। मशीन की गलती पर कोई वश नही। कम्प्यूटर की गलती से परमाणु युद्ध हो सकता है तो यह तो मामूली, रेल-दुघटना है। दूसरी कमचारी की गलती। दिल्ली के पास जो बडी दुघटना हुई, उसका कारण कमचारियो की गलती बतायी जाती है। स्टेशन पर एक रेलगाडी खडी थी। दूसरी रेलगाडी उसी लाइन पर आ गयी। दो सिगनल 'अप' थे, मगर ड्राइवर न गाडी नही रोकी। उधर लाइन भी ऐसी नहा जोडी गयी कि यह गाडी अपने आप, दूसरी लाइन पर चली जाती। नतीजा यह कि इस चलती गाडी न खडी

हुई गाडी को टक्कर मारी और वही पचास आदमी मर गये।

साधो, लोग आमतौर पर आरोप लगाते है कि ड्राइवर शराब पीकर गाडी चलाते है। मैं कहता हू—शराब के नशे मे तो भगवान भी दिख जाता है, फिर सिगनल और रेलगाडी क्या नही दिखती? नियम है कि ड्राइवर और गार्ड की रेलगाडी का चार्ज लेने के पहले जाच की जाती है कि वे शराब तो नही पिये हैं। पर दूसरे नियमो की तरह इसका भी पालन नही होता। फिर मान लो, यहा ड्राइवर नही पिये है मगर रास्ते मे किसी भी स्टेशन पर उसे शराब मिल सकती है।

साधो, कुल मामला हमारी ऊची नैतिकता का है—जो जहा है, वही काम नही करता और काला पैसा कमाता है। दुर्घटना मानवी गलती से नही, हमारी देशव्यापी मानवी नैतिकता से होती है।

२८ मार्च, १९८४

## फिर वही लाउड स्पीकर

साधो, यह बात शायद सौवी बार लिख रहा हू और आगे हजार बार लिखना पडे। किसी बुराई को खत्म करने के लिए शताब्दी भर लिखना और कहना पडता है। बात वही हर साल इस मौसम की है, जब छात्र परीक्षा की तैयारी करते है। रोज अखबारो मे छात्रो की अपीलें पढता हू कि देर रात तक लाउड स्पीकरो का शोर बद किया जाये। ये छात्र बडी दीनता से नागरिको से अपील करते हैं कि हम आपके बेटा-बेटी है। हमे पढने दो। य प्रशासन से भी अपील करते है कि देर रात तक होने वाला यह शोर बद करवायें। इसके लिए शासन के पास कानून है। कानून हमारी रक्षा करे।

साधो, ये जो अपील करते है पढने वाले छात्र है। वास्तविक छात्र। ये छात्र-नेता नही है। छात्र-नेता वह होता है जो पढता नही। पढने लगे तो छात्र-नेता नहीं रहगा। अधेड उम्र के भी छात्र-नेता है जो कभी पढे ही नहो। शोर से इन्हे शिकायत होती तो ये पाच दस जगह जाकर लाउड स्पीकर तोड आते और अपने रक्षक राजनेता की शरण म चले जाते जिससे पुलिस जुर्म कायम न करे। जो अपीलें कर रहे हैं उन पचानबे फीसदी भले छात्रो के प्रतिनिधि है जिन्हे परीक्षा पास करके रोजी-रोटी की तलाश करना है। ये तोड-फोड कर नही सकते, इसलिए अपीलें करते हैं।

साधो, मगर वे 'चक्का जाम' और 'शहर बद' कराने वाले वीर छात्र नेता अपने साथी छात्रो की विपदा क्यो नहीं हरते? ये तो घटो

सड़क बंद रखते हैं, ट्रकों को हिलने नहीं देते, बाजार बन्द करवाते हैं, मारपीट करते हैं, आतंक पैदा करते हैं। ये क्रांतिकारी परमवीर चक्र और महावीर चक्र पाने के लायक हैं। शराब विक्रेता मुफ्त बोतल न दें और होटल वाला मुफ्त मुर्गा खिलाने में आना-कानी करे तो ये नेता 'छात्र वर्ग पर अत्याचार' के नारे के साथ महान् सशस्त्र क्रांति करने लगते हैं। ये लाउड स्पीकर की इस छात्र वाली समस्या पर कुछ क्या नहीं करते?

साधो, बात यह है कि लाउड स्पीकर बंद करवाना कोई मुनाफे का काम नहीं है। इसमें क्या मिलेगा! चक्का जाम में ट्रक वालों से और बाजार बंद में दुकानदारों से अच्छी वसूली होती है। ये मुनाफे की क्रांतियां हैं।

साधो, जो जाति कोलाहल पसंद करती है, वह असंस्कृत जाति होती है। हम अपनी महान संस्कृति का गर्व तो करते हैं पर आचरण में वह संस्कृति गायब है। सुसंस्कृत आदमी का एक लक्षण यह है कि वह दूसरे की तकलीफ का ध्यान रखता है। वह अपने कारण दूसरे को कष्ट नहीं देता। जो यह भी खयाल नहीं रखते कि रात को हमारे लाउड स्पीकर से सारे मुहल्ले के लोग परेशान हैं, मरीज सो नहीं सकता, छात्र पढ़ नहीं सकते, वे लोग संस्कृतिविहीन पशु के स्तर पर जिंदगी जीते हैं।

साधो, पहले 'लोकमत' होता था। मुहल्ले के बूढ़े-सयाने कह देते थे—देखो, यह तुम गलत कर रहे हो। इससे लोगों को तकलीफ है। मगर अब वह लोकमत का अनुशासन भी नहीं बचा। अब कोई कहे कि भैया दस बजे के बाद लाउड स्पीकर बंद कर देना, तो उसे जवाब मिलेगा—यह हमारा निजी मामला है। आप दखल देने वाले कौन हैं? मुहल्ले के लोग हमारे मंगल कार्य में बाधा डालते हैं। साधो, इस फूहड़पन को रोकने की कोई ताकत समाज में नहीं बची। इसका एक कारण यह है कि दूसरे के मामले में जो नागरिक विवेक की बात करते हैं, वे अपने घर में कोई उत्सव होने पर खुद विवेकहीन

हो जाते ह और रात भर फूहड, अशिष्ट कोलाहल करवाते हैं। वैज्ञानिक पर्यावरण का अध्ययन कर रहे हैं। प्रदूषण पर अन्तर्राष्ट्रीय मीटिंगें होती हैं जिसम वैज्ञानिको को कहना है कि वातावरण मे कोलाहल का प्रदूषण मनुष्य के शरीर और मन पर बहुत बुरा असर डालता है। पर हमारे लिए वैज्ञानिको का क्या महत्त्व? हम तो विज्ञान विरोधी ह। विज्ञान और आधुनिकता के विरोध को हम अपनी संस्कृति और गौरवशाली परपरा माने बैठे हैं।

साधो ऐसा नही है कि निचले वग के लोग यह कोलाहल करते है। या दो नबरी पैसे वाले गवार ही ऐसा करते हैं। नही पढ़े-लिखे लोग डाक्टर, वकील, प्रोफेसर भी यह करते हैं। किस किस को रोआगे! सात सात दिन तक चौबीसो घटे लाउड स्पीकर पर गायत्री मत्र का पाठ होता है। जो गायत्री यज्ञ कर रहे ह वे इतनी आवाज करे कि वहा एकत्र लोगो को सुनायी पडे। उन्हे यह अधिकार नही है कि आस-पास दो-दो किलोमीटर मे बसे लोगो के कान सात दिन तक लगातार फाडे। मगर कोई इनसे कहे तो उस पर लोग टूट पडेग कि यह 'धम विरोधी है, पापी है।' सात दिन मे लोग पागल नही होते, जबकि उन्हे हो जाना चाहिए। मगर उनके शरीर और बुद्धि का बहुत क्षय होता है। इसी तरह शादी के लाउड स्पीकर को कोई कम करने को कहे तो उस पर लोग टूट पडेंगे कि इसे हमारा मगल काय अच्छा नहीं लगता। यह शुभ काम म बाधा डालता है।

साधो जहा तक प्रशासन का सवाल है कानून है इसे रोकने के लिए। मगर यह 'काग्निजबल आफेंस' नही है, तो पुलिस वाले बिना रिपोट के कुछ नही कर सकते। फिर पुलिस वालो के और प्रशासनिक अधिकारियो के भी तो वही सस्कार है। कोई गारटी नही है कि अफसर के घर की शादी म सारी रात लाउड स्पीकर न बजे। दूसरी बात यह है कि शासन एक और नयी झझट मे पडना नही चाहता। धार्मिक कीतन म अगर शासन रोके तो यह धम म हस्तक्षेप मान लिया जायेगा। और पाखडी भक्त मुख्यमत्री तक पहुच जायेंगे। दस नहा

रहे हो, स्वर्ण मदिर के सामने खडी पुलिस स्वर्ण मदिर के भीतर म से चलने वाली धम की राइफल की गोलिया से भर रही है।

साधो, दो-तीन रास्ते हैं। एक तो यह है कि समझदार लोग इसके विरुद्ध जनमत बनायें। दूसरा वह है कि अगर कुछ लोग गवाही देने की हिम्मत करें तो शासन चार-पाच लोगो को सजा कराके अखबारो म इसका प्रचार कर दे। सजा क्या, जुर्माना होगा। मगर अखबारो म जब छपेगा कि अमुक महाशय को देर तक लाउड स्पीकर बजाने के कारण अदालत से सजा हुई, तो दूसरे लोग सावधान होंगे और अति नही करेंगे। अभी यह हाल है कि जिला मजिस्ट्रेट का हुक्म तो हो जाता है कि इतने बजे के बाद लाउड स्पीकर न बजाये जायें। मगर इस पर अमल बिलकुल नही होता। तीसरा रास्ता यह है कि कुछ खतरा उठाकर छात्र-समूह म जाकर चार पाच जगह चोगा और मशीन नष्ट कर आयें। तो लोग डरेंगे। वरना करो अपील, अनुनय विनय करो। मानसिकता पत्थर की हो गयी है। कोई नही सोचेगा और न मानेगा।

२६ फरवरी, १६८४

## तो फिर इन्द्र भी स्वाहा !

साधो, अमेरिका म एक मशहूर राजनीतिक अथशास्त्री है—प्रो० गेलब्रेथ। उनकी बहुत-सी किताबें हैं। अति सपन्न समाज म कौन सी विकृतिया आती हैं और जीवन मूल्या का कैस पतन होता है, इस पर भी उन्होंने लिखा है। काफी साफ बोलने वाले आदमी है। प्रो० गेलब्रेथ भारत मे अमेरिकी राजदूत रह चुके है। उन्होंने अपनी ताजा किताब मे लिखा है कि दिल्ली मे मुझे सी० आई० ए० ने बहुत परेशानी मे डाल दिया। मुझसे कहा गया कि इतना पैसा अमुक-अमुक पार्टियो के नेताओ का दे दो। यह मेरे लिए बडा कठिन काम था।

साधो प्रो० गेलब्रेथ ने एसे ही लिखने और बोलने के कारण उन पर यह रोक लगा दी गयी है कि वे विदेशो मे भाषण नही देंगे। हाल ही ऐसी रोक अमेरिका के अस्सी बुद्धिजीविया पर लगी है। साधा, अमेरिका म साफ और बुद्धिमानी की बात करने वाले को कम्यूनिस्ट एजेंट कह दिया जाता है। महान लेखक नोबल पुरस्कार विजेता अर्नेस्ट हेमिंग्वे युद्ध की नीति के खिलाफ था। तो उसे अमेरिका विरोधी करार दे दिया और गुप्तचर विभाग के लोगो ने उसका ऐसा घेराव किया कि वह सनकी हो गया। उसे हर आदमी खुफिया एजेंट मालूम होता था और इस यातना स तग आकर उसने आत्महत्या कर ली। यह सब हेमिंग्वे की पत्नी ने लिखा है।

खैर साधो, हम तो इसस मतलब है कि एक बुद्धिजीवी राजदूत

न ही यह बात बड़ी है कि सी० आई० ए० भारत की कुछ पार्टियों, गुटों और व्यक्तियों को पैसा देती है और वे लेते हैं। वे कौन हैं जो अमरिकी पैसा पाते हैं? इसकी पहचान बहुत आसान है। अमरिका अपने विरोधियों को तो पैसा देता नहीं होगा। अपने समर्थकों को ही देता होगा। ये समर्थक कौन हो सकते हैं? वामपंथी तो होंगे नहीं। दक्षिणपंथी होंगे! अब तुम उन दलों और नेताओं, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों, धर्मगुरुओं को पहचान हो लोग, जिन्हें अमेरिकी पैसा मिलता है। सवाल है—क्या यह पैसा इन्हें भारत का भला करने के लिए मिलता है? सीधा जवाब है—*नहीं! यह पैसा अमरिका का काम करने के लिए मिलता है।* अमरिका इस देश में कौन से मंगल कार्य कराना चाहता है? अब सब जानते हैं कि अमेरिका को इस देश की विदेश-नीति, आत्मनिर्भरता की कोशिश, स्वाभिमान और स्वाधीनता की रक्षा और रूस से मित्रता और राष्ट्रीय एकता पसंद नहीं। यानी जो भी अमेरिका से पैसा लेगा, उसे ऐसे काम करने पड़ेंगे जिनसे संकट पैदा हो और देश तथा सरकार कमजोर हो और राष्ट्र का विघटन हो तथा नीतियां बदलें।

अब साधो समझो कि पंजाब की समस्या क्यों नहीं सुलझ रही है! कोई समझौता क्यों नहीं होता? बात यह है कि उन्हें समझौता नहीं—आंदोलन चाहिए। समझौते में मामला शांत हो जायेगा। शांति नहीं चाहिए। समझौता और शांति होने से एक तो नेतागीरी चली जायेगी। दूसरे—अशांति और विघटन के लिए जो पैसा मिलता है वह बंद हो जायेगा। इसलिए जब अकाली नेता दिल्ली में समझौता करने बैठते हैं तभी भारतीय जनता पार्टी पंजाब बंद करा देती है और हरियाणा में अपने लोगों से गुरुद्वारों पर हमला करा देती है। बस, वार्ता खत्म।

साधो, और मजा देखो! जो दक्षिणपंथी दल बाहर अकालियों की *मांगों का समर्थन करते हैं और सरकार पर समझौता नहीं करने* का आरोप लगाते हैं वही दल त्रिपक्षीय वार्ता में अकालियों की मांगों का विरोध करने लगते हैं। पिछली वार्ता में ऐसा हो चुका है।

एसा क्या हाता है ? यह दुहरा राल किसलिए अदा किया जाता है ? इसलिए कि समझौता कही हो नही जाय। समझौता नही होने देने म बडे फायदे है—विदेशी धन बराबर आता जाता है राजनीतिक लाभ ह नेतागीरी कायम है, चूहे के बराबर आदमी शेर के बराबर नेता बने हैं, राज फोटो छपते ह प्रधानमन्त्री निमन्त्रण देती है, इस तनाव के वातावरण म चुनाव हो तो कुछ सीटें ज्यादा मिल जायेंगी। प्रचार हिंदू सिख झगडे का हो रहा है। मगर हिंदू और सिख कहीं नही लड रहे हैं। सिखों के रक्षक बनने वाले भारतीय जनता पार्टी के नेताओं म गुप्त समझौता है कि—समझौता नही होने देना है। जब समझौते के आसार दिखें तो पानीपत म गुरुद्वारे पर हमला करवा दिया बी० जे० पी० ने भीड के नाम से। अब कभी अकाली नेता दिल्ली बात करने बैठेंगे, तब वे पजाब म गडबड का इतजाम करके आयेंगे—ताकि बातचीत भग कर दें।

साधो, ऐसा ही असम के मामले म होता रहा है। छात्र-नेता सरकार से समझौता करके बाहर निकलते ह और बाहर विरोधी नेताओं की सलाह पर समझौता भग कर देंगे। असम म भी आदोलन का सचालन विदेशी पैसा और साप्रदायिक दल कर रहे हैं।

साधो, अकाली नेता कहते हैं कि आनदपुर साहब प्रस्ताव मान लो। मैंने इधर सिखों से पूछा कि यह आनदपुर साहब प्रस्ताव क्या है ? वे कहते है—हम नही मालूम। मान लो, आनदपुर साहब प्रस्ताव सरकार पूरा मान भी ले तो भी समस्या हल नही होगी। इधर महासत भिंडरावाला बैठे ह। वे ऐसी बात कहते ह—सिख हत्या नही करता वह बदला लेता है। सत प्रवर वह किससे बदला लेता है ? वह उस बलवान से बदला नही लेता जिसने सिख को मारा। वह दो चार बेकसूर निहत्थे भले आदमियो को मार डालता है। यह बहादुरी है। यही गुरुओं की शिक्षा है। तो भिंडरावाला कहते है कि अकाली दल नेताओं ने समझौता कर भी लिया तो उसे हम नहीं मानेंगे। प्रधानमन्त्री अमृतसर आकर मुझसे बात करें। भिंडरावाला पागलो की फौज के सेनापति ह। उन्होने अपने को

अकाल पुरुष बना लिया है। जब तक उनकी चलेगी, समझौता नहीं होगा। समझौता हो गया तो इन्हें कोई नहीं पूछेगा। भजन करते-करते ये यहां तक बार होंगे।

साधो, तुम पूछोगे कि होगा क्या? ये धार्मिक लोग नहीं, राजनीतिक पार्टी के लोग हैं। ये अपराधी हैं। हत्याएं करवाते हैं। इसलिए इन पर सरकार को कठोर कार्यवाही करनी ही होगी—सीमा सुरक्षा दल की हो या फौज की। अपराधी तो पकड़े ही जायेंगे। अब तुम स्वर्ण मंदिर की पवित्रता की बात करोगे। तुम जनमेजय के नागयज्ञ की कथा जानते हो। ऋषिगण नागों को यज्ञवेदी में डाल रहे थे। मालूम हुआ कि नागराज तक्षक इंद्र के सिंहासन के नीचे छिपा है और इंद्र उसकी रक्षा कर रहे हैं। ऋषियों ने कहा—ऐसा है तो इंद्र भी स्वाहा! समझे?

४ मार्च, १९८४

## चुनावी बजट

साधो यह बजट मौसम है। बजट ऐसा होता है जैसे ज्योतिषी राशिफल खोल रहा है—इधर मगल है, मगर उस पर शनि की दृष्टि पड रही है। इसलिए मगल भला करने को कितना ही जोर मारे, शनि होने नही देगा। ऐसा ही यह प्रणव मुकर्जी का बजट है और ऐसे ही राज्यो के बजट खुल रहे हैं। कही मगल पर शनि की दृष्टि लगी है, कही गुरु पर शनि की दृष्टि लगी है। मगल एक है गुरु एक है, पर शनि कई ह।

साधो, सरकार भी यह मानती है कि देश मे साठ हजार करोड काला धन है। तुम जानते हो, साठ हजार करोड कितना होता है। मैं तो सोचता हू तो आख फिर जाती हैं। इस शताब्दी के अत तक एक लाख करोड काला धन हो जायेगा। काला धन निकल नही रहा है, बढ रहा है। अब प्रणव मुकर्जी कीमतो को घटाने या स्थिर रखने का बजट बनायें, पर काला धन न कीमतें घटने देगा, न स्थिर रहने देगा। प्रणव मुकर्जी मुद्रास्फीति रोकने का प्रण करें, पर यह साठ हजार करोड मुद्रास्फीति बढायेगा ही। साधो हम अर्थशास्त्र समझते नही है। अनाडी हैं। मगर मैं कहता हू कि जब काला धन वालो का ही बोलबाला है तो प्रणव मुकर्जी बजट क्या बनाते हैं? उन्हे यह अधिकार नही है। पाइप प्रणव भी पीते है, कबीरदास भी पीता है। पाइप भाई के नाते मेरी सलाह है कि बजट बनाने का काम काला धन वालो को दे दिया जाय। काला धन वालो म से किसी

यो प्रयमश्री बना दिया जाय। एक सलाहकार समिति बना दी जाय, जिसमें देश के महान काला धन मालिक और हाजी मस्तान जैसे लोग हो। ठग महागुरु नटवरलाल भी शामिल किये जायें। इनके सामने प्रणव मुकर्जी अपना सफेद हिसाब रख दें—इस मद म इतना आयेगा, इतना टैक्सो से वसूल होगा, इतनी रेवेन्यू इन मदो से होगी। इतना विदेशी कर्ज मिलेगा, जिसे आप पूरा का-पूरा काला धन बना लें। बस, अब बढ़िया बजट बना दें। हमारा बजट सफल नही होगा। आपका ही सफल होगा। साधो, जब काला धन के विशेषज्ञ बजट बना दें, तब प्रणव मुकर्जी उसे ससद मे पश कर दे कि हमने यह बजट उनसे बनवाया है, जिनका देश की अथ-व्यवस्था पर कब्जा है। यह जरूर सफल हागा।

खैर साधो जब प्रणव मुकर्जी ने बजट पेश कर ही दिया है तो उस पर बहस भी हो रही है। मगर बहस हर साल सरीखी गरमा-गरम नही हो रही है। पहले तो चिल्लाते थे—इस बजट से गरीब और मरेंगे। या इस बजट से उत्पादन को प्रोत्साहन नही मिलेगा। इस बजट से इस वग को तकलीफ हागी उस वग को तकलीफ होगी। मगर इस बार विरोधी नेता एकदम ठडे हैं। दहाड किसी की नही सुनायी पडी। लगभग सबने एक ही बात कही है—यह चुनाव बजट है। साधो मजे की बात यह है कि प्रणव मुकर्जी ने भी बजट पेश करने के पहले साफ कह दिया—बजट बनाने के दौरान मेरे दिमाग मे कुछ महीने बाद घटने वाली वह घटना रही है जिसका सामना हम सबको करना है। वह घटना यानी आम चुनाव! प्रणव मुकर्जी का इशारा था कि आलोचना करने के पहले यह सोच लेना कि आगे चुनाव लडना है। अब बजट के प्रखर आलोचक पसोपेश म हैं। अगर इस मामले की आलोचना करो, पूजी वाले नाराज हाग और अपने वोट काटेंगे। अगर इधर कुछ कहा ता मध्यम वग नाराज होगा और अपने को वोट नहीं देगा। अगर यहा कटौती करने की बात करो तो गरीब नाराज होंगे और ज्यादा वोट गरीबो के ही होंगे। इसलिए किसी मामले पर मत बोलो।

यही कहो—यह चुनाव बजट है, सबको खुश रखने की कोशिश वाला। यही बात सत्ता पक्ष भी कहता है—हां, यह चुनाव बजट है।

साधो, इन बजटों के प्रकाश में साधारण आदमी अपना बजट बनाये तो वह भी झूठा होगा। कारण कि बजट प्रकाश का नहीं, अंधकार का होगा। तीन महीने पहले बच्चों को स्कूल ले जाने वाला रिक्शावाला मध्यवर्गीय गृहणी से कहता था—बाई, पैसे बढ़ाओ। दाल सात रुपये किलो हो गयी। अब वह कहता है—बाई, थोड़ा पैसा और बढ़ाओ। दाल अब नौ रुपये किलो हो गयी। गरीब का बजट भी फेल और मध्यवर्गीय का भी फेल। उससे कहो—देखो, फसल इस साल बहुत अच्छी आयी है। महीने भर बाद अनाज सस्ता हो जायेगा। वह जवाब देता है कि—बाई, आज तक कभी ऐसा हुआ है कि फसल अच्छी आयी हो और अनाज के दाम घटे हों! फसल खराब हो तब भी दाम बढ़ते हैं और फसल अच्छी हो तब भी दाम बढ़ते हैं। अनाज तो गोदामों में भर जायेगा और बरसात शुरू होते ही वे रुला-रुलाकर महंगी दाल बेचेंगे। सब ईश्वर की लीला है। त्रेता और द्वापर में तो भगवान कुछ साल लीला करके अंतर्धान हो गये, पर कलियुग में भगवान रोज ही शताब्दी भर लीला कर रहे हैं।

साधो यह भगवान की लीला नहीं तो क्या है? वाजिब मूल्य की सरकारी दुकान पर आज सरकारी गोदामों से अच्छा अनाज आता है और रात को वैसा ही चमत्कार होता है, जैसा कृष्ण ने उफनती यमुना को पार करके किया था। उचित मूल्य की दुकानों में सड़ा अनाज आ जाता है और अच्छा अनाज खुले बाजार में पहुंच जाता है।

साधो हम मामूली लोग हैं। हम अर्थशास्त्र के जादू भरे मन जैसे शब्दों और मुहावरों को नहीं समझते। हम न समझते हैं इनफ्लेशन, न डेफिसिट फिनेंसिंग, न अंडर डेवलेपमेंट, न बैकवर्ड इकानमी, न ओवर इनवेस्टिंग न अंडर इनवाईसिंग न प्राडक्टिव, न अनप्राडक्टिव, न नैशनल ग्रोथ रेट, न परकेपिटा इनकम। हम यह भी नहीं समझते कि शेयर बाजार में स्वराजपाल के आदमी ने इतनी हलचल पैदा कैसे कर दी

ग्रौर वपनियो वे मालिक उससे क्या घबडाते हैं।

साधो, हम तो ग्राटा, दाल, चावल, प्याज का दाम समझते हैं। हम सावजनिक वितरण प्रणाली को जरूर समझते है। यह नाकाफी है, ग्रौर भ्रष्ट है। हम प्रणव मुकर्जी को साल भर पाइप की बढिया तमाखू भेंट कर सकते हैं अगर वितरण प्रणाली का बहुत विस्तार हो ग्रौर भ्रष्टाचार न हो। विस्तार शायद कुछ ग्रौर हो जाय, मगर भ्रष्टाचार तो भगवान का प्रिय मनोरजन है।

२० मार्च, १९८४

## दहेज देवता हवालात मे

अगर लडकी और उसके बाप मजबूत हुए, तो इस वक्त वर और उसका बाप जमानत पर होंगे और दहज विरोधी कानून के अतर्गत मुकदमा बन रहा होगा। इस बीच पुलिस पैसा खाकर मामला रफा-दफा करने की कोशिश कर चुकी होगी। चार दिन पहले की बात है। यहा करीब सौ किलामीटर दूर एक कस्बे मे द्वारचार के बाद ही वर के बाप चाचा ने रकम की माग कर दी। रकम वधू के पिता की हैसियत के बाहर थी। इसलिए उस बेचारे ने हाथ जोडने, पाव पडने का काम शुरू कर दिया। यह भी वादा किया कि धीरे धीरे करके रकम चुका देंगे। इसम यह अथ तो रहता ही है कि अमानत मे हमारी लडकी आपकी कैद मे है ही। पैसा नही दें, तो आप उस पर तेल डालकर उसे जला सकते हैं।

साधी यह आम बात है। जो खास इस मामले मे है, वह यह कि दबी हुई लडकी ने मिथ्या लाज त्यागी और वह रुद्र होकर निकल पडी। उसने कह दिया—मैं इस आदमी से शादी करूगी ही नही। इससे लाचार बाप की झुकी रीढ की हडडी भी सीधी हो गयी। वह थाने गया और रिपोट कर दी कि बराती पैसा माग रहे हैं। पुलिस फौरन आयी और बरातियो को पकडकर हवालात मे डाल दिया। उनके खाने के लिए जो मीठे नमकीन पकवान बने थे, वे दूसरो को खिलाये गये होंगे। बराती रात भर थाने मे फश पर भूखे पडे रहे होंगे। दूसरे दिन अदालत म पश किये गये होंगे। बाकी तो छोड

न्धि गये होंगे। वर, जिनका नाता मामा पर रंग जायम हो गया होगा।

साधो, ऐसा समाचार छपता है तो आम आदमी की रगों का पानी सुन करके गरम होकर दौड़ने लगता है। मुझसे जो भी मिले, कहने लगे—बड़ी बहादुर लड़की है। बाप ने भी बड़ी हिम्मत दिखायी। साले आदमखोरों की मंडप में अच्छी पिटाई भी करनी थी। ऐसी ही एक घटना साल भर पहले यहीं एक शहर में घट गयी थी। लड़की एम० ए०, बी० एड० और हाई स्कूल में अध्यापिका। सुंदरी युवती। पति परमेश्वर एक मिल में सुपरवाइज़र। बारात के स्वागत के लिए काफी बढ़िया इंतजाम किया था। इज्जतदार लोग बारात की अगवानी के लिए तैयार थे। इधर वर के बाप ने खबर भेज दी कि पचीस हजार और नगद—यानी हफ्ते भर में ही बैलों के बाजार में रेट चढ़ गया था। जवाब में देरी देखकर वर के बाप और चाचा जा धमके और रुपये मांगे। लड़की के बाप ने कहा—एक तो इतना तय नहीं हुआ था। जो तय हुआ है वह मैं देता जा रहा हूं। पचीस हजार टीके में दे ही आये थे। बाकी अब देंगे। मगर ऊपर से पचीस हजार का इंतजाम इसी वक्त मैं नहीं कर सकता। वर के पिता लौटे तो वर पर वीर रस सवार हो गया। वर ने दो-तीन दोस्तों के साथ शराब पी और नशे में कार में बैठकर वधू के दरवाजे पर पहुंचे उसके पिता को गालियां दीं और रुपये फौरन मांगे। अब परिवार सलाह करने बैठा। लड़की ने कहा—मैं तो अब उस जानवर से शादी नहीं करूंगी। परिवार के लोगों ने भी तय किया कि ऐसे घर में लड़की नहीं देंगे। जनवासे में खबर भेज दी गयी कि लड़की की शादी नहीं करेंगे। आप लोग फौरन जनवासा खाली कीजिए। हम किराया लग रहा है।

साधो, अब माहौल बदला। वर के पिता ने वधू के पिता के हाथ जोड़े पांव पड़े कि शादी कर दीजिए। हमें और पचीस हजार नहीं चाहिए। लड़की के पिता ने कहा—मेरी बेटी ने शादी से इनकार कर दिया है। अब वर की दारू उतर गयी। उन्होंने लड़की के चरणों पर

अपना मस्तक रख दिया, उनके बाप ने हाथ जोड़कर कहा—हमारी इज्जत बचा लो। हम शहर में परमा प्रीति भोज के कार्ड बांट आये हैं। लड़की ने कहा—आप लोगों ने हमारी इज्जत का जो किया है, वही हाल आपकी इज्जत का होने दो! टीके में जो पचीस हजार लिये थे, वे वापस करो और लौट जाओ।

साधो, आखिर वर के बाप ने कहा—ठीक है हम लौट जाते हैं। मगर वे चढ़ावे के जेवर तो वापस कर दीजिए। कन्या के बाप ने कहा—वे जेवर तब वापस होंगे, जब हमारे वे पचीस हजार वापस हो जायेंगे।

साधो वर वालों का संकट यह था कि वे जेवर दूसरों से मांगकर लाये थे। दूसरे दिन वे पचीस हजार देकर जेवर वापस ले गये।

साधो नारी जागरण के कारण पिछले तीन चार सालों के आंदोलनों के कारण सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नारी पीड़न पर तत्पर कठोर कार्यवाही के कारण, नारी में अधिकार व सम्मान की चेतना पैदा हुई है। ऐसी साहसी लड़कियों के साहस का समाचार छपता है तो लोग खुश होते हैं। मगर दहेज के लोभ में बैठे लोलुप परेशान होते हैं कि देखो अब लड़कियां भी इतनी ढीठ और मुंहफट हो गयी हैं।

साधो, मगर सवाल सिर्फ जय जयकार का नहीं है। ज्यादा ठोस है—इन लड़कियों से वीरांगनाएं बनायी जा रही हैं शादी कौन करेंगे। लड़कों की मां सोचेंगी—ऐसी लड़की कट्टरता में नहीं रहेगी। घर में निभेगी कैसे? असल में सास ऐसी बहू चाहती है, जिसे वह रोज दमचे और चू नहीं करे। बिल्ली पिटने पर घर में चू कर सकती है पर वह नहीं। अब रही बात यह कि आदर्शवादी साहसी युवक आगे आयेंगे कि हम बिना लेन-देन के शादी करेंगे। मगर कबीर देख चुका है कि बाहर वीर आदर्शवादी क्रांतिकारी बनने वाले अकसर विवाह मंडप में मेमने बन जाते हैं या भेड़िये। मगर हालत पूरी तरह निराशा की नहीं है। हमारे यहां काफी मजबूत युवक भी हैं। कई युवकों ने वहीं उस लड़की से शादी कर ली है। ऐसे युवकों की

समस्या बढ़ेगी। मगर उन युवकों से ज्यादा खतरा है, जो बिना रीढ़ की हड्डी के केंचुए हैं। ज्यादा समस्या इन केंचुओं की ही है।

साधो, दहेज वाले धन के साथ बढ़ रहा है। यह पूरी भ्रष्ट अर्थव्यवस्था और असामाजिक जीवन मूल्यों से संबंधित है। यह इस पूरी अन्यायी व्यवस्था के साथ ही खत्म होगा। पर फिर भी व्यक्तिगत एक लड़की और उसके पिता यह साहस दिखाएं तो हजारों की हिम्मत बढ़ती है।

२७ मार्च, १९८४

## जार्ज, बीजू जिया के दरबार मे

साधो, दुनिया के इतिहास मे कभी कही भी ऐसा नही हुआ। आदिम युग से लेकर अभी १९८४ तक ऐसा कभी नही हुआ। मगर भारत मे वह होता है जो कभी नही होता। यह देश अपनी महानता और विशिष्टता की रक्षा बराबर करता जा रहा है।

साधो कभी ऐसा होते सुना है कि कोई देश पडोसी देश पर हमले की तैयारी कर रहा हो ? हथियारो का भडार कर रहा हो। दूसरे महादेश से हथियार ले रहा हो ? उसका तीन बार हमले का रिकाड हो। जिससे ३५ सालो से सबध खराब चल रहे हो। इधर पडोसी देश की सरकार कह रही हो कि हम उस देश से हमले का खतरा है। वह लडाई की तैयारी कर रहा है। हमारे पास गुप्त जानकारी है। हमे अपनी रक्षा की तैयारी करनी चाहिए। हमे सावधान रहना चाहिए। लोग भी यही कहते हो। अधिकाश राजनेता भी यही कहते हो। तब दो राजनेता उस राजा के पास जाकर कहें—हुजूर हमे यह बता दीजिए कि आप हमसे लडाई करेंगे कि नही। हमारे देश मे सरकार और कई जानकार लोग कहते है कि आप लडाई करेंगे। मगर हमे उनका भरोसा नही है। हम आप पर भरोसा करते है। आपका रिकाड सचाई का है। आप जो कहेंगे, हम मान लेंगे और अपने देशवासियो से कह देंगे। हुजूर, दस्तबस्ता अर्ज है कि हमे सच बता दीजिए कि आप हम पर हमला करेंगे या नही।

साधो, वह राजा क्या कहेगा ? अगर उसे हमला करना है तो

क्या वह कह देगा कि हाँ, हम हमला करेंगे? वह तो यही कहेगा कि हम कतई हमला नहीं करेंगे। हम तो शान्ति प्रेमी हैं। तो ये दस्त बस्ता खिदमतगार कहेंगे—जहाँपनाह, आपने कह दिया तो हमें भरोसा हो गया। हमारी सरकार, नेता और नाना सब झूठ बोलते हैं। अब हम लौटकर अपने देशवासियों से कहेंगे कि सरकार झूठ बोलती है, ये पार्टियाँ झूठ बोलती हैं, बुद्धिमान जानकार लोग झूठ बोलते हैं। हुजूर तो हमसे बहुत मुहब्बत करते हैं। उन्होंने हमें गले लगा लिया और उनकी आँखों में मुहब्बत के आँसू आ गये। वे कभी हमले की नहीं सोचते।

साधो, तुम कहोगे कि गप्प मार रहे हो। यह कहाँ किस लोक की कथा है? कहीं कोई ऐसा करता भी है! ये लोग किस शताब्दी में हुए थे। कहाँ हुए थे? ये पागल थे कि मूरख थे? जिसके होशो-हवास दुरुस्त हों, वह तो ऐसा नहीं करेगा।

साधो, ये इसी धरती के महान सपूत हैं। हमारे ही राष्ट्र के गौरव हैं। इनमें एक का नाम है जार्ज फर्नांडिस और दूसरे का बीजू पटनायक। दोनों जनता पार्टी के बड़े नेता हैं। ये दोनों जनरल जिया उल हक के दरबार में हाजिर होकर अभी लौटे हैं और बयान दे रहे हैं कि तानाशाह जिया शान्ति प्रेमी हैं। वे भारत से दोस्ती चाहते हैं। उन्होंने हमसे कहा कि आप बेफिक्र रहें, मैं लड़ाई नहीं करूँगा। तुम चाहो तो हमारे फौजी ठिकानों को देख लो। यह भारत सरकार झूठा हल्ला कर रही है कि पाकिस्तान की तरफ से हमले का खतरा है।

साधो, तुम पूछोगे कि ये दोनों लोग होते कौन हैं? ये किस खेत की मूली हैं? अगर जनरल जिया ने इनसे बात की तो इनकी हैसियत क्या है? ये किसके प्रतिनिधि हैं? ये भारत के प्रतिनिधि कैसे बन गये? अगर जिया को हमला करना है तो क्या वह बताकर करेगा? पहले से सूचना देकर करेगा? युद्ध कोई मेहमाननवाजी है क्या? सच बताओ गुरु, ये दोनों बेवकूफ हैं कि पागल हैं?

साधो, ये दोनों अकेले नहीं हैं। ये जनता पार्टी की तरफ से भेजे गये थे। इसमें सहमति भारतीय जनता पार्टी की भी थी। ऐसा है कि जब

पूरा चाद चमकता है, तब साधारण सनकी का पागलपन बढ जाता है। 'ल्यूना' चद्रमा को कहते है लेटिन मे। पागल को इसीलिए 'ल्यूनेटिक' या 'मून स्ट्रिकन' कहते है। इस समय ग्राम चुनाव का चाद पूरा ग्रासमान मे है। कभी भी चुनाव हो जायँगे—ऐसा लोग सोचते है। तो जो दक्षिणपथी पार्टियो के नेता चुनाव जीतकर सरकार बनाना चाहते है, उनके दिमाग पर चुनाव के पूरे चाद का ग्रसर पड गया है। ये सोचते हैं कि हमले के खतर की इस हवा मे इदिरा काग्रेस चुनाव जीत जायगी। इसलिए जिया स मिलकर ग्राग्रो ग्रौर प्रचार करो कि इदिरा गाधी झूठ बोलती है। भ्रम पैदा कर रही ह। युद्ध का कोई खतरा नही है। लोगो, तुम हम वोट देकर हमारी सरकार बनवाग्रो।

साधो, तुम कहोग—गुरु, क्या इन्हें यह दिखता नही है कि हमारे चारा तरफ फौजें तैनात ह। ग्रमेरिकी फौजा ने हमारे दश को घेर रखा है। पाकिस्तान ग्रमेरिका को फौजी ग्रड्डे की सुविधा दे चुका। बगला दश भी दे दगा। श्रीलका म ग्रमेरिका है ही। सारे हिंद महासागर मे ग्रमेरिकी फौजें ग्रौर राकेट तथा मिसाइलें ह। ग्रमेरिका भारत की नीतियो स नाराज है, यह सबका मालूम है। क्या ये नेता इतने भाले ह कि नही जानत ? साधो, ये भाले नहीं है। य चालाक हैं। ये सब जानते ह। ग्रब तुम पूछोगे—गुरु, ग्रगर ये सब जानते ह, ता दश की जनता को भ्रम म रखकर ग्रपने ही दश पर हमला क्यो ग्रामत्रित करत ह। क्या ये देशभक्त ह ?

साधो, इनकी देशभक्ति पर शक नही करना चाहिए। बात यह है कि य ग्रमेरिका की विश्व राजनीति से जुडे है। ये जा भी काम कर रहे हैं वही कर रहे है, जा ग्रमरिका शासन चाहता है। ग्रमरिका को जनता पार्टी, भारतीय जनता पार्टी, लाकदल वगैरह की सरकार हर कीमत पर ग्रगले चुनाव के बाद चाहिए। इस सरकार की स्वाधीन नीति, रूस से दास्ती, साम्राज्यवाद विरोध ग्रब ग्रमेरिका को बरदाश्त नही है।

साधा इस तरह समझ ला कि जिया उल हक ग्रौर याकूब खा जा कहते ग्रौर कहत है, बीजू, जाज, ग्रटलबिहारी, डॉ० स्वामी

जो करते और कहते हैं उनकी योजना वाशिंगटन में बनती है।

साधो, मेरी सलाह है कि बीजू पटनायक, जाज वगैरह सीधे राष्ट्रपति रीगन के दरबार में हाजिरी दें। डॉ० स्वामी को जरूर साथ ले जायें। अटलबिहारी को जाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि कई सालों से अमेरिकी शासक और उनकी पार्टी के आध्यात्मिक संबंध चल रहे हैं।

१ अप्रल, १९८४

## सयुक्त विरोध का अध्यात्म

साधो, या सब ठीक चल रहा था। मगर आदमी की जगह जो यह कम्प्यूटर खडा कर दिया है इदिरा काग्रेस ने, इसने गडबड पैदा कर दी। अभी दिल्ली म नेताओ की सवाओ की जानकारिया कम्प्यूटर के दिमाग म डाली गयी और उस मशीन ने तपोदूत, नि स्वार्थ सवक, निष्ठावान पार्टीमैन, प्रभावशाली नेता और सच्चे कार्यकर्ता तय करके बताये। जिन्होंने अपने का सौ नवर द लिए थे, उन्ह कम्प्यूटर ने दो नबर दिये। तपस्वी को कम्प्यूटर ने भोगी बता दिया। जिन्ह नब्बे फीसदी वोट मिलने थ, उन्ह कम्प्यूटर ने दस बताये। इस मशीन न सगठन की सारी पवित्र नैतिकताओ का नष्ट कर दिया, परपराओ को तोड डाला, बलिदानियो का नगा कर दिया। अगर कम्प्यूटर के साथ 'लाई डिटेक्टर (झूठ का पता लगाने वाला यत्र) भी लगा दिया, तो काग्रेस की ३५ सालो की पवित्र परपराए नष्ट हो जायेंगी। हमारी राष्ट्रीयता पर इस पश्चिमी टेक्नीक के हमले का विरोध हर काग्रेस के सच्चे सिपाही को करना चाहिए। यह तकनीक अगर मानी गयी तो जिन्होंने वर्षों पहले टिकिट रिजर्व करा लिया है उनका टिकिट कट जायेगा। उन्ह डब्बे के छत पर या पहिया के नीचे राजनीतिक यात्रा करनी पडेगी।

साधो, चिंता की बात यह है कि इधर दूसरी तरफ अगर कुछ उत्साही लोगो ने कम्प्यूटर की माग कर दी तो क्या होगा ? इधर सब कुछ ऐसा हो रहा है, जिसे कोई विज्ञान न पकड सके—न राजनीतिक

विज्ञान, न अर्थ विनान न समाज विनान न भूगोल विनान, न कूटनीति विज्ञान । अट-विना स्वाय विनान जाति विनान, धमाध विज्ञान छल विज्ञान, गुट विज्ञान, सिद्धातहीनता विज्ञान तानमल विज्ञान स विरोधी दल, गुट और नेता काम कर रह हैं। इन विज्ञानो के सामन मानव जाति के अब तक के उपलब्ध सब विनान तुच्छ हैं। यहा अगर कप्यूटर आ गया ता विराधी राजनीति का खटारा ट्रक पलट जायगा। एक्सीडेंट हो जायगा। घटनास्थल पर कई मर जायेंगे, कई अस्पताल मे हाग। साधो हमारी सलाह इन साधुओ को है कि विरोध पक्ष मे कप्यूटर कतई नही आना चाहिए। अटलबिहारी को भारतीय सस्कृति पर यह हमला नही होन देना चाहिए। अगर कप्यूटर न फैसला दिया तो गाधीवाद और समाजवाद साफ हा जायेंग। गोडस और मघ की शाखा भारतीय जनता पार्टी के मूल्याकन म निकलेगी। चरणसिंह जो साबुन नही लगाते, कप्यूटर का कैसे बरदाश्त करेंग? वे अभी अपन का सवश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ मानते ह। कप्यूटर उन्ह राजनीतिक ज्ञान स शून्य बता देगा। चरणसिंह, मारार जी जगजीवनराम लोकात्तर सिद्धि प्राप्त हैं। य किसी विनान के वश म नही आय हैं।

साधो आओ अब जरा हम इन सबकी सहायता करें जिसस आगामी चुनाव म इनकी आदश प्रजापालक सरकार बन जाये। थूक देना और फिर उस नही चाट सकना—यह एक नैतिक कठिनाई हाती है। मगर खुशी की बात है कि इनम किसी के साथ यह सकट नही है। अपने थूके को धूल म से य रसगुल्ले की तरह फिर मुह म डाल लेते हैं। चरणसिह का ता इसका पुराना अभ्यास है। व राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के मामले म अभी एसा कर चुके हैं। जरूरत पडी ता दुबारा थूक सकते हैं। इसी तरह चद्रशेखर पहले कई बार कह चुके ह कि जब तक भारतीय जनता पार्टी अपन को आर एस एस स नहीं छुडाती हम समझौता नही करेंगे। मगर बार-बार एक वाक्य और कहते हैं—राजनीति म अछूतप्रथा नही चलती। यानी वे भारतीय जनता पाटी का अछूतोद्धार करन का तयार हा सकते हैं अगर वह

थोड़ा सा मकअप कर लें।

साधो, अब तुम कहोगे कि चद्रशेखर ने दोनो साम्यवादी पार्टियो का साथ ले रखा है और इसमे भी बड़ी शत भारतीय जनता पार्टी को न छूने की है। मगर ब्राह्मण जब कसाई को गाय बचता है, तब गाय की रस्सी उसके हाथ म नही देता। वह रस्सी जमीन पर रख देता है और कसाई भी कीमत जमीन पर रख दता है। इमस ब्राह्मण को गौहत्या का पाप नही लगना। मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी के बदलते बयान हम पढ़ते रहते ह। मार्क्सवादियो को भी इदिरा विरोध क मामले म प्रच्छन्न प्रथा पसद नही है। तो ये ब्राह्मण कसाई को गाय देत वक्त दूसरी तरफ दख सकते है। कह सकते है—हम कहा कर रहे है। वह तो पाच पार्टी का मुखिया चद्रशेखर कर रहा है। अब रही कम्यूनिस्ट पार्टी आफ इडिया। ता अभी ता राजेश्वर राव उधर भी कडे ह, इधर भी कडे है। वे समझौता न करें। पर 'एडजस्टमट' नाम का भी एक शब्द है—यह वे न करे, चद्रशेखर करे। उधर बाला साहब देवरस ने कह दिया है—भारतीय जनता पार्टी स सघ को कोई मतलब नही है। हमारा तो सास्कृतिक सगठन है। ता साधुओ की सलाह यह है कि प्यारा, तालमल जमा लो। सिद्धात ता होली म जल चुक और उनकी राख भी उड गयी।

साधो, मगर कठिनाइया और भी ह। एक कठिनाई चरणसिह ह। उन्ह राष्ट्रीय लोकतात्रिक मोर्चे म अडचन होन लगी है। उनके वफादार साथियो जस—सत्यपाल मलिक का अटलबिहारी ने तरकीब स उनस काट दिया। समाजवादी कटकर पहले ही जनता पार्टी म चले गये थे। चरणसिह जहा होग सबस महत्त्वपूण सर्वोच्च होग। चर्चिल सरीखे है वे आत्म-महानता के बारे म। चर्चिल के बारे म कहा जाता था—अगर व बरात म होग, तो दूल्हा होगे। अगर शवयात्रा म होगे तो मुर्दा होगे। चरणसिह जनता पार्टी की तरफ मुह करत है, मगर वहा चद्रशेखर अध्यक्ष हो गये है। उधर जनता पार्टी के समाजवादी अडचन म है और फिर चौधरी स आखें मिला रहे है।

*साधो, बहुगुणा ने भी पाप धो लिए। चरणसिंह जब गृहमंत्री थे,* तब बहुगुणा को रूसी एजेंट कहा था। हाल म बहुगुणा ने रूस सरकार की आलोचना करके गुलाबी दाग भी धो डाला और वे शुद्ध राष्ट्रीय होकर किसी भी बड़े सयुक्त मोर्चे के नेता बन सकते हैं बशर्ते चद्रशेखर और वाजपेयी उन्हे बनने दें। ऐसे मे अपने बाबू जी जगजीवनराम दीन भाव से सड़क पर बैठे कपड़ा बिछाय हैं।

अब साधो रह दक्षिण के फिल्मी नेता। य आपस म झगड़ने लग हैं। यह शुभ लक्षण है। भगवान आपस म लड़ें तो भक्तों का भला होता है।

*साधो, बेफिक्र रहो। १९७७ सरीखा पवित्र गठबधन हो जायेगा* क्योंकि देश को बचाना ही है। नाम कई हैं। कोई भी नाम द देंगे, इस विजयवाहिनी को। सरकार बन गयी तो साल डेढ साल चल जायगी। प्रधानमंत्री हर हफ्ते कम्प्यूटर तय करेगा। राजनीतिक सिद्धात और विवेक का सयुक्त मोर्चा वही होता है जिसम हर एक छिपकली हो और हर एक कीड़ा भी हो।

३ अप्रल, १९८४

## बूटासिंह धर्मवीर हो गये

साधो, ये दूसरे बूटासिंह हुए। ये केंद्र म मत्री ह, जिन्हे सिख प्रमुख ग्रथियो ने पथ से निकाल दिया। ये बूटासिंह धम पर शहीद हो गये। उन्होने सच्चा धम इसे माना था कि अकाल-तख्त की मरम्मत मे बाबा सतासिंह की सहायता करनी चाहिए जिसम यह धार्मिक भवन अपने पहले की शान पर आ जाये। पर मठाधीशो ने इसे उनका दुराचरण माना और उन्हे तनखैय्या घोषित कर दिया। अभी हाल म इन्ही ग्रथिया ने बूटासिंह को पथ से बाहर निकाल दिया। बूटासिंह उस धम पर शहीद हो गये जिसे वे सच्चा धम मानते थे।

साधो, मेरी पीढी मे से कुछ को याद होगा कि देश के विभाजन के बाद एक बूटासिंह का नाम समाचारों मे बहुत उछला था। विभाजन के बाद जो मारकाट और भगदड हुई उसमे परिवारो के सदस्य बिखर गये। पजाब मे एक मुसलमान युवती अपने परिवार से बिछुड गयी, वह समझी कि मेरे मा-बाप बहुत करके दगो मे मारे गये, एक सिख युवक बूटासिंह ने उसकी रक्षा की। दो-तीन साल उसे रखा फिर दोनो ने अपनी इच्छा से विवाह कर लिया। खोज-बीन से पता लगा कि युवती के माता पिता पाकिस्तान पहुच गये। उन्होंने अपनी लडकी को वापस बुलाने की कायवाही की और उसकी इच्छा के विरुद्ध उसे मा-बाप के पास ले जाया गया। बूटासिंह ने पाकिस्तान जाकर मुकदमा किया कि यह मेरी विवाहिता पत्नी है यह मेरे साथ रहना भी चाहती है, इसे मेरे साथ जाने दिया जाय। युवती ने भी बयान

दिया कि मैंने अपनी इच्छा से बूटासिंह से विवाह किया है और मैं उसकी पत्नी हूं। लेकिन पाकिस्तान हिंदुस्तान दोनों में धार्मिक उन्माद था। इस उन्माद के वातावरण में नफरत की राजनीति भी शामिल हो गयी। कठमुल्ला ने मजहब के नाम पर शादी को गैर इस्लामी करार दे दिया और बूटासिंह हार गये। वे उस स्त्री को बहुत प्रेम करते थे, उन्होंने अदालत में ही अपने को छुरा मारकर आत्महत्या कर ली। साधो, उन बूटासिंह पर जो गुजरी, उसका कारण भारत और पाकिस्तान के बीच की जहरीली राजनीति, धार्मिक उन्माद और धर्म के प्रवक्ता बन बैठे मुल्ला मौलवियों की जड़ता तथा हठवादिता था। वे यह मानने को तैयार ही नहीं थे कि सच्चा धर्म वह है जिसे बूटासिंह ने निभाया। वे यह भी नहीं मान सकते थे कि उनका अपना आचरण धर्म के विरुद्ध है।

साधो, ये अब दूसरे बूटासिंह हुए जो दिल्ली सरकार में कृषि मंत्री हैं। बूटासिंह ऊंची जाति के नहीं हैं। वे न जाट हैं न खत्री, वे एक तरह से आधे समाज से वैसे ही बाहर थे। गुरु लोग पैगंबर रसूल ईश्वर का बेटा ईसु न, सबने पूरी कोशिश की कि मनुष्य मनुष्य में भेद न रहे कोई ऊंच नीच न हो मगर सिखों में जाट, राम गढ़िया खत्री वगैरह हैं मुसलमानों में अगर सैय्यद साहब से कहा जाय कि लड़के की शादी असारी की लड़की से कर दीजिए तो वे गुस्से से कहेंगे—क्या बात करते हो जी। हम उस नीची जात में शादी नहीं करेंगे। ईसाई हो जाने से भी सब बराबर हो जाते हैं, यह गलत है। वे जाति भेद और ऊंच नीच लेकर ईसाई होते हैं। एक बहुत योग्य और ऊंची नौकरी पर लगे हुए ईसाई युवक की शादी का प्रस्ताव दूसरे ईसाई परिवार की लड़की से किया गया। लड़की के परिवार वालों ने कहा--ये कैसे हो सकता है, हम ब्राह्मण ईसाई हैं और वे गौड़ ईसाई हैं।

साधो धर्म ग्रंथों के उपदेश ठीक हैं। गुरुओं, अवतारों और रसूल के इरादे भी बहुत अच्छे हैं। पर एक घर जोड़ने की माया होती है। हजारीप्रसाद द्विवेदी का एक लेख है—घर जोड़ने की माया। उन्होंने

लिखा है कि कबीरदास ने तो तंत्र मंत्र का विरोध किया पर कबीर-पंथियों ने दतौन करने और पाखाना जाने के भी मंत्र बना लिए। कबीर का बेटा कमाल कुछ सामान घर में ले आया था तो गुरु ने कहा—डूबा वंश कबीर का उपजे पूत कमाल। पर कबीरपंथियों के मठों में माल-ही माल है। सच्चा धर्म भी आखिरकार मंदिर, मस्जिद गुरुद्वारे और गिरजाघर की दीवारों से बंद कर दिया जाता है। धर्म पर अधिकार पुरोहित वर्ग का हो जाता है और यह पुरोहित वर्ग अंधविश्वास लाभ डर तथा राजनीति के दबाव में अधर्म को धर्म मानने लगता है। यूरोप में वैज्ञानिक गैलीलियो ने सिद्ध किया कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी उसके आसपास घूमती है परंतु पादरियों की अदालत ने कहा कि गैलीलियो की बात धर्म के विरुद्ध है। धर्म के अनुसार पृथ्वी स्थिर और सूर्य उसके आसपास घूमता है। गैलीलियो, जो बहुत बूढ़ा था ने पादरियों के सामने तो उनकी बात मान ली पर बाहर निकलकर कहा कि पृथ्वी ही घूमती है।

साधो, सिख-पंथ में दुराचार के लिए किसी को 'तनखैया' घोषित करने का प्रावधान है। कोई जुआ खेले शराबखोरी करे व्यभिचार करे समाजविरोधी काम करे, तो उसे तनखैया घोषित करके सजा देनी चाहिए पर गुरुओं के उपदेश और पंथ के अच्छे नियम तो पड़ गये हैं अकाली राजनीति से प्रेरित ग्रंथियों के हाथ में। इसलिए उन्हें धर्म अधर्म दिखने लगा है।

साधो बाबा संतासिंह ने अकाल तख्त की मरम्मत करते हुए कहा था कि ये इमारतें हैं। टूट जाती है और फिर बन जाती है। उनका मतलब था कि इमारत या स्थान या उसकी माया धर्म नहीं है। संता सिंह पहले से ही निकाले हुए हैं। बड़ी खुशी की बात यह है कि ज्ञानी-ज्ञानी में मतभेद हो गये है। गुरुद्वारा पटना साहेब के मुख्यग्रंथी वयोवृद्ध जत्थेदार मानसिंह ने कहा है कि बूटासिंह को निकालने का फैसला राजनीतिक है और उसे सिख धर्म और परंपरा का समर्थन नहीं है। इस फैसले को सिख पंथ का हुक्मनामा नहीं माना जा

सकता। दूसरे भूतपूर्व ग्रथी उमरावसिंह यथा केम्रतसिंह ने कहा है कि बूटासिंह सच्चे सिख हैं। उनकी सराहना करने की बजाय उन्हें सजा देकर प्रमुख ग्रथियो ने गलत किया है। ग्रथियो मे मतभेद होना बडा शुभ लक्षण है।

७ अप्रल, १६८५

## अकाली हिंसा और राजनीतिक कपट

साधो, दिल्ली मे अकाली (तारासिंह) नेता मनचंदा और अमृतसर मे भारतीय जनता पार्टी के नेता खन्ना की हत्या की सबने निंदा की है। मजे की बात यह है कि सब अकाली उग्रवादियों की तो सिर्फ 'निंदा' करते हैं, मगर सरकार पर 'हमला' करते है। उग्रवादियो पर हमला नही करते। कहते है—यह निंदनीय है। मिल-बैठकर समझौता कर लो। मगर धिक्कार है इस सरकार को जो समस्या का हल नही करती।

साधो, अकाली दल एक राजनीतिक पार्टी है धार्मिक सगठन नही। इसे बहुत कम सिखो का समर्थन है। इसलिए यह राजनीतिक पार्टी धर्म और पथ को भी लेकर सिखो में धार्मिक उन्माद पैदा करके अपनी मांगें मनवाना चाहती है और पजाब मे अपनी सरकार बनाना चाहती है। भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ का राजनीतिक मोर्चा है। सारे कपट मुखौटा, गाधीवाद और समाजवाद के बावजूद यह पार्टी हिंदू धर्म और सप्रदाय का उन्माद पैदा करके राजनीतिक फायदे चाहती है।

साधो, इन दोनो म समानता है। दोनो दल पुनरुत्थानवादी हैं और पीछे ले जाना चाहते हैं। दोनों को लोकतन्त्र अनुकूल नही पडता। दोनो के पास प्राइवेट फौजे है। दोनो के आतकवादियो के पास मोटर साइकिलें और हथियार है। दोनो आतक मे विश्वास करते हैं। साधो अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी दोनो बडी चतुराई से पजाब

मे तालमेल विठाकर अभी तक चल रही है। आपस मे टकराना नही। दोना मिलकर केंद्र सरकार पर हमला करना। समस्या का पैदा करने, बढावे और हल न करने की सारी जिम्मदारी केंद्र सरकार पर डाल देना है। सत लागोवाल बयान द चुके हैं—हमारे दो दुश्मन हैं, केंद्र की काग्रेस सरकार तथा कम्यूनिस्ट। आर एस एस के सरकार्यवाहक राजेंद्रसिंह भी बयान द चुके ह—काग्रेस तो कोई पार्टी नही है एक व्यक्ति है। हमारी असली और आखिरी लडाई कम्यूनिस्टा से होगी।

साधो, भारतीय जनता पार्टी वाहर अकालिया का समथन करती है। सरकार को समझौता नही करो के लिए दोप देती हैं। मगर जब प्रधानमत्री समझौने के लिए अकाली नेताआ, विरोधी नताओ को बुलाती है और समझौने के आसार दिखत ह तव अटलविहारी कुटिलता स टाग मार दत हैं और अकाली नता भी किसी वहाने मे उठ जाते है। यह मिलीभगत है। समझौता दोनो नही हान देना चाहते। दोनो आदालन चाहत हैं। आदालन स राजनीतिक फायदे ह। समझौते से नही। और राज बेकसूर आदमी मारे जाते हैं। स्त्री और बच्चे तक मारे जा रहे ह। हिंसा की फासिस्टी राजनीति मे आदमी चीटा चीटी होते हैं।

माधो अब अकाली हिसक दस्त ने भारतीय जनता पार्टी के नेता को मार डाला। हम इसकी निंदा करते ह। यह जानवरा का काम है, भारतीय जनता पार्टी को चिता हुई। मगर इस चिता का मुह किस तरफ है? अटलविहारी वाजपयी के मुह से अकाली आतकवादिया का नाम नही निकला न उनके सिपहसालार भिडरावाला का। भारतीय जनता पार्टी ने पजाब और दिल्ली वद करवाया सा किसके खिलाफ? जिन्हान मारा उनके खिलाफ नही। यह वद भी सरकार के खिलाफ। भारतीय जनता पार्टी का अपने लोगा क मरन की कोई चिता नही है। उस सरकार और काग्रेस पार्टी को वदनाम करके उसके खिलाफ यह वातावरण बनाकर कि वह हिंदुआ की रक्षा नही कर रही ह आगामी चुनाव मे वाट लेना है।

साधो, लागोवाल ने भी कुछ दिन पहले बयान दिया था—पंजाब के बाहर बस सिखों की रक्षा सरकार नहीं कर रही है। अब कोई बताये कोई सिख ही बताये कि सारे भारत में रह रहे सिखों में से किसी एक को भी छुआ गया है। सिख सारे भारत में भाईचारे के साथ मजे में धंधे कर रहे हैं और नौकरियां कर रहे हैं। सिख की जान को खतरा पंजाब में ही है, बाकी भारत में नहीं। और यह खतरा अपने ही पंथ के हिंसक दस्ता से है। आखिर मनचन्दा भी तो सिख थे। डी आई जी अटवाल भी सिख थे और स्वर्ण मंदिर में मारे गये थे। लागोवाल बदमाशी का बयान देकर यहां के सिखों की हालत क्यों खराब करते हैं? यहां के सिखों को हिम्मत से बयान देना चाहिए—'ए लागोवाल और भिंडरावाले, अपनी जबान हमारे बारे में मत खोलो। तुम्हें जो करना है वही करो। हम इधर चैन से हैं। हमें क्या अड़चन में डालते हो? तुम हमारे नेता नहीं हो। हमारी तरफ से बोलने का तुम्हें कोई हक नहीं है।' ऐसा बयान जगह-जगह से यहां के सिखों को देना चाहिए।

साधो, मेरे बहुत दोस्त पंजाब में हैं। सिख भी हैं और गैर सिख भी। वे प्रोफेसर हैं, लेखक हैं। वे इधर आये भी। पिछले हफ्ते अमृतसर के ही प्रोफेसर आये थे। उन्होंने बताया कि पंजाब में शहर हो या गांव हिंदू और सिख भाईचारे से रह रहे हैं। ये कुछ उपद्रवी आतंकवादी हैं जो अराजकता मचाये हैं। लोग इनसे डरते हैं और नफरत करते हैं।

साधो, मैंने पूछा कि ये संविधान के आर्टिकल २५ में संशोधन कराके हिंदू की परिभाषा से अलग क्यों होना चाहते हैं? उन्होंने कहा—इस कानून में बाप की जायदाद में बेटी का भी हिस्सा होता है। ये लोग लड़कियों को जायदाद में हिस्सा नहीं देना चाहते हैं। दूसरा कारण यह है कि ये एक से अधिक शादी करना चाहते हैं। मेरा खयाल है, सिख औरतों को इसका विरोध करना चाहिए।

साधो, अब हालत यह है कि सरकार या कोई भी समझौते का

बातचीत किससे करें? संत लोंगोवाल से? प्रकाशसिंह बादल से? नहीं। ये अब नेता नहीं रहे। इनके हाथ से नेतागीरी छिन चुकी। ये नरम पड़ेंगे तो इनको ही मार डालेंगे। ये भी 'हिट लिस्ट' में होंगे।

साधो, मामला साफ है। यह सब उस गुप्त योजना के मुताबिक हो रहा है जो वाशिंगटन में सी० आई० ए० ने बनायी थी। यह योजना गुप्त नहीं रही। अमेरिका के अखबारों में छप गयी। पैसा हथियार सब अमेरिका से पाकिस्तान के मार्फत आ रहा है।

मगर साधो इन्हें इतिहास से सबक लेना चाहिए। लिंकन ने जब दासप्रथा बन्द कर दी थी तब दक्षिण अमेरिका ने अपने को गणराज्य से अलग कर लिया। संघ इस तरह नहीं टूटता। राष्ट्रपति लिंकन ने मिलिटरी को हुक्म दिया कि दक्षिण के इन लोगों को कुचल दो। वे कुचल दिये गये और अमेरिका एक ही संघ राज्य रहा।

८ अप्रैल, १९८४

## नकल क्यों होती है ?

साधो, जब राजनीति में बाजार में प्रशासन में, धर्म में, पुलिस में, उद्योग में, कचहरी में, दफ्तरों में ट्रस्टों में—यहां तक भ्रष्टाचार विरोधी विभाग तक में—भ्रष्टाचार होता है और जिसे हमारे नेताओं ने 'वे ग्राफ लाइफ' (जीवन-पद्धति) मान लिया है तब छात्रों को परीक्षाओं में नकल करने से क्यों रोका जा रहा है ? जिसे आगे चलकर 'जीवन पद्धति' बनना है, उसकी शिक्षा स्कूल-कालेज में ही हो जाय, उसकी परीक्षा भी हो जाय, तो ये लड़के-लड़की बड़ी योग्यता से भ्रष्टाचार की जीवन पद्धति चलायेंगे, सफल सपन्न और सुखी नागरिक होंगे। नकल रोकने और नकल करने पर सजा देने से उस बीज को ही मारा जा रहा है जो आगे चलकर मीठे फल देने वाला आम बनने वाला है। हमारी जीवन-पद्धति और नैतिकता का यह हाल है कि अतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा के लिए विशेष भोजन के ट्यूब हमारी किसी कंपनी से बनवाते, तो पहली ट्यूब का भोजन पेट में डालते ही उसे कै-दस्त होने लगते, ऐसी मिलावट हो जाती। गनीमत है कि राकेश शर्मा का भोजन रूस में तैयार हुआ।

साधो, इस परीक्षा के मौसम में हर साल अखबारों में सबसे ज्यादा खबरें परीक्षाओं में नकल की आती हैं। इस केंद्र में नकल हो रही है उस केंद्र में सामूहिक नकल हो रही है, उस केंद्र में निरीक्षक को छुरा मार दिया उस केंद्र में पुलिस ने पद्रह को पकड़ा। हमारे विश्व-विद्यालय से किसी विषय की परीक्षा-कापियां किसी दूसरे विश्व-

विद्यालय के प्राफेमर को जाचने के लिए भेजी गयी। उसन हफ्ते भर म बिना जाचे कापिया लौटा दी और लिखा—मैं इह नही जाच सकता क्याकि मैं इसके योग्य नही हू। ये छात्र नहीं, बडी-बडी अथारिटीज' (अधिकारी विद्वान) ह। जितना य जानते हैं, उतना ता मैं भी नही जानता। साधा, छात्रा को पुस्तका स पूरी नक्ल कर दन का सुभीता प्रिंसिपल और प्रोफेसरो न दे दिया था।

साधा, भीतर छात्र परीक्षा द रहे ह और बाहर पास क मकान मे छुरे वाले दादा' लोग प्राफेसरा से उत्तर लिखवाकर साइक्लो स्टाइल कराके अपने चेला को भीतर भेज रहे है। निरीक्षक मिले हैं चपरासी मिले ह, प्रिंसिपल अपने कमर मे कैद ह—क्याकि बाहर छुरा लिए दादा' लोग खडे है। जिस बेचारे छात्र का कोई धनी धोरी नही, वही स्मृति से पेपर करता है और कम नबर पाता है।

साधा, मैं इस शिक्षा के मामले मे बहुत भीतर रहा हू। नक्ल खुद निरीक्षक, जो अध्यापक है, कराते है। व अपन अपने छात्रो को नक्ल कराते है। या सब मिलकर सबको नक्ल करने देते ह और इसमे मदद करते ह। पर्चियो, कापियो, किताबो का ढेर होता है, हर केंद्र म। मैं यह नही कहता कि सब अध्यापक एस ह—नहीं, सब नही ह। मगर जो ऐसा नही करते उनकी सख्या काफी कम है। साधो, विश्वविद्यालय और पुलिस मिलकर 'फ्लाइग स्क्वाड' (उडनदस्ता) बनाते हैं, नक्ल पकडने के लिए। यह अचानक परीक्षा केंद्र पर छापा मारता है। मगर इसके आने की खबर लग जाती है और पर्चिया, कॉपिया, किताबें किसी कमर म बद कर दी जाती हैं और उडनदस्ते के जाने के बाद निकाल ली जाती है। किसी किसी केंद्र का प्रिंसिपल ज्यादा चतुर हुआ, ता वह उडनदस्ते को दफ्तर म चाय वाय करके वापस कर देता है। मगर एक से एक बहादुर पडे हैं। तुम जानते होग, एक कॉलेज जब उडनदस्ता पहुचा तो उस पर छात्रा ने पथराव किया —पथराव का नतृत्व खुद प्रिंसिपल कर रह थे।

साधो, कुछ साल पहले यह हुआ कि इस क्षेत्र मे भी पुलिस आ

गयी। परीक्षा करान का काम पुलिस को सौंप दिया गया। स्कूल और कालेज म डडा लिए पुलिस है और परीक्षा चल रही है। एक दो साल तो सरकार न परीक्षा का काम जिला मजिस्ट्रेट को दे दिया। उसन पुलिस सुपरिटेंडेंट को इचार्ज कर दिया। पुलिस अफसर कह रहा था—ये शिक्षा वाले यही नही मानते कि हमारी शिक्षा व्यवस्था असफल हो गयी। हमारी शिक्षा प्रणाली गलत है। [illegible] दें। मगर ये बदलेंगे नहीं इसी को खींचे जायेंगे और जिम्मेदारी हम पुलिस वालो पर डाल देते है। अब हम लडको को मा बहन की गाली देत ह और वे हमारी मा-बहन एक करते है।

साधो, हमारे इधर इस साल सरकार ने अध्यादेश जारी कर दिया है। नकल करने वाले को फौरन जेल मे डालो, नजरबद रखो, जुर्माना करो। मगर फिर भी नकल रुक नही रही है। सकडो लडके पकडे भी जा रहे ह।

साधो, तुम पूछोगे कि गुरु क्या कभी नकल रुकेगी? मैं कहता हू—इन हालात म कभी नही रुकेगी। सबसे मूल कारण तो यह ह कि जब *सब क्षेत्रो म सफलता बेइमानी से है, बेइमानी सवव्यापी है, तब अलग* से शिक्षा के क्षेत्र म ईमानदारी नहीं आ सकती। बाप घूस लेता है चाचा दुकान म मिलावट करता है, बनिया कम तौलता है, पुलिस घूस लेती है, तो लडका नकल करेगा ही। मगर यह बात भी ध्यान म रखो कि अधिकाश लडके नकल नही करना चाहते। फिर क्या करते ह?

साधो, जो अध्यादेश लगाते ह, पुलिस खडी करते ह, फ्लाइग स्क्वाड दौडाते हैं, वे 'यानी शिक्षा और शासन' के मालिक यह कभी नही देखते कि अध्यापक पढाते भी है या नही। मैं कहता हू—प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय तक अधिकाश अध्यापक सारा साल नही पढात। क्लास-क्लास जाकर प्राचाय नही देखता कि अध्यापक कक्षा मे है या नहीं। ये अध्यापक क्लास मे ही नही जाते। पढाते ही नही। सब एस नही है। बहुत अध्यापक ईमानदारी से पढाते ह। इनकी इज्जत लडके करते ह।

साधो, आम बात यह है कि नही पढाते। घर पर ट्यूशन के लिए बीस-बीस लडके बुलाते है। पर पढाते वहा भी नही। हर महीने पैसे ले जाते ह। यह ठेका है पास कराने का। अब साधो जिन लडका को पढाया ही नही गया, व नकल न करें तो क्या करें ? और जिन गुरुआ ने सैकडो को पास कराने का ठेका ले लिया है, पूरा पैसा ले लिया है वे नकल करावे पास न करायें तो क्या हर चौराह पर जूते खायें ? नकल कैसे खत्म हो सकती है ?

१५ अप्रल, १६८४

# शर्म या गर्व की बात ?

साधो, कुछ बात भावुकता में कहने में अच्छी लगती है जैसे यही कि हाय, गांधी के दरिद्रनारायण गरीबी की रेखा के नीचे जीते हैं। अहमदाबाद के दंगे पर ऐसी ही भावुकता की बात गांधी जी के पोते पत्रकार अरुण गांधी ने कही है—गुजरात को शर्म आनी चाहिए। मैं पूछता हूं कि जब बिहार को, असम को, पंजाब को शर्म नहीं आ रही है, दिल्ली को कभी शर्म नहीं आयी तो गुजरात को ही शर्म क्यों आनी चाहिए ? इसलिए कि गांधी जी गुजराती थे ? यानी सारे देश की शर्म बटोरकर आप गुजरात के ऊपर डाल दो क्योंकि अनजाने यह संयोग हो गया कि गांधी जी गुजरात के थे। क्या गांधी जी अनंत काल तक गुजरात के सिर पर शर्म डलवाने के लिए ही वहां पैदा हुए थे ? फिर दंगा कराने वाले कह सकते हैं कि हां हम शर्म है—मगर इस बात की नहीं कि हम दंगा कराते हैं बल्कि इस बात की कि हमारे यहां मोहनदास करमचंद गांधी नाम का आदमी पैदा हुआ। *साधो कई साल पहले पठान गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां भारत* आये थे। इस उपलक्ष में और उनकी अगवानी में अहमदाबाद में दंगा हुआ था। खान साहब ने कहा था—अरे हिंदोस्तानियो, कुछ तो शर्म करो। यह देश महात्मा गांधी का है। वे अनशन पर बैठ गये। दंगाइयों ने मौका टाला, शासन सख्त हो गया तो दंगा बंद हो गया। मगर श्रेय मिल गया गफ्फार खां को। असल में दंगा कराने वालों ने कहा—

साधो, आम बात यह है कि नही पढाते। घर पर ट्यूशन के लिए बीस-बीस लडके बुलाते हैं। पर पढाते वहा भी नही। हर महीने पैस ले जाते ह। यह ठेका है पास कराने का। अब साधो, जिन लडको को पढाया ही नही गया, वे नकल न करे तो क्या करे? और जिन गुरुआ न सैकडा को पास कराने का ठेका ले लिया है पूरा पैसा ले लिया है, वे नकल कराके पास न करायें तो क्या हर चौराह पर जूते खायें? नकल कैसे खतम हो सकती है?

१५ अप्रल, १९८४

## शर्म या गर्व की बात ?

साधो कुछ बात भावुकता म कहने मे अच्छी लगती ह, जसे यही कि हाय, गाधी के दरिद्रनारायण' गरीबी की रखा के नीचे जीते ह। अहमदाबाद के दग पर एसी ही भावुकता की बात गाधी जी के पाते पत्रकार अरुण गाधी ने कही है—गुजरात को शम आनी चाहिए। म पूछता हू कि जब बिहार का, असम का पजाब को शम नही आ रही है, दिल्ली को कभी शम नही आयी तो गुजरात का ही शम क्या आनी चाहिए ? इसलिए कि गाधी जी गुजराती थे ? यानी सार देश की शम बटोरकर आप गुजरात के ऊपर डाल दो क्योकि अनजान यह सयोग हो गया कि गाधी जी गुजरात के थे। क्या गाधी जी अनत काल तक गुजरात के सिर पर शम डलवाने के लिए ही वहा पैदा हुए थे ? फिर दगा कराने वाले कह सकते ह कि हा हमे शम है—मगर इस बात की नही कि हम दगा कराते ह बल्कि इस बात की कि हमार यहा मोहनदास करमचद गाधी नाम का आदमी पैदा हुआ। साधो कई साल पहले पठान गाधी खान अब्दुल गफ्फार खा भारत आये थे। इस उपलक्ष म और उनकी अगवानी म अहमदाबाद म दगा हुआ था। खान साहब ने कहा था—अर हिंदोस्तानियो, कुछ तो शम करो। यह देश महात्मा गाधी का है। वे अनशन पर बैठ गये। दगाइयो न मौका टाला, शासन सख्त हो गया तो दगा बद हो गया। मगर श्रेय मिल गया गफ्फार खा को। असल म दगा कराने वालो ने कहा—

गाधीवादी बूढे, तू ता अभी यहा स टल। आग ता हम यह सब करेंग ही।

साधा किमी क्षेत्र पर यह नाजिमी क्या हो कि यहा दुघटना म एक महात्मा हो गया ह तो उस क्षेत्र की पीढियां की यह मजबूरी है कि व उस महात्मा क उपदेशा पर चल। उसकी नतिकता माने। एस तो पजाब के हठी अकालिया और आतकवादिया स कहा जायगा कि तुम्हार यहा गुरु नानक हो गय ह ता उनके उपदेशा पर चलो। अरे, दगा नही करायेगे ता राजनीति कैसे करेंग सत्ता पर कब्जा कैस करेंग, घर म माल कैसे भरेंग, सी आई ए का पैसा कैसे पायेंग? नानक की बात मानेंग तो राजनीति कैस करेंगे?

साधो, महात्मा के उपदेश महात्मा के लिए ही हात ह। वहा उपदश वाले, वही पाल। हम कोई महात्मा बनने की सजा नही मिली है। लोगा को सत्ता राजनीति करना है, धार्मिक उन्माद पैदा करके चुनाव जीतना है जमीन पर और पापर्टी पर कब्जा करना है, लूट का माल घर मे भरना है दो नबरी धधा करना है। अब महात्मा कहता है—ईश्वर अल्ला तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान! तो महात्मा जी, आप अपने ईश्वर और अल्लाह को लिए रहिए। सन्मति भी आपको ही मुबारक। हम नही चाहिए नुकसानदह सन्मति। अगर तुम्हारे ईश्वर और अल्लाह इधर आय, तो लहूलुहान हो जायेंग। हम निहित स्वार्थों की रक्षा करना ह। आर्थिक लाभ उठाना हैं इसलिए हम धम और सप्रदाय की नफरत की राजनीति करेंग ही। हम उन्माद पैदा करके लोगो को बवकूफ बनायग ही। इतन बड़े-बड़े काम हमे करना हैं और महात्मा हमे उलटे उपदश दता ह।

साधो, इस भावुकता और हाय-हाय का अत नही है। अभी हाय हाय वाली खबर छपी है—पोरबदर जहा के महात्मा गाधी थे, वह गैर कानूनी शराब का सबस बडा अडडा है। इसम क्या गलत है? अरे, वहा महात्मा का पुण्य प्रताप मडरा रहा है। एसे पवित्र वाता वरण मे शराब नही उतारी जायेगी, तो क्या भजन पूजन किया

जायेगा। फिर महात्मा के दरिद्रनारायण का कल्याण सिर्फ सस्ती शराब से हो सकता है। सब करके देख लिया, सारी योजनाएं चला ली, सारे उपदेश दे लिए, मगर दरिद्रनारायण सुखी नहीं हुआ। सुखी होना है वह दो घूट पीकर। तो उसे पिला रहे हैं। महात्मा का ही बाकी काम कर रहे हैं। साधो, इससे भी अच्छी खबर साल भर पहले पढ़ी थी। राजकोट में गाधी जी का जो मकान है वह शराब जुआ और अनाचार का अड्डा बना है। इसमें दुखी होने की बात नहीं है। गाधी जी का एक ढंग से उपयोग हो रहा है। पुलिस उस मकान के सामने से सिर झुकाकर चली जाती होगी या पुलिस वाले भीतर जाकर दो घूट अमृत ले लेते होंगे। महात्मा के घर में शराब पीना कम पुण्य नहीं है। साधो, ये सब लोग—दगा राजनीति वाले, धार्मिक उन्मादी, दो नबरी, शराब के धंधे वाले महात्मा का सही उपयोग जानते है।

और साधो, गाधी शांति प्रतिष्ठान के मालिकों ने तो महात्मा के सारे सत्य के प्रयोग कर डाले। सबसे बड़ा सत्य का प्रयोग यह किया कि गाधी जी का चश्मा किसी पश्चिमी धनपति को बेच दिया। उसकी जगह कबाड़ी की दुकान का चश्मा लाकर रख दिया। बताओ, गाधी जी के उपदेशों पर चलना और किस कहते हैं? अगर गाधी जी का अब बेकार चश्मा दो चार लाख डालर में खरीदा जा रहा हो, तब वह गाधीवादी नहीं, 'महामूर्ख' होगा, जो नहीं बेचेगा।

२३ अप्रैल, १९८४

## झोपडी वालो की बात

साधो, इधर मध्यप्रन्श म एक चमत्कार और हास्सा और दुघटना एक साथ ही हो गय। हुआ य कि मुख्यमत्री न विधानसभा म अचानक घोषणा कर दी कि झोपडी वाले जिस जमीन पर झोपडी बनाकर रहत ह, वह उन्हीं को द दी जायगी। उस पर उनका मालिकाना हक हो जायेगा। यह घोषणा चमत्कारिक थी, आकस्मिक थी। कांग्रेस पक्ष के विधायक भी पहले से ताली बजाने को तैयार नही थे। मुख्य विरोधी पार्टी भारतीय जनता पार्टी के विधायक दस मिनट तक हतप्रभ बठे रहे। व समझ नही रहे थे कि क्या प्रतिक्रिया की जाय। दस मिनट बाद जब बेहोशी टूटी तब भारतीय जनता पार्टी के नता ने कहा कि यह चुनाव स्टट है।

साधो, विरोध नही कर सकत थ क्योंकि शहरा की ६० फीसदी आबादी झोपडा म रहती है, समथन कर नही सकते थे क्योंकि इसम कांग्रेस की प्रतिष्ठा बढती है। य ६० फीसदी झोपडे वाले ही हैं जिनके वोटो से कोई भी सरकार बनती है। भारतीय जनता पार्टी ने स्टट कहा तो दूसरे दिन मुख्यमत्री न एक अध्यादश जारी करा दिया कि जो नगर निगम और नगरपालिका जमीन नही देगी, वह भग कर दी जायेगी। इसस भारतीय जनता पार्टी क चुनाव स्टट के बयान का धक्का लगा। तीसर दिन एक अध्यादश और जारी कर दिया उन सरकारी अफसरा को सजा दने के लिए जा इसम अडगा

डालेंगे। अब स्टट काई कैसे कहे ! बडी अड़चन मे पड गयी, भारतीय जनता पार्टी और जनता पार्टी। साम्यवादी पार्टी तो इसके लिए जुलूस ही निकालती थी और माग करती थी। लेकिन अब भी मैं जिस विपक्षी राजनेता से पूछता हू यही कहता है कि य चुनाव स्टट है। मुश्किल है कि ये झोपडी वालो स नही कह सकत कि यह चुनाव स्टट है। यह सही है कि चुनाव के साल म बहुत सोच-समझकर यह कदम उठाया गया है और यह हर काग्रेसी शासन के राज्य म होगा तब मजबूरी मे गैर-काग्रेसी सरकारें भी यह कदम उठायेंगी।

साधो, अग्रेजी मे कहावत है कि देयर इज मनी ए स्लिप बिटवीन दी कप एण्ड दी लिप' यानी कप और होठ के बीच मे कई फिसलने हैं। इस बात को मुख्यमत्री न या कहा कि—विरोधी इस योजना के अमल मे बाधा डालेंगे। मेरा खयाल है कि समाज म जितनी कल्याणकारी शक्तिया हैं, सबको इस सकटकाल म एक हो जाना चाहिए। विपक्षी एकता की राह देखना अब घातक है।

साधो, हरिजनो को चार पाच एकड जमीन के पट्ट मिलत हैं पर वह उसे कभी जोत नही सकता। गाव मे बडे किसान उसके खिलाफ पटवारी उसके खिलाफ, पुलिस उसके खिलाफ नेता चाहे किसी पार्टी का हो उसके खिलाफ। वह हल चलाने जाये तो बडे भूमिपति के लठैत उसका सिर फाड देते हैं। उसके हाथ म पट्टा ही-पट्टा रहता है और वह खेत मजदूर ही बना रहता है। गाव की जन-कल्याणकारी शक्तिया का यह पुनीत कर्तव्य है जो वह निभाती है।

साधो जहा म रहता हू वहा जमीन की कीमत सत्तर रुपया वर्गफुट है शासन न झोपडी वालो को पचास वर्ग मीटर जमीन देने का निश्चय किया है। जब जमीन इस तरह मुफ्त में बाटी जा रही है तो दीन दयालु गरीबनवाज, परोपकारी लोग कैसे बर्दाश्त करेंगे ?

दो झोपडी वाला की जमीन मिलाकर इमारत तानी जाय तो वह लाखा की होगी। नेता लोग अफसर दो नबरी पैसे वाले, प्रापर्टी डीलर इस पाप को कैसे होन देंगे कि वह जमीन भुक्खड झोपडी वाले के कब्जे मे आ जाय ? ये पुण्यवान लोग अपना कर्तव्य

निवाहेंग नगर निगम और पालिका के सदस्य दूसरे वग के होते ह, वे पूरी कोशिश करेंग कि इस गवहारा वग का जमीन न मिले। अफसर इसम सहयोग देंग अमल की प्रक्रिया म खामी निकाली जायगी। हाईकोट मे रिट होगी, झोपडी वाला का धमकाया जायगा। पूजी वाला के लठैत इन गरीबा के सिर पर सवार रहेंगे। यह सारा पुनीत कत्तव्य निभाया जायेगा।

माधो, सवाल यह है कि इन गरीबा को अधिकार दिलाा मे मदद कौन करगा ? मामले उलझेंगे, इस दफ्तर से उस दफ्तर जायेंग, वकील बीच मे दाव पेच करेंगे आतक का उपयोग होगा, जमीनो पर झूठे दावे किय जायेंग। कौन मदद करेगा इन लोगा की ? ससदीय पद्धति की नैतिकता के हिसाब से निर्वाचित सरकार के निर्णयो का उस पार्टी के कायकर्ता लागू कराते है तो क्या काग्रेस मन कुभकर्णी नीद त्याग सकेगा ? हिलन-डुलने मे उस तकलीफ तो नही होगी, चलते चलते उसे नीद ता नही आ जायेगी क्यो कि काफी साला मे इदिरा जी की जय बोलकर वह जीतता ही रहा है।

माधो, भारतीय जनता पार्टी इसे क्या कहेगी जिसने स्टट कहा है झोपडी वाले स कोई स्वय सेवक यह तो नही कह सकता कि जमीन मत लेना, यह स्टट है। मुझ लगता है कि सबसे अधिक सक्रिय भारतीय जनता पार्टी के सदस्य ही होग। यह पार्टी गरीबा की जमीन छीनन वाली ही है, देने वालो की नही ! मगर उसके कायकर्ता दौड धूप करेंगे और झोपडी वाला से बार-बार कहेंग कि ये सरकार ता बईमान ह। सिफ घोषणा करती है। वे तो हम ह जो सरकार पर दबाव डालकर तुम्हें जमीन दिलवा रहे ह। चुनाव हो जाने के बाद ये फिर कोशिश करेंगे कि वा गरीब बेदखल हो जाय और जमीन उनकी पार्टी के व्यापारी को मिल जाय। कम्यूनिस्ट पार्टी इधर कमजोर है फिर भी वह झोपडी वाला की मदद करगी।

साधा, अब मैं देख रहा हू कि झोपडी वाले मिलत हैं तो खुशी जाहिर करते हैं। उधर शासकीय अधिकारी और कमचारी खाने-पीन

का रास्ता ढूंढ रहे हैं और पुण्यात्मा लोग अपना वक्तव्य करने में लगे हैं।

१ मई, १९८४

## राकेश शर्मा और उदास लोग

साधो, राकेश शर्मा अंतरिक्ष यात्रा से लौट आये और भारत में कई जगह उनका स्वागत हुआ। मगर इससे पहले जब वे रूस में ही थे, एक भारतीय पत्रकार ने उनसे पूछा—क्या आप फिल्मों में काम करेंगे? राकेश शर्मा ने जवाब दिया—नहीं। कतई नहीं। अपने यहां हिंदी वालों को यह लगता है कि अंतरिक्ष में उड़ना, चांद व मंगल पर जाना कुछ नहीं। अगर इसके बाद किसी व्यावसायिक फिल्म के हीरो न हुए भगवान कृष्ण अवतार ले लें तो सबसे पहले उन्हें व्यावसायिक फिल्म बनाने वाले घेरेंगे कि प्रभु एक फिल्म आप पर बना लेने दीजिए। इसमें रासलीला और रुक्मणीहरण का विशेष चित्रण होगा। बाकी आपकी गीता वगैरह फिल्म के काम की नहीं है।

साधो अगर राकेश शर्मा चाहें तो एक बढ़िया रंग बिरंगी बाक्स आफिस व्यावसायिक फिल्म उन पर बन सकती है। रोल व यही करेंगे अंतरिक्ष यान में उड़ने का, मगर वे अकेले ही बंबई के स्टूडियो में बनाये गये अंतरिक्ष यान को लेकर उड़ेंगे। फिल्म में उनकी एक प्रेमिका होगी। वह हठ करेगी कि मैं तुम्हारे साथ चलूंगी। राकेश शर्मा उससे कहेंगे, अभी तुम्हारी ट्रेनिंग इस लायक नहीं है। मगर प्रेमिका अपने पिता की सन् १९३० की खटारा कार को अंतरिक्ष यान चुपचाप बनाती जाती है। जब राकेश शर्मा अंतरिक्ष यान में पृथ्वी का एक चक्कर लगा चुका होता है तो वह देखता है कि एक पुरानी कारनुमा अंतरिक्ष यान पास आता है। वहां उसकी है प्रेमिका, बस दोनों

अंतरिक्ष यान जुड जाते हैं। राकेश शर्मा और उसकी प्रेमिका गाते हैं

चलो दिलदार चलें

चांद के पार चलें।

साधो, फिर चाहे की प्रयोगशाला, चाहे में प्रयाग और चाहे का अध्ययन! दोनों मिलकर गाना गायेंगे।

सितारों से आगे जहां और भी हैं,

अभी इश्क के इम्तहां और भी हैं।

साधो, यह एक ही फिल्म बहुत पैसा दिला जायेगी। दूसरी फिल्म बनेगी तो बैठ जायेगी। लोग एक बेवकूफी को एक बार देखना चाहेंगे। इसलिए हर व्यावसायिक फिल्म में अलग-अलग प्रकार की बेवकूफियां होती हैं। इतनी बेवकूफियां सोचना महान दिमाग का काम है। राकेश शर्मा चाहे तो किसी कपडा मिल के रंगीन विज्ञापन में भी आ सकता है। विज्ञापन में यह होगा कि राकेश शर्मा यह कपडा पहनते रहे हैं इसलिए अंतरिक्ष यात्रा कर सके। एक विज्ञापन जांघिया का देखता हूं जिसमें एक जवान आदमी खास कंपनी का जांघिया पहने है। उसने गाउन के बटन खोल रखे हैं इसलिए जांघिया दिखता है। उसके बगल में एक लडकी है और वह एक आदमी के जबडे पर घूंसा मार रहा है। विज्ञापन का मतलब है कि यह जांघिया पहनते ही आदमी बहादुर हो जाता है। इतना फूहड विज्ञापन है यह कि उस जांघिया वाले को जूते मारने की तबीयत होती है। राकेश शर्मा को कोई संकोच की बात नहीं है। लेफ्टिनेंट जनरल अरोडा, जिन्होंने बांगला देश-युद्ध में जनरल नियाजी से समर्पण कराया था, कपडे के विज्ञापन में आ चुके हैं।

साधो, अब दूसरी तरफ नजर दौडाओ। इधर मेरे शहर में राकेश शर्मा हवाई अड्डे पर थोडी देर रुके थे। तीस-पैंतीस किलोमीटर दूर हवाई अड्डे पर कई हजार स्त्री पुरुष व बच्चे पहुंच गये थे। वे जय जयकार कर रहे थे। आम भारतीय गौरव का अनुभव कर रहा है कि हमारा एक आदमी अंतरिक्ष में गया। राकेश शर्मा के साथ उसके दो साथी रूसी अंतरिक्ष यात्री भी भारत में घूम रहे हैं तो लोग नारे लगाते—हिंदी रूसी भाई भाई।

साधो, इस पूरी घटना से और इस हिन्दी रूसी भाई भाई के नारे से, राष्ट्रपति द्वारा रूसियों को अशोक चक्र देने से काफी लोग दुखी हैं। इनमें ज्यादा राजनीति वाले लोग हैं। रूसी अन्तरिक्ष यान में राकेश शर्मा के रूसी अन्तरिक्ष यात्रियों के साथ जाने में यह महान गौरव हासिल करने पर कांग्रेस सरकार और दोनों कम्यूनिस्ट पार्टियों ने खुशी जाहिर की है और बधाई दी है। इन्होंने इसे राष्ट्रीय गौरव माना है। इनके सिवाय चन्द्रजीत यादव ने और हेमवती नन्दन बहुगुणा ने यह खुशी जाहिर की है। चन्द्रजीत यादव कम्यूनिस्ट पार्टी में रहे और बहुगुणा चरणसिंह के अनुसार के० जी० बी० एजेंट हैं।

साधो बाकी विरोधी पार्टियों के नेता इस कदर चुप व दुखी हैं जैसे यह कोई राष्ट्रीय शर्म की बात हो गयी हो। अटलबिहारी वाजपेयी चरणसिंह जार्ज फर्नांडीस भगवान एन० टी० रामाराव, शरद पवार बाला साहेब देवरस—सब चुप हैं। तुम इनके दुख का कारण भी जान लो। राकेश शर्मा रूस के अंतरिक्ष अड्डे अखानूट से उड़ा। यह शर्म की बात है। जिन महान नेताओं की उदासी का जिक्र मैंने किया है, वे खुश होते अगर वह अमरीकी अंतरिक्ष केंद्र केप केनेडी से अमेरिकी अंतरिक्ष यात्रियों के साथ जाता। वे सब बिचारे दुखी हैं, इस देश का आम आदमी खुश है, इसे गौरव मानता है मगर वे देश भक्त दुखी हैं।

साधो, मेरी इनके प्रति बहुत करुणा है। इनसे जो बन रहा है कर रहे हैं। ये कह रहे हैं कि सब चुनाव स्टंट है। कांग्रेस पार्टी वोट के लिए राकेश शर्मा का प्रोपेगंडा कर रही है। मेरा कहना है कि अगर आप लोग भी इस खुशी में शामिल होते और बयान देते तो अकेली कांग्रेस पार्टी प्रोपेगंडा नहीं करती। वैसे भी राजनीति में जो मौके का फायदा नहीं उठाता है वह बेवकूफ है। साधो अब शैतानी भरी खबरें फैलायी जा रही हैं और दक्षिणपंथी अखबारों में छप रही हैं। एक खबर तो यह कि रवीश मल्होत्रा को अंतरिक्ष में नहीं भेजा गया इसलिए कि उसकी कुछ ट्रेनिंग अमेरिका में हुई थी। दूसरी खबर यह उड़ायी जा रही है

कि राकेश शर्मा को रूसी अंतरिक्ष यात्रियों ने कुछ नही बताया, उसे कुछ नही करने दिया, बस लादकर ले गये थे और लादकर लौटा लाये। उसका खंडन खुद राकेश शर्मा ने हवाई जहाज से उतरते ही किया।

साधो, सच पूछो तो मुझे तो इसमे भी शक है कि अंतरिक्ष यान गया भी था या नही। अटलबिहारी वाजपेयी को सरकार के इस दावे मे शक है कि पुलिस ने एक गुरुद्वारे में घुसकर सोलह अपराधियों को बंदी बनाया, दो सौ तीस स्त्री पुरुष-बच्चों को उनकी कैद से छुड़ाया और हथियार बरामद किये। वे सचाई की जाच के लिए अपने लोगों को पंजाब भेज रहे हैं। मेरा उन्हे सुझाव है कि ऐसा ही एक प्रतिनिधि मंडल रूस भेजें जो पता लगाकर आये कि सच मे अंतरिक्ष यान गया था या सब झूठा प्रोपेगंडा है।

१३ मई, १९८४

# रावी की लडाई नर्मदा पर

साधो, भारतीय जनता पार्टी ने बहुत राजनीतिक बुद्धिमानी का निर्णय लिया है। उसने रावी की समस्या को नर्मदा के किनारे हल करने का निश्चय किया। अटलबिहारी वाजपेयी घबडाये हुए अपने बगले मे बैठे हुए है और डॉक्टरो ने उन्हे पूर्ण आराम की सलाह दी है। पजाब के आतकवादियो ने उन्हे धमकी दी है और लालकृष्ण अडवानी वगैरह प्रधानमत्री से प्रार्थना कर रहे है कि वाजपेयी की सुरक्षा का प्रबध कीजिए—उसी प्रधानमत्री से जिस पर आरोप लगा रहे थे कि वे पजाब मे सिखो पर अत्याचार कर रहे है। उसी प्रधान मत्री से वाजपेयी कह रहे हैं कि पजाब को फौज के हवाले कर दो। कहा तो यह तय था कि अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी मिल कर सरकार बनायेंगे और कहा यह दिन आ गया कि आर्त्तनाद हो रहा है—सरकार, हमारी जान बचाओ।

साधो पूरी ट्रेजडी और कामेडी एक साथ है। कहा पजाब और कहा मध्यप्रदेश! कहा रावी और कहा नर्मदा! मगर भारतीय जनता पार्टी ने जुलाई के पहले हफ्ते मे मध्यप्रदेश मे पजाब समस्या के हल के लिए आन्दोलन करना तय किया है जिसमे एक लाख सदस्य गिरफ्तारी देंगे। साधो तुम कहोगे कि यह तो पागलपन है। इसका अर्थ क्या है? देखो यह पागलपन नही है। बहुत सोच-समझकर बनायी गयी योजना है। यह उसी बडी योजना के अतर्गत है जो वाशिंगटन मे बनी थी।

भारतीय जनता पार्टी वाले सच्चे राष्ट्रभक्त है इसलिए उस

याजना पर चल रहे है। हम राष्ट्रद्रोही हैं, तो आलोचना कर रहे हैं।

साधो, याजना के मुताबिक पूरे देश मे अभी तक हिंदू सिख सघर्ष हो जाना चाहिए था। मगर इनके दुर्भाग्य से वह नही हुआ। भिडरावाले और अटलविहारी दोनो चाहते हैं कि झगडा देश भर मे हो जाय। पर इधर हिंदू और सिख बहुत शात और समझदार है। वे हिल मिलकर रह रहे ह। इस हेल मेल, भाईचारा और शाति को नष्ट करना है। दोनो दल जनता को बेवकूफ मानते हैं और उनसे बेवकूफी कराना चाहते ह। साधो, इस समय सबसे आसान राजनीतिक काम है—सरकार पर दोष लगाना कि वह पजाब समस्या को हल नही कर रही है। असल मे बी० जे० पी० चाहती भी नहीं है कि पजाब-समस्या का हल हो। उसने शुरू से समझौते मे अडगा डाला है। अकालियो को भडकाया है। यह पार्टी चाहती थी कि सीधे सिख और हिंदू बाट बट जाये कांग्रेस का सफाया हो जाय और दोनो की सरकार बन जाय। इधर हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान के हिंदू भी अपनी रक्षक भारतीय जनता पार्टी को माने और वोट दें। मगर पजाब मे अब लागोवाल से नहीं, भिडरावाला से निपटना पड रहा है। और इस समय भिडरावाला ज्यादा बडा फासिस्ट नेता बन गया है। दो तरह के फासिस्टवाद की टक्कर म अटलविहारी को मई मे भी कपकपी आ रही है।

साधो, इसलिए रावी से राजनीतिक स्टट की नहर निकालकर उसे नमदा म मिला रहे है। अटलबिहारी फरहाद होते तो शीरी की शादी उसका बाप उनसे कर दता। साधो, तुम पूछाग कि ये वीर—गिरफ्तारी कसे देंगे ? गिरफ्तारी ता कानून तोडने पर होती है। फिर यहा गिरफ्तार होने से पजाब-समस्या कैसे हल होगी ? साधो, तुम सीधे हो। पजाब-समस्या का हल वे चाहते ही नही है। इस समस्या क हल होने स भारतीय जनता पार्टी का नुकसान है। ये लोग समस्या को विस्तार देना चाहते हैं। जब जुलाई म मध्यप्रदेश मे आदोलन करेंगे ता उत्तेजना तो फैलेगी ही। उस उत्तेजना म वे कुछ घटनाए हिंदू सिख

टकराव भी करवा देंगे। लीजिए साहब, पंजाब के बाहर हिंदू-सिख भेद की आग फैला दी। अब यह आग भारत के दूसरे भागों में भी फैल सकती है। इस तरह एक राज्य की समस्या कई राज्यों की समस्या बन जायेगी। इसका राजनीतिक लाभ भारतीय जनता पार्टी लेगी। मगर इस देश का, इस राष्ट्र का क्या होगा, इससे कोई मतलब इस पार्टी को नहीं है।

साधो, मगर रावी को नर्मदा में मिलाने का असली उद्देश्य मैं बताता हूं। मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का संगठन अच्छा है। कुछ उप चुनाव भी उसने जीते हैं। वह इस योजना से काम कर रही है कि अगले चुनाव में उसे विधानसभा में बहुमत मिले और उसकी सरकार बने। उसे आशा भी है। तो यह जो जुलाई में पंजाब के नाम से आंदोलन होगा, वह वास्तव में अगले चुनाव के लिए प्रोपेगंडा है। इसमें उपद्रव होंगे, कांग्रेस सरकार को गालियां दी जायेंगी। जहरीला वातावरण बनाया जायेगा। दंगे भी कराये जा सकते हैं। यह सब वोट लेने के लिए होगा। पंजाब के लिए नहीं। साधो, इस वक्त जब इनके नेता भिंडरावाला के नाम से कांपने लगे हैं, इन्हें तुम लोग शांत मध्यप्रदेश में हिम्मत दिलाओ।

३ जून, १९८४

## स्त्री अफसर और संस्कृति वाले

साधो, या तो मेरा विश्वास है कि जो गधा जहां चर रहा है उसे वहां चरने दो। और यह भी नीति ठीक है—राम की चिरिया, राम के खेत खाओ री चिरिया भर-भर पेट। इसलिए सरकारी शब्द 'एनक्रोचमेंट' 'अतिक्रमण' वगैरह मुझे पसंद नहीं हैं। गधे के पास जाकर कोई सरकारी अधिकारी उससे कहे कि तू जमीन पर अतिक्रमण कर रहा है, तू यहां से निकल जा, तो वह गधा दुलत्ती मारेगा अधिकारी के मुंह पर और फिर चरने लगेगा। यही उसका कानून है यही भूमि संबंधी संहिता है, यही गधा जाति की संस्कृति है—वह दुलत्ती मारकर रेंकने लगेगा। इसका बुरा नहीं मानना चाहिए। आखिर वह गधा है। अपने चरित्र और संस्कृति के हिसाब से ही चलेगा।

साधो, तुम पूछोगे, गुरु, आज गधे क्यों याद आ गए? साधो, बात यह है कि मुझे भी वह पत्र मिला है जो मध्यप्रदेश शासन ने बुद्धिजीवियों और समाजसेवियों के नाम जारी किया है। इस पत्र में लिखा है कि सरकार ने कानून बनाया है कि जो गरीब आदमी जिस जमीन पर झोपड़ी बनाकर रहता है, वह जमीन उसी की हो जायेगी। पचास वर्ग मीटर तक जमीन का पट्टा उसे मिल जायेगा। पत्र में साफ लिखा है कि बिचौलिये, निहित स्वार्थी आदि इसमें अड़ंगे डालेंगे। इसलिए आपसे अनुरोध है कि गरीबों को आवास भूमि देने के इस पुण्य कार्य में सहयोग करें।

साधो, मैंने अपने घर के पास के झोपड़े वालों को बुलाकर कहा—

अब जमीन से चिपक जाओ। छोडना मत। कोई किराया माग या घूस मागे या खाली कराने को गुडे भेजे तो घर के सब लोग जमीन पर लेट जाओ। एक आदमी मेरे पास आओ। मैं तुम्हे चिट्ठी लिखकर पुलिस और मजिस्ट्रेट के पास भेजूगा। यह मैंने अपना वक्तव्य दिया। अखबारो मे लिखकर भी सहयोग दे रहा हू। मै जानता हू, मामला सरल नही है। बहुत उलझाव है। यहा सत्तर रुपया वर्गफुट जमीन का रेट है। गिद्ध ऐसी बढिया कीमती जमीन चिडियो को कैसे ले लेने देंगे! बाज झपट्टा मारेंगे इन चिडिया पर!

साधो, सबसे बडी चिंता भारतीय जनता पार्टी को है। पहले से इसके नेताओ ने सरकार के इस फसले को आदत के मुताबिक चुनाव स्टट कह दिया। यह आदत ऐसी है कि इस गर्मी मे कही प्याऊ खोल दी जाय, तो यह भी चुनाव स्टट है। अगर मुख्यमत्री वाल क्टाक्टर सदन मे आ जाय तो यह भी चुनाव स्टट। मगर बाद मे इन लोगो ने सोचा—अगर इसे स्टट कहा तो झोपडी वाले नाराज हो जायेंगे। चुनाव सामने है। इसलिए इस तरकीब से चलो कि गरीबो को तो यह दिखाओ कि हम तुम्हे जमीन दिलाने के लिए प्राणो की बाजी लगा रहे हैं। मगर चुपचाप कोशिश यह करो कि इन्हे जमीन न मिले। पार्टी मे बहुत बिचौलिये है जो झोपडी वाला से पैसा वसूलते है। फिर यह जमीन तो वे खुद हडपने की तैयारी मे है। यह सकस के उस्ताद का काम है। एसी स्त्री का कमाल है जो वास्तव मे छिनाल हो, मगर पतिव्रता के रूप मे पूजी जाती है। ऐसा कमाल भारतीय जनता पार्टी कर लेती है।

मगर साधो इसी से लगी दूसरी समस्या आ गयी—अतिक्रमण हटाने का हुक्म हो गया। सब जानते है कि सरकारी नगर निगम की नजूल की जमीन पर सबसे ज्यादा कब्जा भारतीय जनता पार्टी वाले ही किये हैं। अब सयोग यह कि अतिक्रमण हटवाने वाली नारी डिप्टी कलेक्टर है। वह काफी साफ और सख्त मानी जाती है।

साधो, अब कामेडी देखो। स्त्री अफसर ने अतिक्रमण हटाने के सख्त आर्डर दे दिये और पुलिस की देख रेख मे अतिक्रमण हटाये जाने

लगे। भारतीय जनता पार्टी के नेता स्त्री अफसर के पास गये। पटाने की कोशिश की। वह पटी नहीं। धमकी दी कि आगामी सरकार हमारी बनेगी। वह डरी नहीं। इस दौरान एक अतिक्रमण हटाते समय परिवार के एक वृद्ध का हार्ट फेल हो गया। हार्ट फेल वैसे भी होता। पर इस पार्टी के नेताओं ने उसे अतिक्रमण से जोड़ा। बूढ़े की आत्मा की भी फजीहत की।

साधो एक जगी ग्रामसभा पर लो। अब एक बात समझ लो — भारतीय जनता पार्टी के नेता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से चरित्र का शिक्षण लेकर आते हैं। ये हिंदू संस्कृति में दीक्षित होते हैं। इस संस्कृति में नारी का बड़ा सम्मान है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता। इस संस्कृति में पराई स्त्री को माँ या बहन माना जाता है, जिन्हें स्त्री संबंधी अपराधों में जेल में होना चाहिए, पर वे सदन की शोभा बढ़ाते हैं।

मगर साधो, आखिर संस्कृति वाले लोग हैं। इन लोगों ने ग्राम सभा में उस युवा स्त्री अफसर का नाम नाम ले लेकर इतने पवित्र वचन बोले हैं, कि सुनने वालों ने शर्म से सिर झुका लिए। गंदी-से-गंदी गालियां, संभोग के शब्द सम्बन्ध पर सोचकर बलात्कार करने की धमकी—उस स्त्री के लिए जो संस्कृति के अनुसार उनकी बहन होती है। वह विवाहिता है। तो जिन अंगों का नाम लिया, वे उसके खूब देखे और भोगे हैं।

साधो, एक दैनिक पत्र ने बड़े दर्द के साथ लिखा है कि यह क्या पागलपन है कि एक इज्जतदार स्त्री के बारे में ये नेता सभा में इतना गंदा बोले जितना रंडियों के दलाल भी नहीं बोलते। साधो, ये सब परम पवित्र वचन टेप हो गये हैं। कैसेट बन गये हैं। सुनकर लोग थूकते हैं। मगर बेशरम के खास स्थान पर पेड़ खड़ा हो जाय तो वह कहता है, अच्छा है। छाया हो गयी। ये लोग खुद अपने गंवार चेलों को वे कैसेट सुनाते हैं कि देखो, तुम्हारे नेता कितने जोरदार हैं। यह

संस्कृति है। प्राणीशास्त्र कहते हैं कि सूअर और कुत्ते भी गाली नहीं बकते। अब तुम समझ गये होगे कि मैंने शुरू में गधे की संस्कृति क्या बतायी।

१० जून, १९८४

## मरहम लगाओ

साधो, स्वर्ण मंदिर में फौज के जाने से सरकार भी दुखी है, खुद फौज दुखी है, हम साधु दुखी हैं और आमतौर पर सब भारतीय दुखी हैं। मगर सवाल यह है कि फौज को बुलाया किसने ? किसके निमंत्रण पर फौज वहां गयी ? किन लोगों के कारण फौजों को वहां जाने पर मजबूर होना पड़ा ? इसका सीधा जवाब है—स्वर्ण मंदिर पर जिन्होंने कब्जा कर लिया था और जिनके हुक्म से पंजाब में उन्मादी सिख युवक चाहे जिसकी हत्या कर रहे थे—उन नेताओं ने फौज को बुलाया। जो यह मानने लगे कि इस देश में रहकर भी हम इसके नियम कानून, संविधान नहीं मानेंगे, हम इस देश की सरकार को भी नहीं मानते, हम पुलिस को नहीं मानते, हम न्यायालय को भी नहीं मानते—इन लोगों ने फौज को बुलाया। इनके नामों के निमंत्रण पर फौज गयी और इतने फौजी मारे गये, जितने भारत पाकिस्तान युद्ध के एक मोर्चे पर मारे जाते हैं। हरमंदिर साहब से गोलियां चलती रहीं और फौज के सिपाही मरकर या घायल होकर गिरते रहे। एक गोली भी उन्होंने नहीं चलायी क्योंकि उन्हें स्वर्ण मंदिर की पवित्रता का खयाल था। अगर यह पवित्रता का खयाल नहीं होता, तो कुछ तीस मिनट का काम था सफाया करने का। फौज के पास बड़ी तोपें और टैंक भी थे।

साधो, अगर किसी मंदिर में भक्त भगवान राम की प्रार्थना करने जायें और उनकी गर्दन काट ली जाय तो वह मंदिर नहीं, बूचड़खाना हो गया। अगर मस्जिद में मुसलमान नमाज पढ़ने जाय और उसे छुरा

घुसड़ दिया जाय ना यह मस्जिद नहीं रही। वह मक्तल हो गया। अगर गुरुद्वारा में सिख मरवा टकने जाय और उस मानी से उड़ा दिया जाय तो वह गुरुद्वारा यहा रहा? वह कत्लगाह हो गया। उसकी क्या पवित्रता? उसकी पवित्रता तो उन्ही सता और नताओ ने नष्ट कर दी जो बदूकें बम, बारूद लिए बैठे ह और पवित्रता की आड म छिपे रहकर हत्या करवा रह ह। साधो, अब तो सिख भी स्वर्ण मंदिर जाने म डरत थे। वहा सिख भी मार डाले जाते थ। कई शरीफ धार्मिक सिखो ने अखबारो में बयान दिय कि अब तो हमे गुरुद्वारा जात भी डर लगता है। किसी को भी तो ये लोग मार डालत हैं। साधो! इन लोगो ने जो सत और नता कहलाते थे, स्वर्ण मन्दिर को अपवित्र कर दिया था। जो सिख अब पवित्रता भग के नाम पर काली पगडी पहन रहे है काले पट्टे लगाये है उन्ह तब काली पगडी पहनना था। शोक दिवस वे ही थे। मगर तब य चुप थे।

साधो, सिखो का इतिहास है कि उन्होने कमजोरो दीनो, पीडितो और बेकसूरो पर अत्याचार करने वाले का सिर काटने के लिए हमेशा तलवार निकाली। वही सिख बस रोककर बकसूर मुसाफिरो को गोली स भून रहे थे। स्त्री और बच्चो को भी नही छोडते थे। राह चलत आदमी को गोली मार दत थे। गाव के चौपाल पर बैठे किसानो को गोली से भून देत थे। एक स्त्री को गोली मार दी जिसकी गोद म नौ महीने का बच्चा था। तब सिखो न शोक क्या नही मनाया? तब काली पगडी क्यो नही पहनी? तब क्या नही गुरुद्वारो में प्रस्ताव पास करके इनकी निंदा की? क्या सच्चे सिख इस भेडिया जसे कुकम को धम और पथ की रक्षा क लिए उचित मानत थे? पजाब के बाहर जो ये काली पगडी बाधकर विरोध प्रकट कर रहे ह अगर उनके साथ दूसरे लोग पजाब सरीखा करने लगे तो क्या वह उचित होगा? जो पजाब में धार्मिक और पवित्र हिंसा है वह मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश में धार्मिक और पवित्र क्या नही होगी? है कोई तक? तर्कों को तो दफना दिया गया और पागलपन तक बन बैठा।

साधो भारत सरकार क्या करती? क्या इंदिरा घोषणा कर देती

कि इस देश में कोई सरकार नहीं है ? कोई कानून नहीं है ? कोई संविधान नहीं है ? अब हर राज्य में जो जिसकी चाहे हत्या करे । अब हम हत्या या किसी भी अपराध की छूट हर भारतीय नागरिक को देते हैं । अगर ऐसा होना पंजाब में जायज है तो बिहार और मध्यप्रदेश में भी । और अगर इसे पंजाब में रोकना धर्म पर हमला है तो बाकी भारत में रोकना भी धर्म पर हमला है । यह तर्क की बात है । क्या यह तर्क उपद्रव पर उतारू सिक्खों की समझ में आता है ? अगर आता है तो अपने भविष्य पर गौर करें ।

साधो, हम इन शोक मना रहे उत्तेजित सिख भाइयों से कहते हैं कि जो यह हो रहा है, उसकी योजना अमृतसर में नहीं, वाशिंगटन में बनी है । यह गुप्त योजना गुप्त नहीं, सी० आई० ए० की है । यह अमेरिका के अखबारों में भी छप चुकी है । उस योजना में यही है—सारे भारत में हिंसा और अराजकता फैलाना, क्षेत्रीयता को बढ़ाना, देश के टुकड़े-टुकड़े कर देना । इसके लिए अरबों डालर गुप्त रूप से इस देश में आ रहे हैं । विदेश में खालिस्तानी नेता डॉ० जगजीतसिंह वगैरह अमेरिकी पैसा खा रहे हैं और यहां के सिखों को भड़का रहे हैं । सारा षडयंत्र पाकिस्तान और चीन के माफत हो रहा है । जम्मू में सिखों ने नारे लगाये—खालिस्तान जिंदाबाद ! पाकिस्तान जिंदाबाद ! दोनों एक साथ जिंदाबाद !

साधो अब जनरल बरार कहते हैं कि स्वर्ण मंदिर अहाते में बिल्कुल आधुनिक विदेशी हथियार मिले । वही हथियार मिले जो अमेरिका ने अफगान विद्रोहियों को पाकिस्तान के माफत दिये हैं । यह बात कोई राजनेता नहीं बोला । राजनेता झूठ भी बोल जाता । मगर यह बात एक सीनियर लेफ्टिनेंट जनरल ने कही है । इसलिए सही है । सवाल है कि अकाली नेता और संत भिंडरवाला हमारे देश के दुश्मनों से मदद क्या ले रहे थे ? उनके दिये हथियारों का क्या इस्तेमाल कर रहे थे ? कोई भी सिख अपनी आत्मा पर हाथ रखकर अपने आपसे पूछे कि क्या यह देशभक्ति है ? अगर नहीं है तो क्या है ? कुछ और है ? इस कुछ और की सजा दुनिया के किसी भी देश में मगर

होती है ?

साधो, हम तो सबका भला चाहते है। सिख भाइयो से कहते हैं कि दिमाग को ठडा करके सोचो। पजाब का तो आधा-गा नाश वे लोग कर चुके थे। उसे ठीक करना है। मगर बाकी देश में अमन चन, भाई चारा होना चाहिए।

साधो, साफ बात यह है कि ये लोग पाकिस्तान और चीन की मदद से बागलादेश जैसा करना चाहते थे। पूरी योजना १६७१ के बागला देश सघष की थी। उसी मेजर जनरल ने, जिसने बागला देश में मुक्तिवाहिनी को प्रशिक्षण दिया था सिख युवको की भी मुक्तिवाहिनी बनायी थी। बहाना बनाकर पाकिस्तान और चीन उनकी मदद के लिए घुसते। यह योजना नाकाम कर दी गयी। इस पर सिखो को, अगर वे भारत के नागरिक है शोक मनाने और काली पगडी पहनने की जरूरत नही है। ऐसा करना अपनी वफादारी पर शक पैदा करना होगा। कभी कभी बुद्धि से भी काम लिया जाता है।

१६ जून, १६८४

## चुनाव के चैंतुआ चले

साधो, गाँव मे जब हम लोग रहते थे, तब एक घटना हो गयी थी। एक स्त्री लछमी पडोस मे रहती थी। उसका पति एक औरत को लेकर भाग गया, मगर गाँव मे यह प्रचार कर गया कि लछमी बदचलन है। तब अडोस पडोस की औरतें बैठती तो उनमें बात होती—कहना, जैसी लछमी के साथ हुआ वैसी भगवान कोई के साथ न करे। दखो, मरद की जात। खुद तो एक छिनाल रखे था और बदनाम कर गया वेचारी लछमी को। लछमी ऐसी अच्छी है। दूसरे आदमी की तरफ आख उठाके नही देखती। तब कोई धीरे से कहती—काकी, तिरिया चरित्तर को भगवान भी नई जाने। क्या पता लछमी बाहर कछु और भीतर कछु और होय! दूसरी औरतो ने भी कहा—कहा, लछमी के रग-ढग कभी-कभी कछु अच्छे नही लगत। बजार म इत्ती दुकान है पर लछमी उस छैल छबीले रामकिसन सेठ की दुकान पै ही क्यो जाती है? एक ने कहा—अरी जीजी, बडी देर तक उसके साथ हसी ठिठोली करती है। उसका दिया पान खाती है। वे औरतें जो लछमी के पक्ष में बात शुरू करती थी, इस निष्कर्ष के साथ उठती थी कि लछमी में गडबड है।

साधो, यह घटना मैंने तुम्हें इसलिए सुनायी कि आजकल जनता पार्टी अध्यक्ष चन्द्रशेखर की हालत इस लछमी की तरह ही हो रही है। उनकी पार्टी के नेता यह बदनामी करके पार्टी छोड रहे हैं कि चन्द्रशेखर भ्रष्ट हैं। उसने बिहार में विधायक खरीदने के लिए तीन लाख रुपए

दिए थे। साधो, तीन लाख में कोई बदनाम हो जाय, यह बड़ी हँसी की बात है। हरियाणा में ऐसे महापुरुष हैं जो पाँच लाख की दर से बीस विधायक थोक खरीदते रहे हैं। मगर गरीब पार्टी और गरीब चन्द्रशेखर। वही हाल हुआ कि गाँव की मनचली से गाँव का रसिया मेले में कहे—आज रात को मिलेगी ? वह जवाब देती है—हाँ, न पेड़ा खिलाय न अँगूठी पहनाय—और कहे कि रात को मिलेगी ! रसिया उसे आधा किलो पेड़े खिलाता है और निकल की रंगीन अँगूठी पहना देता है। देखने वाली देख लेती है और प्रचार शुरू—मैंने अपनी आँखों से देखा। वह हँस हँस के पेड़े खा रही थी उसके। बड़ी बेशरम है। अरी दस ठो पेड़ा में बिक गयी !

साधो, आज चन्द्रशेखर आधा किलो पेड़े और निकल की अँगूठी में बिकी बदचलन औरत जैसे हो गए हैं। साधो जिन सुब्रह्मण्यम स्वामी ने यह प्रचार किया कि मैंने इसे पेड़े खाते और ठिलठिल करते देखा वे स्वामी खुद ऊँचे रेट की राजनीतिक कॉलगर्ल हैं। वे नकद लेती हैं और कम से कम थ्री स्टार होटल में गरीर देती हैं। चन्द्रशेखर बलिया के देहाती हैं तो छबीली थोड़े में फँस गयी। सुब्रह्मण्यम स्वामी हारवर्ड की पढ़ी सी० आई० ए० से आसन सीखी, अमेरिकी स्टेट डिपार्टमेंट की प्रतिष्ठित कॉलगर्ल हैं। उनकी ग्राहकी ऊँची है। वह जनरल जिया के पास चीन के प्रधानमन्त्री के पास इसराइल के प्रधानमन्त्री के पास जाती हैं। ये दो टाइप हुए। तीसरा टाइप इन पार्टियों में उनका है जिनका तो रुपये में अच्छे होटल में नहीं मोटर गैरेज में ही ले जाओ। *साधो सिद्धांतविहीन और केवल सीट तथा सत्ता के लिए जो पार्टियाँ* चलती हैं उनमें राजनीतिक कालगर्ल होती हैं बाजार में बैठी खुली कन्याएँ होती हैं और एक से ज्यादा आदमियों को फँसाए बैठी मनचली होती हैं।

साधो, जनता पार्टी छोड़कर बहुत लोग चले गए और जा रहे हैं। इनके नेता हैं समाजवादी लोग। इनकी रैली का उद्घाटन चरणसिंह ने किया। उसी चरणसिंह को ये समाजवादी यह कहकर छोड़ आए थे कि तानाशाह, अवसरवादी और सिद्धांतहीन हैं। ये समाजवादी उसी

चरणसिंह के पास लौट रहे हैं। छोड़ देने और फिर कर लेने में कई औरतें कोई सकोच नहीं करती। नीची जातियों में इस मामले में कुछ शब्द प्रचलित है—'उसके घर बैठ गयी' और फिर 'छोड़ छुट्टी ले ली' और 'फिर कर लिया।' इस स्तर की राजनीति हो गयी है।

साधो, चंद्रशेखर के बारे में मुझे तभी डर पैदा हो गया था, जब उन्होंने कन्याकुमारी से दिल्ली तक पैदल यात्रा करके दूसरे 'लोकनायक' बनना चाहा था। तभी कुछ जनता पार्टी नेता एतराज उठा रहे थे कि चंद्रशेखर ने पार्टी की मंजूरी नहीं ली। व्यक्तिगत निर्णय ले लिया। फिर चंद्रशेखर गलत दिन दिल्ली में आये। उन्हें दो दिन हरियाणा में रुककर आना था। इस बीच कपिलदेव इंग्लैंड में प्रूडेंशल कप जीत लेने। मगर जब दिल्ली में चंद्रशेखर ने प्रवेश किया तब वहां कपिलदेव की जय हो रही थी। ये समझे थे मेरी जय होगी। लोग टेलीविजन से चिपके बैठे थे, तो इनकी रैली भी नाकामयाब हो गयी। कपिलदेव ने चंद्रशेखर को एल० बी० डब्ल्यू० कर दिया।

साधो तभी से जनता पार्टी में खींचतान मची है। बिहार की घटना ने साफ टूटन की तैयारी कर दी है। पुराणपुरुष मोरार जी डॉ० स्वामी के समर्थक हैं। ये जो निकलकर चरणसिंह के पास जा रहे हैं, सो इस आशा में कि चौधरी हमें सीट दे देगा। मगर चौधरी का समझौता भारतीय जनता पार्टी से है, तो इन्हें अतत संघ दक्ष' करना पड़ेगा। अभी ये जरूर शेखी बघार रहे हैं कि हम चौधरी को अटलबिहारी से काट लेंगे।

साधो, चिंता की बात नहीं है, पार्टियां सब रहेंगी। ये धीरे धीरे सगे भाई हो जायेंगे, क्योंकि इन्हें सिद्धांत की कोई झंझट नहीं है। कोई पार्टी मरने लगेगी, तो अखबार एक हफ्ते में उसे आल इंडिया पार्टी बना देंगे। वे जगजीवनराम की पार्टी का अपने शहर में एक भी आदमी का नाम नहीं बता सकते। मगर उनकी कांग्रेस (जे) को अखबार आल इंडिया पार्टी बनाये हैं। सबका भला होगा। चंद्रशेखर का भी भला होगा और जाज का भी।

साधो, राजनेताओ और उनके अनुयायियो के इस दल से उस दल में और उस दल से तीसरे दल में आने-जाने में कुछ अजीब नही है। चुनाव राजनीति के चैत का मौसम है। चैत मे समूह-के-समूह फसल काटने वाले यहा से वहा जाते हैं। इन्हे 'चैतुआ मीत' कहते हैं। जब तक एक जगह फसल काटते रहते हैं, तब तक साथ रहते हैं और दोस्त रहते हैं। यहा का काम खत्म होने पर यहा वहा चले जाते है—

खाई रोटी गाये गीत
जे चल दिये चैतुआ मीत

साधो, ये सब राजनीतिक वाले सिर्फ 'चैतुआ मीत' हैं।

२४ जून, १९८४

# विरोध का फार्मूला

साधो, भारत म जैसा अदभूत राजनीतिक विपक्ष है वैसा दुनिया के किसी लोकतत्र मे नही। मैं कल्पना नही कर सकता कि ऐसा विराध पक्ष कभी भविष्य मे कही होगा भी। भारत मे एक ता वामपथी विराध पार्टिया हैं। इनका आधार एक विचारधारा, सिद्धात और कायक्रम है। मैं इनकी बात नही कर रहा हू। मैं बात कर रहा हू, गैर वामपथी विरोधियो की जिनका सिद्धात है— राम की चिडिया राम के खेत, खाओ री चिडिया भर भर पेट। चिडिया तो हैं राम के खेत भी हैं मगर फसल नही है।

दक्षिणपथी पार्टियो का काम बहुत ही आसान है। एक तो इनमे से अधिकतर मैं एक व्यक्ति होता है जो पहले मत्री या मुख्यमत्री रह चुका हो। पता नही उसने किस तरह इतना धन कमाया होता है कि अकेली दम पर पार्टी चला लेता है। एसी पार्टिया बहुगुणा, जगजीवनराम व शरद पवार की हैं। ये सब अगर इदिरागाधी द्वारा मत्री या मुख्यमत्री बना दिये जाते तो ये पार्टिया बनती ही नही। अब जनता पार्टी व लोकदल जसी पार्टिया—इनके एक तिहाई सदस्य हमेशा गतिवान रहते हैं। आज लोकदल म हैं तो कल जनता पार्टी म और परसा फिर लौटकर लोकदल म। फिर किसी प्रदेश म एक ही पार्टी के दो नेताओ म नही पटी तो दोना अलग अलग पार्टिया बना लेते है।

साधो, दूसरे लोकतात्रिक देशो मे विरोध पक्ष म मजबूत सगठन होता है। जैस इग्लड म कजरवेटिव लेबर पार्टियां हैं। इनके अपने घोषणापत्र हैं कायक्रम हैं। इनमे कभी नही सुना कि लेबर पार्टी और

कजरवेटिव पार्टी मे आग राम—गया राम हुआ हो। वहा विरोध पक्ष बहुत गभीर होता है। राष्ट्रीय पक्ष पर गैरजिम्मेदारी से वर्ताव नही करता। सरकार के हर काय का विरोध नही करता, हर चीज का दोष सरकार के माथे पर नही मढता। जैसे कजरवेटिव पार्टी की सरकार है तो लेबर पार्टी के विशेषज्ञ उसकी अथ नीति, विदेश-नीति, उद्योग नीति आदि का गहरा अध्ययन करेंगे। साथ ही अपने विचार रखेंगे। लेबर पार्टी की एक 'शेडो केबिनेट' होगी यानी आगामी चुनाव जीतने पर कौन किस विभाग का मत्री होगा, यह पहले से तय होगा। इतनी तैयारी के साथ राष्ट्रीय हित ध्यान मे रखकर लेबर पार्टी कजरवेटिव सरकार की आलोचना ठोस मुद्दो पर करेगी।

साधो यह कितना कठिन काम है। पार्टी को सगठित रखो, विचार करो अध्ययन करो, नीति बनाओ सिद्धात के अनुसार चलो। कितनी बडी झझट है। हमारे भारत म विरोध पक्ष ने कितना सरल रवया अपना लिया है। एक तो पच्चीस विरोधी पार्टिया हैं इनम हर एक का छोटा, मझोला, बडा नेता—सिफ सीट पाने की फेर म लगा रहता है। कभी इस पार्टी से पटाई, कभी उस पार्टी से पटाई। सिद्धात कायक्रम नीति—सब मिलाकर सिफ सीट होती है।

अब इन विरोधियो की सरकार की आलोचना भी कितनी सरल होती है। इनमे न कुछ अध्ययन करना पडता है न विचार, कोई मेहनत ही नही पडती। बुद्धि को तकलीफ देने की जरूरत नही पडती देश के भले-बुरे का विचार करने की भी झझट नही है। सीधी लाइन है। जो कुछ इदिरा सरकार करती है उस सबको गलत कहो और हर समस्या की जिम्मेदारी इदिरा गाधी के सिर पर रखते जाओ। कितना आसान काम है। भूकप कहीं आ जाये तो फौरन बयान जारी करेंगे कि इदिरा गाधी ने भूकप कराया इतना विनाश किया। नदियो म बाढ म तबाही हो तो सीधा आरोप—इदिरा गाधी के कारण बाढ आयी और इतना विनाश हुआ।

साधो पजाब-समस्या को लो, इस बारे म विरोधी लोग बिलकुल

स्पष्ट है। वे कहते हैं कि पंजाब की समस्या इंदिरा गांधी ने पैदा की। अकालियों को दोष नहीं देते, बात आगे बढ़ी तो समझौता वार्ता चलने लगी, विरोध पक्ष ने अकालियों को उत्तेजित करके कोई समझौता नहीं होने दिया मगर बयान दिए—इंदिरा गांधी समझौता करना ही नहीं चाहती—समझौता नहीं करना इसमें वे राजनीतिक लाभ देखती हैं। इस बीच हत्यारे आतंकवादियों के गिरोह के नेता भिंडरावाला सबसे ऊपर आ गया और पंजाब में हत्याएं होने लगीं। तब इन्हीं विरोधियों ने बड़ी समझदारी की बात की कि भिंडरावाला को इंदिरा गांधी ने बनाया है और वह उनका एजेंट है। क्या सच है, क्या झूठ—सब खुल जायेगा मगर मैं समझ के आदमी से पूछता हूं—क्या किसी देश का प्रधानमंत्री इतना मूर्ख होगा कि खुद हत्यारों और आतंकवादियों की फौज बनवाए? अपने ही देश के भीतर और इस प्राइवेट आतंकवादी फौज का किसी को नेता बनाये? ऐसा कोई पागल और मूर्ख प्रधानमंत्री कर सकता है? वह आतंकवादियों की फौज प्रधानमंत्री के खिलाफ भी आगे चलकर कार्यवाही कर सकती है। इंदिरा गांधी बहुत चतुर, चालाक व समझदार प्रधानमंत्री हैं। भिंडरावाले की हथियारबंद फौज वे खुद बनवायंगी, ऐसी नासमझ प्रधानमंत्री उन्हें कोई नहीं मानेगा।

साधो, जब हत्याएं होने लगीं, बैंक लूटने लगे और विरोध के नेता मारे जाने लगे तब इन नेताओं ने चिल्लाना शुरू किया कि इंदिरा गांधी कठोर कदम नहीं उठा रही हैं, उन्हें कठोरता से आतंकवादियों को कुचल देना चाहिए। अटलबिहारी वाजपेयी, जिन्हें जान से मार डालने की धमकी मिल रही थी—बार बार चिल्लाने लगे कि स्वर्ण मंदिर में सेना भेज देना चाहिए। यही अटलबिहारी वाजपेयी कुछ महीने पहले कहते थे कि इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकार की पुलिस पंजाब में अत्याचार कर रही है।

साधो, स्वर्ण मंदिर में सैनिक कार्यवाही हो गयी और पंजाब में फौज छिपे आतंकवादियों को निकाल रही है। मगर उन्हीं अटलबिहारी वाजपेयी की पार्टी की मांग है कि पंजाब में सेना भेजने की उच्चस्तरीय

जाच हो। यह सब मामला कितना हास्यास्पद है। पिछले पाच छ महीनो म इस विरोध पक्ष के कारनामे और बयान पर तो बच्चे को भी हसी आ जायेगी।

अगर साधो, इस पर ध्यान दो कि भारत म विरोध पक्षी होना कितना सरल है कितना सीधा फार्मूला है। अब असम का लो। यह भी बहुत सरल मामला है। असम समस्या इदिरा गाधी ने पैदा की, यह बात ये कहे जायेंगे। दूसरे लोग सब जानते हैं कि असम-समस्या विदेशी एजेंटो, खास कर चीनी एजेंटो, सी० आई० ए० मिशनरियो और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ ने पैदा की। असम आदोलन के नेता दिल्ली मे प्रधानमत्री से समझौता करके निकलते थे और विरोध के नेता उनसे दूसरे दिन बयान दिलवा देते थे कि हमारा कोई समझौता नही हुआ, हम आदोलन चालू रखेंगे। ये नेता बयान देते थे कि आदोलनकारी तो समझौते को तैयार थे परतु इदिरा गाधी समझौता करना नही चाहती। साधो, जरा सोचो कि क्या कोई प्रधानमत्री अपने बारे म यह राय बनने देगा कि उससे आतरिक समस्या हल नही हो रही ?

साधो, कितना आसान काम है भारत म इस दक्षिणपथी विरोध पक्ष का! दुनिया के दूसरे लोकतत्रो म विरोधी राजनेता अगर गभीर हैं, सोचते हैं, समस्या का हल खोजते ह, अध्ययन करते हैं, देशहित का खयाल रखते ह तो फालतू मेहनत करते हैं। बेवकूफ लोग हैं। उन्हे भारत आकर ट्रेनिंग लेनी चाहिए।

८ जुलाई, १९८४

# 'बेशरम' के पौधे

साधो, हजारो गाव जहा इस मौसम मे बह जाते है, वहा हमारे साथ कोई ज्यादती उस रात नही हुई जब मुहल्ले के मकानो मे श्राधी रात को पानी भर गया। बस, जरा-सा फर्क है। हमारे साथ जो हुआ, उसकी जिम्मेदारी प्रकृति पर नही है— उन पर है जिन्हे ऐसा नही होने देने की तनख्वाह मिलती है। कुछ जिम्मेदारी हमारी भी है। उस रात करीब दो बजे हल्ले से नीद खुली तो देखा, कमरे मे पानी भरा है श्रौर हम पलग पर लेटे है। भागने का सवाल ही नही था। पक्के मकान है। थोडी देर बाद पानी निकल जाता।

साधो यह मुहल्ला सिविल लाइस सरीखा है। तरह-तरह के टैक्स कार्पोरेशन श्रौर सरकार लेती है हमारी हिफाजत के लिए। मगर सारे श्रधिकारी श्रौर कर्मचारी हमारे लिए बठे हुए सिर्फ प्रार्थना करते हैं

जय जगदीश हरे

भक्त जनो के सकट पल मे दूर करे !

साधो, इसी प्रार्थना का प्रताप है कि सडको पर चौथाई शताब्दी से गहरे गड्ढे देख रहा हू। ये गड्ढे शायद बाईसवी शताब्दी मे भरे जायेंगे। लडकियो के कॉलिज के सामने की सडक पर गड्ढो का खास इतजाम किया गया है। उद्देश्य यह है कि लडकियो की साइकिलें इनमे गिरें श्रौर गुडे उन्हें श्रासानी से पकड सकें। प्रशासन, पुलिस, कार्पोरेशन, पब्लिक हैल्थ विभाग के सहयोग का नतीजा है कि सडकें पहाडियो जैसी है श्रौर दो घंटे की बारिश मे पक्के घरो मे पानी घुस जाता है। मैं श्रपने

शहर की तारीफ नही कर रहा हू । हर शहर का यह हाल है क्योकि भारत की आत्मा एक है जनचरित एक है सस्कृति एक है। इसीलिए

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी
कब से रहा है दुश्मन दौरे जहा हमारा।

साधो, कुछ नुकसान खास नही हुआ। हम कई साल पहले की वह रात याद है, जब रात भर म १७ इच पानी बरसा था। सुबह नावें चली थी। तो कल परसो का तो कोई यह हादसा नही था। सुबह आपस म बातें करने के लिए अच्छा विषय ही था। मरे पास भी तीन चार पडोसी बठे थे। उनम से एक के घर मे पीछे की दीवार की दरार को चौडा करके पूरे घर म पानी भर गया था। सवाल यह है कि पानी बह क्या नही गया? इकट्ठा कैसे होता गया? हम दो नाला के बीच म रहते है। एक तरफ बडा नाला है जो बरसात मे नदी बन जाता है। दूसरी तरफ छोटा नाला है जो रेलवे की हद मे नाम मात्र को है। इसकी जिम्मेदारी से कार्पोरेशन बरी है और रेलवे को परवाह नही है क्योकि उससे रेलवे का कुछ नही बिगडता।

साधो, बातचीत दुर्घटना नही, उत्सव क मूड मे हो रही थी। सामने की सडक भी योजना स ऐसी सवेदनशील बनायी गयी है कि आसपास के पानी क घुस जाने और ऊपर से दबाव पडने के कारण, सडक म से फुहारे फूट पडे थे। आठ-न्स फीट ऊचे फुहारे। ऐसे सुखदायी वातावरण मे पानी भरने के कारणो का विवेचन हो रहा था। एक सज्जन परेशान थे। बोले—हम दो नाला के बीच है। उधर के नाले से रेला आये, तो इधर के नाले मे बह जाये। इधर के नाले का रेला आये तो उधर के नाले म बह जाये। मुझे गालिब का शेर याद आया

हुए हम जो मरके रूसवा, हुए क्यो न गर्के दरिया,
न कही जनाजा उठता, न कही मजार बनता।

गालिब 'गर्के दरिया' होने के लिए एसी ही जगह रहना पसद करते। बह जाते। न कही जनाजा उठना, न कही मजार बनता।

साधो, एक पडोसी दोनो नाला का मुआइना करके लौटे तो बोले—

रेलवे तरफ का जो नाला है वह कभी साफ नहीं हुआ। वह मलवे से भरा है। लिहाजा हमारे तरफ का पानी उधर बहकर जाता है तो नाले का तेज पानी उसे अपने साथ वापस बहा लाता है। यह पानी हमारे घरों में घुसता है। दूसरे तरफ के बड़े नाले का यह हाल है कि आसपास के लोग सारा साल इसमें अपने घरों का कचरा डालते हैं। कार्पोरेशन ने जगह जगह कचरा डालने के टैंक बना रखे हैं। पर वहां कौन कचरा डालने जाय! सच्चा भारतीय वह है जो छज्जे से अपने पड़ोसी के बरामदे में कचरा फेंके। तो यह नाला सकरा हो गया। दूसरी तरफ गया पानी लौटकर इधर ही आता है। गंगा-यमुना मिल जाती है। इसका पुण्यफल आप देख ही रहे हैं—घरों में पानी है और सड़क पर फुहारे हैं।

साधो, वे सज्जन क्रोध से बोले—सब हरामखोरी चल रही है। साल भर समय समय पर इन नालों की सफाई होनी चाहिए। इन्हें चौड़ा और गहरा करते जाना चाहिए। मुहल्ले की नालियों का बहाव नाले तक साफ रखना चाहिए। तब ये नाले बरसात सभाल सकते हैं।

साधो, तभी एक बुजुर्ग स्थिति का अध्ययन करके आये। उन्होंने समझाया—देखिए, नाला के किनारों पर 'बेशरम' के आठ आठ फीट ऊंचे पौधे खड़े हैं। इन्होंने घनी झाड़ी का रूप ले लिया है। 'बेशरम' के पौधे ऐसे ही इकट्ठे पैदा होते हैं। इनका डंठल पोला होता है और किसी किसी में सांप रहता है। 'बेशरम' की झाड़ियों ने मिट्टी रोक रखी है, पौधे भी सघन हैं। अब बताइए पानी नाले में जाये तो कैसे जाय? सारा पानी ये 'बेशरम' रोक लेते हैं।

साधो, मुझे समझ में आ गया कि हमारी मुसीबत का कारण ये 'बेशरम' हैं। ये कहीं भी पैदा हो जाते हैं और इनके भीतर सांप रहते हैं। मगर 'बेशरम' सिर्फ इस नाले के किनारे थोड़े ही हैं। 'बेशरम' कहां नहीं हैं! मध्यप्रदेश में हैं तो क्या बिहार में नहीं हैं? दिल्ली में नहीं हैं? किस क्षेत्र में बेशरम की कतारें नहीं हैं? राजनीति से लेकर, धर्म, व्यापार, प्रशासन, विकास योजनाएं, शिक्षा सब जगह 'बेशरम'

छाप हैं। अखिल भारतीय से लेकर स्थानीय 'बेशरम' तक हैं। इनके भीतर साप रहते हैं, तो लोग इन्हे उखाड़ने म भी डरते हैं। सचमुच हमारी भारी दुर्गति का कारण ये 'बेशरम' के पौधे हैं, जो तीस पैंतीस सालो मे अज झाड हो गये ह।

३१ जुलाई, १९८४

## अब ओलंपिक का विलाप

साधो, किसी किसी जाति का यह परंपरागत स्वभाव बन जाता है कि उसे समय समय पर रोने और शिकायत करने के लिए कोई घटना चाहिए। यों तो देश में कुछ न कुछ होता ही रहता है—जैसे साम्प्रदायिक दंगा। साल में कम से-कम दो बार दंगा कराने वाले इस जाति को रोने और शिकायत करने का मौका देते हैं। इससे जातीय मन खिन्न होकर स्वस्थ रहता है। एक-दो महीने धर्मों की एकता का प्रचार होता है, हिंदू मुस्लिम-सिख ईसाई, सब भाई भाई हो जाते हैं और अगले दंगे की राह देखते है।

साधो, इस वक्त रोने और शिकायत करने का मौका ओलंपिक ने दिया। हाय हाय मची है कि सत्तर करोड का देश और एक ठीकरे का मैडिल भी नही लाये हमारे खिलाडी। हम उद्बोधन देने वाले हमारे युवकों को 'वीरों की संतान' कहते हैं। मगर सारे वीर तो घूस खाने और काला पैसा कमाने में लगे है। इनकी जातिगत संतान कैसी हो रही है यह किसी भी कालेज और विश्वविद्यालय मे देखी जा सकती है। अब तो खेल के मैदान भी नही रहे। युवकों मे जो खास वीर है, वे हॉकी स्टिक लेकर खेलने जाते नही दिखते। वे जेब मे चाकू रखकर शाम को मुफ्त शराब और मुर्गे की तलाश में निकल पडते हैं। स्कूलों, कालेजो से ही खिलाडी पैदा होते है। अब वहां से उठाईगीर पैदा होते हैं।

साधो रोना है तो गाम्रो। मगर रोने का कारण मुझे कोई नहीं लगता। वह लडकी पा० टी० ऊषा एक सकेंड के सौव हिस्से से पन्द्रह खो आयी है। हम कल्पना नहीं है कि एक सेकेंड का सौवा हिस्सा कितना होता है। एक रिकॉड तो एक सेकेंड के हजारवें भाग से टूटा है। मगर मैं कहता हूं कि यह गणना तुम्हें किसने सिखाई ? हम चाहे कभी एक पदक भी न जीते, मगर जो गणना तुम करते हो, वह कर नहीं सकते थे अगर भारत के प्राचीन मनीषियों ने शून्य और दशमलव का आविष्कार न किया होता। तुम समय क्या नापते अगर हमारे मनीषियों ने 'काल' चिंतन करके तुम्हें समय न समझाया होता ? विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ वगैरह चिल्लाते क्यों नहीं कि मामा, हमारी ऊषा हारी, मगर जिस गणना से वह हारी, वह हमारी ही दी हुई है। कम से कम यह श्रेय तो हम दो चाहे मैडिल तुम सब ले जाओ।

साधो, अभ्यास नहीं था, ठीक ट्रेनिंग नहीं थी, ताकतवर भोजन नहीं था ठीक चुनाव नहीं था हारना तो था ही। मगर हारने से भी जो खराब बात हुई वह यह कि हमारे खिलाडी ऐसा अनुभव करते रहे कि वे दुश्मनों के बीच आ गये हैं। हमारे खिलाडियों का अपमान हुआ, उन पर हमले हुए, हमारा राष्ट्रीय झंडा पैरों तले कुचला गया। ऐसा सिर्फ भारतीयों के साथ हुआ। वहां खालिस्तानियों, पाकिस्तानियों और अमेरिकी उचक्कों ने यह किया। अमेरिका हमारी टीम को सुरक्षा नहीं दे सका। शायद, सुरक्षा देना जरूरी भी नहीं समझा। या शायद जान बूझकर हमारा अपमान किया गया। अमरिकी शासन भारत की नीतियों से इतना परेशान है कि उसे भारतीय टीम का आना ही बुरा लगा होगा।

साधो यह आधी दुनिया का ओलंपिक था। रूस ने अमरिका से कहा था कि वह तब शामिल होगा, जब अमेरिका ओलंपिक के नियमों और शर्तों का पालन करेगा। इनमें प्रमुख शर्त के अनुसार अमरिका को रूसी टीम की सुरक्षा का आश्वासन देना था। अमरिका ने

आश्वासन नहीं दिया। वह शायद दे भी नहीं सकता। जहां राष्ट्रपति रीगन ने ऐसे कठघरे से उद्घाटन किया जो 'बुलेट प्रूफ' था, वहां बाहर के लोगों की खास कर रूसियों की रक्षा कैसे होती। प्रचार से रूसियों के खिलाफ इतना जहर भरा गया है कि उन पर हमला भी हो सकता था। नतीजा यह हुआ कि रूस और दूसरे समाजवादी देशों ने ओलंपिक में भाग नहीं लिया। तब अमेरिका ने कोस्टारिका जैसे छोटे छोटे देशों को मनाया कि तुम तो आओ।

मगर साधो, रूसी बायकाट से अमेरिका को बहुत फायदा हुआ। ओलंपिक में सबसे ज्यादा गोल्ड मैडिल रूस को मिलते थे और उसके बाद पूर्वी जर्मनी को। अमेरिका का नंबर तीसरा आता था। इस बार सबसे अधिक गोल्ड ले गया अमेरिका—अस्सी से ऊपर। अगर रूस और पूर्वी जर्मनी आ जाते तो यही पंद्रह बीस गोल्ड मिलते। वे नहीं आये तो ढेर लग गया। एक पान के ठेले पर रेडियो पर ओलंपिक समाचार आ रहे थे। आठ दस लोग खड़े सुन रहे थे। बार बार सुनायी पड़ता कि अमेरिका के इतने गोल्ड मैडिल हो गये। पान वाले ने रिमार्क किया—ले जा पट्ठे सारे गोल्ड! तेरा चाचा नहीं आया है न!

साधो, अगला ओलंपिक दक्षिण कोरिया में होगा। दक्षिण कोरिया अमेरिका का चमचा है। तो आगामी ओलंपिक में अमेरिका को दक्षिण कोरियाई सरकार से कहना चाहिए कि कुछ ऐसा करो जिससे रूस और पूर्वी जर्मनी नहीं आयें। तब अधिकांश गोल्ड मैं ले जा सकूंगा।

साधो मगर भारत को भी सोचना चाहिए कि उसे अपनी बेइज्जती कराने कहां कहां जाना है। एक लिस्ट बन जाय विदेश विभाग में उन देशों की जहां बेइज्जती कराना राष्ट्रीय गौरव के लिए जरूरी है। एक बात तो सीधी है—अमेरिका और उसके चमचा देशों में जाओगे तो बेइज्जती होगी।

१६ अगस्त, १९८४

## हनुमान फिर युद्ध-क्षेत्र मे

साधो, जो विदूषक सनकी, बदर हनुमान, पगला कहलाता है वही राजनारायण फिर विरोधियो की एकता करवा रहा है। उसने पहले भी एकता करायी थी, और फिर तोडी भी थी। अब फिर वही एकता करायेगा और फिर वही तोडेगा। अभी एकता के देवता फिल्मी भगवान रामाराव थे। वे रेशमी गेरुआ सन्यासी वेश धारण कर, अर्द्धनारीश्वर बने भारत की राजधानिया जाते थे बैठवे आध्र प्रदेश हाउस मे करत थे, हाथ जोड मुस्कुराते हुए हठी चरणसिह और अटलविहारी के द्वार पर पहुच जाते, तो वे भी आ जाते। अटलविहारी बीच बीच मे एलान करते कि अगला प्रधानमत्री दक्षिण भारत का होगा, तो भगवान राम समझते कि वह मैं ही हू। इधर चरणसिह गुर्राते—अच्छा अटलविहारी, तुझे देखूगा।

साधो इस वक्त जब व राजधानी म महीने भर नही थे, तब भास्कर राव ने अपनी सेना से राजमहल घेर लिया। राम लौटे तो उनसे कहा गया कि आप सिहासन स उतार दिय गये। यह कहा राज्य पाल ने। अगर य रामाराव हैं तो वह भी रामलाल है। रामलाल दुनिया म राजनीति का खेल खेले हुए है। रामाराव पर्दे पर खेल की राजनीति किय हुए हैं। भाग्य की बात है—भिल्लन लूटी गोपिका वही अर्जुन वही बाण। अर्जुन और उनक बाण बेकार हो गय। साधो रामाराव के भक्त पुलिस गोली से मर रहे हैं। लोकतत्र की हत्या का नारा लगाया जा रहा है। भगवान को पुन गद्दी पर बिठाने की माग

की जा रही है। साधो, लोकतंत्र की हत्या की बात चरणसिंह कर रहे हैं कि किसी दूसरे देश मे ऐसा होता तो खून की नदिया बह जाती। हम कायर है। तो खून की नदिया तो नही बह रही हैं पर डबरे जरूर भर गये है। मगर, लोकतंत्र ? जहा यह नैतिक मान लिया गया है कि दल बदलो, विधायक खरीदो, बहुमत बनाओ और राज करो, वहा पार्टी आधारित ईमानदारी की लोकतान्त्रिक पद्धति का सपना देखा जा रहा है। कांग्रेस के दल-बदलू तेलगूदेशम मे गये तो भगवान राम का राज्याभिषेक हुआ। वही दलबदलू राम को छोड रहे है, तो उनका सिंहासन जायेगा ही। रामराज दलबदल बेईमानो और खरीदे गये विधायको की दम पर कैसे चलता है, इस पर कोई प्रकाश न वाल्मीकि ने डाला, न तुलसीदास ने। साधो, राज्यपाल की कार्यवाही जरूर विवादास्पद है। विधानसभा में नही, अपनी कोठी मे सरकार गिराना गलत है। मगर विरोध पक्ष का अनजाने ही रामलाल ने बहुत भला किया। वे रामाराव की शहादत पर एक हो गये। आज मैं इक्कीस तारीख को तुमसे यह बात कह रहा हू। इसके छपते छपते क्या हो, कह नही सकता।

साधो, बात मैंने शुरू की थी परमवीर राजनारायण से। मगर भगवान रामाराव न मुझे खीच लिया। मैं उन्हे प्रणाम करके हनुमान की सेवा म लौटता हू। साधो, जहा वफादारी, ईमानदारी, सिद्धात अश्लील शब्द हो गये हा वहा गुलाब और गेंदा की एकता मे खास अडचन नहीं है, अगर सच्चे साधक हा तो। ऐसे साधक राजनारायण हैं। विपक्षी एकता, राष्ट्रीय विकल्प, तानाशाही से सघर्ष देश की रक्षा से विपक्षी एकता की बात शुरू होती है और चुनाव आते आते अलग अलग अपने लिए एक पक्की सीट' पर आ जाती है। फकीर कहता है—बस, पाच पैसे का सवाल है मालिक परवरदिगार के नाम पर। यहा यह होता है—बस, एक सीट का सवाल है, भारत भाग्य-विधाता, लोकतन्त्र की रक्षा के नाम पर। यह 'भाग्य विधाता' बदलता रहता है। कल जो घोर पतित था, आज वह भाग्य विधाता हो सकता

है। और अगर वह सीट न दे ता, कल फिर पतित हो सकता है। एक सीट का सवाल है गरीब परवर ! फकत एक सीट का !

साधो, सबसे पहले अटलबिहारी वाजपेयी ने चौधरी चरणसिंह को पटाया। उत्तर भारत में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाएं हैं और उत्तर भारत में ही जाट हैं। जैसे स्वयंसेवक की एक निष्ठा अपने एकमेव नेता के प्रति है चाहे वह कुछ भी करे, वैसे ही जाट की एकमेव अधनिष्ठा चरणसिंह में है चाहे वे कोई भी पार्टी बनायें कहीं भी चले जायें। दो फासिस्टी ताकतों की एकता राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक मोर्चा कहा गया। मगर चौधरी खट्टे पड़ने गये क्योंकि अटलबिहारी उन्हें चक्कर देने लगे। यह मोर्चा अभी भी अपने को राष्ट्रीय विकल्प कहता है। पर सवाल है—राष्ट्रीय विकल्प चरणसिंह या अटलबिहारी ?

साधो, दूसरा राष्ट्रीय विकल्प चंद्रशेखर के आसपास बनने लगा था। इन पार्टियों और नेताओं ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी साम्प्रदायिक दल है। हम उससे समझौता नहीं करेंगे। चन्द्रशेखर ने कन्याकुमारी से दिल्ली तक पद यात्रा की। इस पद-यात्रा के प्रताप से वे दूसरे जयप्रकाश नारायण बनने वाले थे। पर वे दिल्ली ही गलत वक्त पर आये—उस वक्त जब कपिलदेव ने इंग्लैंड में प्रतिष्ठा का प्रूडेंशल कप जीता, तो रैली ही आधी रह गयी।

साधो, इसके बाद समाजवादियों, सुब्रह्मण्यम स्वामी, सत्येन्द्रनारायण आदि ने चन्द्रशेखर के हाथ पांव कान, नाक काफी काटकर उनकी साइज छोटी कर दी। तब भगदड़ मची। जो लोकदल से आये थे उनमें से काफी बाहर निकले और रैली कर डाली। इस रैली को चरणसिंह ने आशीर्वाद दिया। विरोध पक्ष की एकता के लिए शरद पवार, बहुगुणा, चन्द्रजीत यादव वगैरह भी कोशिश कर रहे थे। मगर सवाल था—एकता का नेतत्व कौन करे ? इसी समय—आप गये हनुमान जिमि करुणा महं वीर रस। उसने समझाया—कहां चक्कर में पड़े हो समाजवाद, लोकतंत्र, धर्म निरपेक्षता सिद्धांत वगैरह के चक्कर में। यह सब

माया है। सत्य है—सीट! सुरक्षित सीट! इस देश मे सिर्फ एक राजनेता है, जिसके उत्तर भारत मे मृत्यु तक वोट पक्के हैं—जाट और यादव वोट। वह नेता है—चरणसिंह। तो राष्ट्रीय विकल्प तो पहले से तय है। 'चलो रामलीला मैदान।'

साधो, हनुमान ने रैली करा ली और चरणसिंह ने आशीर्वाद दे दिया। इसी वक्त हनुमान ने भगवान राम का कर्नाटक मे वनवास करा दिया। यह विरोधी एकता के लिए वरदान है। सब मिल जाओ, और लडो इदिरा की तानाशाही से। जब वह राम को निकाल सकती हैं तो हम तो नौकर चाकर हैं। उपद्रव और हिंसा का नेतृत्व करो चरणसिंह हैदराबाद पहुच गये और २५ अगस्त को भारतव्यापी उपद्रव तय कर दिये। भारतीय जनता पार्टी का अक्षतोद्धार हुआ जा रहा है। एक सीट का सवाल है बाबा, खुदा के लिए!

२६ अगस्त, १९८४

## लोकतंत्र की नगर वधुएं

साधो, अभी इसकी चिंता मत करो कि आंध्र मे क्या होगा, या कर्नाटक मे क्या दाल गल रही है। अभी तो लोकतन्त्र के स्वस्थ विकास को देखो। हम कहा से कहा जा पहुचे। १६५२ मे पहला आम चुनाव हुआ था। उसके बाद के काफी सालो तक विधायको के दल बदल और खरीदी की बात सुनी भी नही गयी। मगर आज रामाराव कहते हैं कि मेरे विधायक पच्चीस लाख मे खरीदे जा रहे हैं। खरीदे जा रहे हैं का मतलब है कि वे बिक रहे हैं। जितना पवित्र खरीदने वाला है उससे कम पवित्र बिकनेवाला नही है। यह खरीद बिक्री आम चीज जैसी नही है। आलू बिकता है तो उसके दाम आप को नही, दुकानदार को मिलते हैं। मगर लोकतन्त्र के बाजार मे दाम आपको ही मिलते हैं। विधायक बिकता है तो दाम उसी के हाथ मे जाते हैं। साधो, इससे अच्छा धधा कोई और नही है। तुम विधानसभा के सदस्य किसी पार्टी से हो जाओ। जब विरोधी गुट उस पार्टी की सरकार को गिराने की योजना बनायेंगे, तब विधायक खरीदे जायेंगे। तुम पाच-दस लाख लो और दल बदल दो। धधा यही खत्म नही होता। विधायक कोई आलू नही है कि एक बार बिका और उसकी सब्जी बनाकर खा ली गयी। विधायक की सब्जी नही बनती। वह आलू का आलू ही रहता है। दुबारा जब फिर सरकार पलटाने की तैयारी हो, तो फिर पाच-दस लाख लेकर अपनी पुरानी पार्टी मे लौट आये। यह अपने को बेचने का धधा कभी बद नही होता। जैसे-जैसे लोकतन्त्र का बाजार फैलता जाता है उपभोक्ता वस्तु की

कीमत बढती जाती है। काले धन के कारण मुद्रा स्फीति बढ़ती है और विधायक के दाम बढते जाते हैं।

साधो, दल-बदल शुरू करने वाले महापुरुष चौधरी चरणसिंह है, जिन्होंने १९६७ मे उत्तर प्रदेश मे दल-बदल कराके काग्रेस सरकार बनायी थी। ऐसी सरकार फिर मध्य प्रदेश मे बनी जहा विजयराजे सिंधिया ने दल बदल कराया। पर तब विधायकों की कीमत और खरीदी की बात नही सुनी गयी। हो सकता है, चुपचाप पर्दे के पीछे कुछ दिया गया हो। पर यह जनता के सामने नही आया था। तब और उसके कुछ वर्ष बाद तक यह धधा था भी तो खानगी था। ऊपर से इज्जत बनाये रखकर कुछ स्त्रिया गुप्त रूप से अपना शरीर कुछ चुने हुए ग्राहकों को बेचती है। वह सार्वजनिक नही होती। मगर धीरे धीरे राजनीतिक ईमान ऐसा बढा, दाम इस तेजी से गायब हुई कि बस लोकतत्र की रूप जीवाए अब बाकायदा कोठे पर पहुच गयी हैं। बारजे पर खडी होकर ग्राहक बुलाती हैं, और जब वह कोठे पर पहुचता है तो उसे अपना रेट बता देती हैं बिना झिझक के। दल-बदल के पुराण पुरुष हरियाणा के गया लाल हुए। जिन्होंने राजनीति मे आयाराम-गयाराम का सिद्धात जोडा। और विधायक क्या है इसकी घोषणा भजनलाल ने की। उसने थोक विधायक खरीद लिये। मगर आध्र ने हरियाणा को पीट दिया। वहा रेट पच्चीस लाख तक पहुच गया। एक मामले मे हम और आगे बढे है। अपने या खरीदे हुए विधायक अभी तक उसी राज्य मे रहते थे और विधानसभा अधिवेशन की राह देखते थे। मध्य प्रदेश मे १९६७ में सविद के नेता गोविंद-नारायण सिंह को डर था कि रात को उनके जीते हुए विधायक मुख्य-मत्री द्वारा फिर से जीत लिये जायेंगे। तब उन सारे विधायकों को विधानसभा अध्यक्ष ने अपने बगले और अहाते मे रात भर ठहराया और पहरा लगा दिया। सुबह वे सीधे विधानसभा गये और काग्रेस सरकार को गिरा दिया।

मगर साधो, रामाराव ने अपने विधायको की राष्ट्रपति के सामने परेड करवाके उन्हे हैदराबाद नही जाने दिया। डर था वे बहका लिये जायेंगे या खरीद लिये जायेंगे। उन्हे किराये के विमान से बैंगलोर भेज दिया जहा वे रामकृष्ण हेगडे की सुरक्षा मे रहगे। मगर हेगडे की सरकार गिर गयी तो ? वे विधायक जगल मे डाकुओ के बीच हो जायेंगे। मेरा निवेदन है रामाराव से कि वे अपने विधायको को अभी दूसरे देश मे रखें। जनरल जिया उल हक से बात करके उन्ह मिलिटरी के पहरे मे लाहौर मे रखा जाये और ऐन वक्त पर सीधे हैदराबाद ले आया जाये। पार्टी निष्ठा, ईमान और सिद्धात का जब यह हाल हो गया है तब इसके सिवा कोई रास्ता नही है। पाकिस्तानियों मे इससे लोकतत्र की बहाली के लिए उत्साह भी पैदा होगा। साधो, तुम पूछोगे—गुरु, क्या भास्कर राव को अपने विधायको के बारे म चिता नही होगी ? उन्हे चिता इसलिए नही होगी कि एक चीज दो ग्राहको को एक साथ नही बिकती। दूसरे 'तेलगूदेशम' के एक तिहाई से, अधिक विधायक काग्रेस से निकले हुए थे। भास्कर राव को काग्रेस का समथन है। तो वे विधायक अपने बिछुडे हुए भाइयो की भुजाओ में होगे।

साधो, अब करना यह चाहिए। रोज विधान सभा के बाहर एक बोर्ड पर आज का बाजार भाव लिखा रहे। साथ ही उन विधायको की सूची चिपकी रहे जो बिकने को तैयार हैं। इससे खरीददार को भी सुभीता होगा और माल को भी ! तुम पूछोगे—गुरु, यहा तक हम पहुच कैसे गये ? साधो, बात यह है कि १९४७ तक तो त्याग और बलिदान ही राजनीति रही। १९४७ से प्राप्ति की राजनीति, काम की राजनीति आ गयी। जैसे-जैसे हम आगे बढे राजनीति मे से 'नीति' गायब हो गयी और 'राज व्यवसाय' हो गया। अब व्यवसाय में सिद्धात, आदर्श वगैरह को नष्ट कर देना पडता है। तो वे नष्ट हो गये। सबसे ददनाक उदाहरण लोहिया के चेले समाजवादियों का है। जब डॉ लोहिया थे तब ये कफन लपेटे तुरत क्राति के लिए उतावले

थे, उग्र थे, लड़ाकू थे, सिद्धांतो पर अटल रहने की बात करते थे। मगर आज इस देश मे समाजवादी पार्टी है ही नहीं। और महान् उग्र क्रांतिकारी जाज फर्नांडिस, राजनारायण, कर्पूरी ठाकुर आदि कभी चरणसिंह के आगे हाथ जोड़े खड़े रहते हैं, कभी मोरारजी के सामने एक सीट की भीख मागने के लिए। क्रांतिकारी, समाजवादी, समाज विरोधी और क्रांति से चिढनेवालो से एक सीट और सत्ता के काम की भीख मागते हैं। आज सिद्धांतहीनता की राजनीति चल रही है। सीट चाहिए। सत्ता चाहिए। इसलिए हमारे भाग्यविधाता कभी इसके हाथ बिकते हैं, कभी उसके हाथ। न अपने पर विश्वास रहा, न दूसरा पर।

साधो, तुम पूछोगे—विधायक खरीदने के लिए इतना दान कौन महान त्यागी देते हैं। अरे, यह सब गुप्त धन का सौदा है। इस धन की भूमिगत नदिया देश मे बह रही हैं और तुम्हे दिखती नही ह। दस विधायक खरीदने के लिए जो ढाई करोड रुपया देंगे, वे क्या लोकतत्र के लिए त्याग कर रहे हैं? यह धधे की लागत है। पूजी निवेश है। इनवेस्टमेंट होना है यह। सत्ता मिलने पर मुनाफे समेत ढाई करोड के पच्चीस करोड कमाये जाते हैं। तुमने करोड रुपये देखे हैं? लाख भी नहीं देखे। तुम इस धधे को समझ नही सकते। जहा कुछ हजार मे बहादुर फौजी अफसर सी आई ए के हाथ बिक जाते है वहा उनके मालिक राजनीतिक पुरुषो का रेट लाखो होगा ही।

२ सितबर, १९८४

# कुलपति और पुलिस

साधो, पुलिस को खुश होना चाहिए कि एक जगह तो है जहा उसका स्वागत करने को लोग लालायित हैं। पुलिस की कोई अगवानी नही करता। दुनिया के किसी देश मे पुलिस के दर्शन इतने अप्रिय नहीं हैं जितने भारत मे। मैं लोकतान्त्रिक स्वाधीन देशो की बात कर रहा हू। इन देशो मे सिर्फ अपराधी पुलिस से डरते हैं। आम आदमी नहीं। भारत मे अपराधी पुलिस से दोस्ती रखते हैं और आम आदमी उससे डरते हैं। मेरे एक कलेक्टर मित्र ने जो हाल ही लदन म थे बताया कि वहा हडताली कोयला मजदूरो और पुलिस म दोस्ता की तरह सघष हो रहा था। सिर्फ 'बेटन' पुलिस के पास थे और मजदूर भी हमला नही कर रहे थे। एक और सज्जन ने बताया जो इग्लैंड म पढे है। कहने लगे—मैं रात को जरा देर से घूमकर लौट रहा था। एका एक मेरे पास पुलिस की पेट्रोल कार रुकी और एक पुलिसमन ने नम्रता से कहा—आपको देर हो गयी है। क्या आप रास्ता भूल गय ? मैंने कहा कि मैं रास्ता नही भूला। उन्हाने मेरा नाम पता लिख लिया और होस्टल के वार्डन से फोन पर पूछकर जाच की। हमारे यहा की पुलिस उस आदमी को पहले ता गाली देती, शायद चाटा मारती और गाडी म बिठाकर थाने ले जाती। जब पुलिस भले आदमी से यह सलूक करती है, उसी वक्त पुलिस के मित्र अपराधी अपना धधा कर रहे होते हैं। मजदूरो का जुलूस निकले तो लाठी, बदूक चलती है।

साधो, अग्रेजो ने अपनी पुलिस को एक तरह का बनाया और

अपने साम्राज्य की पुलिस को दूसरी तरह का। इग्लैंड की पुलिस को नम्र नागरिक की सेवक, ग्राम आदमी की मित्र बनाया। साम्राज्य की पुलिस को गवार असभ्य, लट्ठमार, अत्याचारी और आम आदमी का दुश्मन बनाया। अग्रेज चले गये, मगर नौकरशाही और पुलिस की वही साम्राज्यवादी परपरा चल रही है। न्यायमूर्ति आनद नारायण मुल्ला की तो टिप्पणी है कि इस देश मे पुलिस सबसे सुसगठित अपराधी गिरोह है। साधो, उत्तर प्रदेश म जब किसी जगह दगे होते हैं, तो दोनो सप्रदायो के लोग ऊचे अधिकारियो स प्राथना करते हैं कि आप प्राविंशल आम्ड कान्स्टेबुलरी हटा लीजिए। साधो, मदिर मे पुलिस के जाने से वह अपवित्र हो जाता है। किसी शरीफ आदमी का मित्र पुलिस इस्पेक्टर वर्दी मे उससे मिलने आ जाय, तो बाद मे उसे मुहल्ले वालो को समझाना पडता है कि कोई एसी-वैसी बात नही थी। इस्पेक्टर या ही आये थे।

साधो, यह पुलिस जिसे कोई अपने यहा नही देखना चाहता, जिससे सब दूर रहते हैं, उसे बरसात है उस पुलिस ने यह खुशखबर अखबारो म पढ ली होगी जिसकी मैं तुमसे बात कर रहा हू। हुआ यह कि दिल्ली मे विश्वविद्यालयों के कुलपतियो की एक बैठक हुई। कुछ को छोडकर बाकी सारे कुलपतियो न कहा कि विश्वविद्यालय मे पुलिस को हमारे बिना बुलाये ही आना चाहिए। वहा शाति व्यवस्था की जिम्मेदारी भी पुलिस की ही है। उसे हमारे बिना बुलाये आ जाना चाहिए।

साधो, जब यह समाचार हम अखबार म पढ रहे थे, मेरे पास तीन सज्जन बैठे थे। एक स्वाधीनता सग्राम म जेल गये हुए सज्जन थे। दूसरे इजीनियर थे। एक पत्रकार थे। स्वाधीनता सग्राम सैनिक ने कहा—जमाना कितना गिर चुका! विद्या के मदिर मे पुलिस को निमत्रण दिया जा रहा है। एक वह वक्त था। हम कॉलेज मे पढते थे। प्रिंसिपल अग्रेज था। हम कॉलेज मे नारे लगाते—भारत माता की जय! अग्रेजो निकल जाओ। वंदे मातरम्। हम काग्रेसी थे ही। अग्रेजी कलेक्टर को मालूम हुआ, तो उसने प्रिंसिपल को फोन किया कि इन

लडको को पकडने के लिए पुलिस भेज रहा हू। प्रिंसिपल ने जवाब दिया—मैं अपने कॉलेज मे पुलिस नही घुसने दूगा। मेरे छात्रो को अपने सामने गिरफ्तार नही होने दूगा। एक वे प्रिंसिपल होते थे और अब ये कुलपति हैं, जो पुलिस को स्थायी निमत्रण देते है। कैसा जमाना आ गया।

साधो, मैंने उनसे कहा—जमाना सभी के लिए आ गया है ऐसा। मैं एक कॉलेज की प्रबध समिति का सदस्य था। कॉलेज के प्रिंसिपल की शिकायतें थीं। जाच करने पर मालूम हुआ कि हरिजन छात्रो की छात्रवृत्ति के जो चेक आते है प्रिंसिपल और बडे बाबू भुना लेते हैं। कॉलेज के कई सामान जैसे—टेप-रिकॉर्डर, प्रोजेक्टर, वगैरह प्रिंसिपल के घर मे थे। ये चीजें पकडी गयी तो छात्रो मे बात फैली। अब बताइए, ऐसा प्रिंसिपल पुलिस के बिना कैसे कॉलेज चलाये? साधो, दूसरे सज्जन ने कहा—जब मैं बनारस विश्वविद्यालय मे पढता था, आचार्य नरेन्द्रदेव कुलपति थे—पाच फुटे दुबले आदमी, सादे कपडे, सरल स्वभाव। मगर जब आचार्य जी अपने ऑफिस से बाहर निकलते और 'राउड' लेते तो सन्नाटा छा जाता। बडे-से-बडे 'गुडे' छात्र इधर उधर हो जाते थे कि कही आचार्य जी की नजर न पड जाय। आचार्य जी जब तक रहे, पुलिस नही आयी। मगर अब कुलपति खुद असुरक्षित महसूस करते हैं।

साधो, मैंने कहा—आचार्य नरेन्द्र देव महापडित थे। उनकी बौद्धिकता, चरित्र और सदभावना का इतना आतक था, कि कोई नजर नही मिला सकता। तब अध्यापक पढ़ाते भी होंगे। अब कुलपति का पद सत्ता का इनाम है अपने लोगो को। न इनमे बुद्धि बल, न चरित्र बल। फिर अध्यापक पढ़ाते नहीं। बदनाम और कमजोर कुलपति, न पढ़ाने वाले अध्यापक, न पढ़ने वाले छात्र। सब तथाकथित हैं—तथाकथित कुलपति तथाकथित अध्यापक तथाकथित छात्र! शिक्षित बेरोजगारी के कारण शिक्षा का विश्वविद्यालय का अवमूल्यन हो ही चुका है।

साधो, कुलपति का पद अब मान-गरिमा का पद नही रहा। यह प्रशासनिक पद हो गया है। आज का कुलपति दिन भर पढाई की बात

नहीं सोचता बल्कि शांति और व्यवस्था की बात सोचता है। मुह में शराब भरकर छात्र नेता कुलपति के मुह पर कुल्ला करता है, तो कुलपति पुलिस को आमंत्रित न करें, तो क्या करें ? मुझे बताया गया है कि पुलिस के रिटायर्ड इस्पेक्टर जनरल सफल कुलपति हैं। वे पिस्तौल हाथ म लेकर छात्र-नेताओ से बात करते हैं।

साधो, मेरे पत्रकार मित्र ने कहा—देखिए, जो अध्यापक विषय के जानकार है ध्यान से पूरा पीरियड पढाते हैं, जो चरित्रवान हैं उनका आदर अभी भी छात्र करते हैं। गुडे, छात्र भी उनसे डरते है। लेकिन अधिकाश प्रोफेसर लोग विषय के ज्ञाता नही होते। वे बिल्कुल नही पढाते। क्लास में ही नही आते। वे पढा भी नही सकते। वे विश्वविद्यालय की टाग खीचू राजनीति मे लगे रहते हैं। सौ मे से पचानवे लडके पढना चाहते है। वे गरीब और मध्यमवर्गीय परिवार के हैं। डिग्री लेकर वे जीविका कमाना चाहते हैं। मगर इन्हे पढाया नही जाता। एक तो अध्यापक नही पढाते। दूसरे गुडे छात्र नेता क्लास नहीं लेने देते। आज विश्वविद्यालय मे राज न कुलपति का है, न शिक्षा-मत्री का, न मुख्यमत्री का न प्रधानमत्री का। राज है इन गुडे छात्र-नेताओ का जो राजनीतिक दलो द्वारा पाले जाते हैं। इन्हे सत्ताधारी और विरोधी पार्टियो के नेता जबरदस्ती भरती कराते हैं, इनकी रक्षा करते हैं और अपनी राजनीतिक चालबाजी कराते हैं। ये पेशेवर जाने हुए अपराधियो से अधिक खतरनाक है। इन्हे राजनीतिक सुरक्षा प्राप्त है। पुलिस इन्हे नही छेडती, इसीलिए ये छात्र नेता शहर बद करवा सकते हैं, ये जुलूस लेकर पुलिस थाने पर हमला कर सकते हैं, ये कुलपति का घिराव कर सकते हैं। ये ट्रैफिक बद कराते है, दुकान लूटते हैं। इनसे रक्षा के लिए बेचारे कुलपति बिना बुलाये पुलिस चाहते हैं। हर विश्वविद्यालय परिसर मे अब एक थाना खुल जाना चाहिए। विद्या के मदिर की बात फालतू है। ज्ञान का नही, ला एड आर्डर का मामला है। स्वर्ण मदिर से लेकर विश्वविद्यालय तक सब ला एड आर्डर के मामले हो गये हैं। पतनशीलता सर्वव्यापी है।

१८ सितबर, १९८४

## जैंक का जिल को उपदेश

साधो, जब आदमी का मन गिरावट म होता है, उसकी आशाए खत्म हो जाती हैं तब उसकी चेतना से ज्ञान और विवेक फूटकर बहने लगता है। यह हाल आजकल बाबू जगजीवनराम का है। १९४६ मे जब पडित नेहरू ने कायकारी सरकार बनायी थी, उसमे बाबू जी मत्री थे। तब से लगातार १९७७ तक काग्रेस सरकार मे रहे। १९७७ म जब लगा कि या तो इदिरा गाधी हारेंगी अथवा जीत भी गयी तो बहुत करके वे मत्री नही बनाये जायेंगे, तो बाबू जी की पवित्र आत्मा न नतिकता की पुकार लगायी। आपातकाल लगाने का प्रस्ताव बाबू जी ने ही ससद म रखा था। पर १९७७ के निराशा के क्षण में उन्हीं बाबू जी की पवित्र आत्मा ने गगा स्नान करके आवाज दी—आपातकाल लगाना लोकतत्र की हत्या थी। तानाशाही थी। और बाबू जी खिसककर काग्रेस छोड जनता पार्टी मे आ गये। फिर १९८० तक जनता सरकार मे मत्री रहे। वे प्रधानमत्री नही हो सके। यह कसक रही। १९८० से बियाबान मे हैं। लगातार इदिरा जी के पास सदेश भेजते रहे है पर वे बुलाये नही गये। वे अकेली दम अखिल भारतीय पार्टी काग्रेस (जे) चला रहे थे। अब उन्होंने दूसरी और विशाल पार्टी बना ली है। इसमे कुछ नही लगता—बस कुछ पैड छपाना पडते हैं और रबर स्टैंप बनवाना पडता है।

साधो, बाबू जी हरिजन के नाम से लगातार मत्री हैं। मौलाना आजाद काग्रेस के शिखर के नेता थे पर मुहम्मद अली जिन्ना उन्हें 'मुस्लिम शो-ब्वाय ऑफ दी काग्रेस' कहते थे। बाबू जी भी 'हरिजन

शो ब्वाय' रहे हैं। मगर वे बहुत योग्य मंत्री माने जाते हैं। उनके विरोधी भी मानते हैं। साथ ही उनके दोस्त और विरोधी कुछ बुरी बातें भी मानते हैं—जैसे यह कि इतनी दौलत कहां से आयी ? या यह कि कामदेव उन पर तीर चलाता रहा है। पर बाबू जी अगर गुलाब हैं तो उनमें कांटे होंगे ही। अब बाबू जी अस्सी से ऊपर होंगे, पर जैसा संत ने कहा है—तृष्णा तू न गयी मेरे मन से। जब तृष्णा चरणसिंह के मन से नहीं गयी, तो बाबू जी के मन से क्यों जाये ? तृष्णा मरने के बाद भी नहीं जाती। कहते हैं उसी की पूर्ति के लिए फिर जन्म लेना पड़ता है। चरणसिंह, बाबू जी ऐसे जर्जर बूढ़े हैं, पर तृष्णा जवान है। अगर अर्थी जा रही हो और खबर आये कि लोकसभा के बहुमत ने आपको प्रधानमंत्री चुन लिया है, तो भगवान से कहेंगे—प्रभु बस दो दिन की जिंदगी बढ़ा दें। शपथ लेकर मैं संसद में प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठ लूं। फिर जरा राजकीय सम्मान से मरघट पहुंच जाऊंगा। चरणसिंह की तृष्णा के साथ आशा है। बाबू जी की तृष्णा के साथ निराशा है। इसीलिए ज्ञान और विवेक की बात बाबू जी करते हैं। चरणसिंह अहंकार से बात करते हैं। दोनों की हालत इस शेर में है

मेरे अल्लाह मुझे दो पल की जिंदगी दे दे
उदास मेरे जनाजे से जा रहा है कोई

साधो, तुम कहोगे—गुरु, यहां-वहां बहुत घुमा रहे हो। यह तो बताओ कि बाबू जी ने कौन से ज्ञान की अमृत बूंदें बरसायीं। बताता हूं। बाबू जगजीवनराम ने विरोधी दलों, गुटों और सिपहसालारों से कहा है—पहले अभी इस बात पर विचार करके कुछ तय कर लो कि तुम अगर जीत गये और तुम्हारी सरकार बन गयी तो करोगे क्या। यानी बाबू जी सिद्धांत और कार्यक्रम की बात उठा रहे हैं। इसी से साफ जाहिर होता है कि बाबू जी निराश हैं। इस वक्त सिर्फ निराश आदमी जिन्हें कुछ नहीं होना है, सिद्धांत और कार्यक्रम की बात करते हैं। जिसे आशा है और जिसे होना है, वह इन फालतू चीजों में नहीं उलझता। वह कुछ होने में लगा है। फारूख अब्दुल्ला-कांड होता है तो

बार-बार श्रीनगर जाता है। रामाराव काड होता है तो बार-बार हैदराबाद जाता है। कायक्रम क्या है? सब इस कोशिश मे हैं कि फारुख और रामाराव *के मामले को लेकर ही एकता* हो जाय और जनता हमे हमारे कारण नही, फारुख और रामाराव के बलिदान के नाम से वोट दे दे।

साधो, बर्नाड शा ने कहा है—जो कर सकता है, वह करता है। जो नही कर सकता, वह शिक्षा देता है। जो कर सकते हैं वे कर रहे हैं। रोज मीटिंगें करते है—मोर्चा बनाने के लिए, विलय के लिए, सीटो के तालमेल के लिए। इसम चूहा, गाय, बैल मसा सियार, शेर—सब एक से एक प्राणी हैं भगवान के बनाये। साधो, सिद्धातहीनता भी एक सिद्धात है। प्राचीन ऋषि, मुनि जीवन भर तपस्या करते थे, तब ऐसी शुद्ध-बुद्ध चेतना होती थी। कायक्रम करना हो तो उसकी बात करें। अभी एक ही सिद्धात है, एक ही कायक्रम है—इदिरा काग्रेस को सरका-कर सत्ता पर कब्जा करो। फिर कायक्रम खोजने कही जाना नही है। *१९७७ का बना-बनाया कायक्रम है—आपस मे लडो, पार्टी या* मोर्चा तोडो और ढाई साल मे सब सडक पर आकर धूल फाको और नारे लगाओ—'इदिरा गाधी तानाशाह है।' एक तो कायक्रम यह है ही। फिर कुछ लोग हैं, जो यह मानते हैं—सरकार तो बनाओ। कायक्रम तो वाशिगटन से आ जायेगा।

साधो, चरणसिह किसान-नेता हैं। कितने शम की बात है कि एक किसान नेता स्वामी सहजानद थे जिन्होंने छोटे किसानो की लडाई लडी—और उनके बाद ये चरणसिह किसान नेता कहलाते हैं, जो छोटे किसानो को खत्म करके उन्हे *बडे किसानो के गुलाम बनाना चाहते हैं।* वे सहकारी खेती के खिलाफ हैं क्योकि उसमे छोटा किसान भी जीवित रहता है। वैसे चरणसिह ने किसानो के लिए बहुत किया है—उन्हे दफान देते हैं और किसान-रली निकालते हैं।

किसाना के लिए ही उन्हें दल-बदल करके किसी-न किसी पद पर रहना है। कोई और ऊचा पद न मिले तो किसी मत्रालय म चपरासी

भी बन सकते हैं। चपरासी भी सरकार का हिस्सा होता है; इतना अविश्वासनीय और बेशर्म नेता दूसरा नही है। सिद्धांत की बात होती तो वे ग्राम पचायत के सदस्य भी नही बन पाते। मगर वे दल-बदल के खेल के जान मेकनरो है। जान मेकनरो ने अभी चौथी बार टेनिस का खिताब जीता है। इधर देखो—चरणसिंह के आसपास सब विरोधी चक्कर लगा रहे हैं। भारत मे यही सिद्धात की राजनीति है।

साधो, बाबू जगजीवनराम की बात ठीक है। पर जब वे समर्थ थे तब यह बात ठीक नही थी। वे भी १९८० मे जनसंघ की तरफ से हरिजन प्रधानमंत्री बनने के लिए भाग रहे थे। सरकार बनने पर क्या करेंगे, यह अभी क्या सोचे। अभी तो दस प्रधानमंत्री देश मे चक्कर लगा रहे हैं। मगर चरणसिंह ने अपने-आपको पहले से प्रधानमंत्री बना लिया है। जैक और जिल में से जैक नीचे गिरकर उपदेश दे रहे हैं और जिल पहाड़ियों की कगार पर खड़े गिरने को है—जैक एंड जिल वेंट ऑफ दी हिल।

२५ सितंबर, १९८४

## फौजी अफसर और अमेरिकी प्रेम

साधो, इस बीच बडी दिलचस्प बातें हो गयी हैं। कुछ बातो पर रोना या हसना, यह समझ मे नही आता। आखिर अपनी ही बात दुहराना पडता है—साधो, देखो जग बौराना। अब देखो, साधो, सिख प्रधान ग्रथियों ने रछपालसिंह को जो सजा दी है वह कैसी है। सजा है—गुरुद्वारे मे, बतन और फर्श साफ करना। अब बताओ गुरुद्वारे का फर्श साफ करना सजा कैसे हो गयी। यह तो पुण्य है। रछपालसिह का सेवा का पुण्य करने की सजा दे दी गयी। मगर सजा और भी है, जिससे मैं हैरत मे आ गया। उन्हे जप साहब' और 'चौपाई साहब' का पाठ करने की सजा दी गयी है। 'जप साहब म भगवान के जय के पद हैं और 'चौपाई साहब' मे ज्ञान और भक्ति की चौपाइया है। यानी जप और मुक्ति सजा है—जाओ तुम्हे दस दिन भगवान का भजन करने की सजा दी जाती है। जाओ, तुम्ह भगवान की आरती करने की सजा दी जाती है। ये कोई सजाए हैं? मगर क्या करें—साधो देखो जग बौराना।

और साधो, रिटायड लेफ्टिनेंट जनरल सिन्हा से कलकत्ता म स्थित कूटनीतिज्ञ पटना आकर मिले। जनरल सिन्हा को प्रधान सेनापति नही बनाया, तो उन्होने रिटायरमेंट ले लिया। तब कुछ नेताओ ने हल्ला मचाया था कि जनरल सिन्हा के पिता जयप्रकाश नारायण के साथ थे और उन्होने १९७५ की सपूर्ण क्राति म भाग लिया था। इसलिए इदिरा सरकार ने उनका हक मार दिया। पर सरकार की तरफ से कहा गया कि जनरल सिन्हा को युद्ध के सचालन का कोई

अनुभव नही है। जनरल वैंच को युद्ध का बहुत अनुभव है। अब साधो, इस खबर से कि जनरल सिन्हा इंदिरा विरोधी हैं और जयप्रकाशी हैं, अटलबिहारी, चन्द्रशेखर, चरणसिंह सब गद्गद हो गये। अहा, हमारा जनरल है। अब इसका उपयोग करेंगे। अमेरिका की स्वाधीनता की मूर्ति के स्तनो से भी दूध की धार निकलकर जनरल सिन्हा के मुह मे आने लगी। यही दूध की धार कभी जनरल थिमैया के मुह मे गिरती थी। फिर यही अमरीकी वात्सल्य की दूध की धार जनरल बी० एम० कौल के मुह मे आने लगी। ये जनरल कौल १९६२ के चीनी हमले के वक्त पूर्वी क्षेत्र मे तैनात थे और डरकर असम से भागकर दिल्ली आ गये थे।

साधो, ये जनरल कौल भी अमेरिकी राजदूत से बहुत मिलते थे। एक दिन रक्षा मन्त्री कृष्णा मेनन ने उन्हे बुलाकर कहा—तुम मेरे सिर पर से अमेरिकी राजदूत से क्यो मिलते हो? कौल ने कहा कि मेरे उनसे व्यक्तिगत सबध हैं। मेनन ने कहा—तुम्हारे उनसे क्या व्यक्तिगत सबध हो सकते हैं? कोई रिश्तेदारी है? देखो, तुम एक फौजी अफसर हो। तुम कूटनीतिज्ञो से नही मिल सकते। मिलना हो तो पहले मुझसे अनुमति लो। पर जनरल कौल फिर अमेरिकी राजदूत से मिले। तब मेनन ने उन्हें बुलाया और कहा—देखो तुम फिर मिले। अब तुम अमेरिकी नागरिक क्यो नही हो जाते? भगोड़े जनरल कौल ने चीनी हमले के बाद रिटायरमेंट ले लिया। जो बातें मैंने बतायी है वे खुद जनरल कौल ने अपनी कैफियत की किताब 'दी अनटोल्ड स्टोरी' मे लिखी हैं।

साधो, सेवा मे लगे और रिटायर्ड खास फौजी अफसरो के प्रति अमेरिका का प्रेम इस तरह क्या बरसने लगता है? इसका जवाब इस तथ्य मे है कि इस समय एक रिटायर्ड एअर मार्शल और एक मेजर जनरल पर पैसे लेकर अमेरिका के लिये जासूसी करने के आरोप मे मुकदमा चल रहा है।

साधो, जनरल सिन्हा के बारे मे अखबारो मे खबर छपी कि

अमेरिकी कूटनीतिज्ञ ने जनरल सिंहा से कहा कि आप एक क्षेत्रीय पार्टी बनाकर आगामी चुनाव लड़ें। पैसे की कोई चिंता नहीं—यानी पैसा अमेरिका देगा। इसके बाद जनरल सिंहा का स्पष्टीकरण छपा कि मैंने इस संबंध में गृह और सुरक्षा मंत्रालय को स्पष्टीकरण दे दिया है।

अमेरिकी कूटनीतिज्ञ मुझसे मिले जरूर पर पार्टी और चुनाव की बात नहीं की। हमने विश्व की हालत और सामान्य विषयों पर बातचीत की। साधो अब सवाल उठते हैं—जनरल सिंहा की अमेरिकी कूटनीतिज्ञों से ऐसे प्रेम संबंध कब से थे कि अमेरिकी साहब खुद कलकत्ता से पटना यह पूछने आये कि अब जुकाम कैसा है? कूटनीतिज्ञों से संबंध तो राजनीतिक नेतृत्व के या विदेश सचिवों के होते हैं। फौजी अफसर ने प्रेम-संबंध क्यों बना लिये? जनरल सिंहा ऐसे कौन से राजनीतिक दार्शनिक चिंतक हैं कि अमेरिकी कूटनीतिज्ञ उनसे विश्व के कल्याण के बारे में चिंता के साथ कुछ सीखने आये थे?

साधो, जनरल थिमैया जब कोरिया में भारत की शांति सेना के कमांडर थे तभी अमरीकी शासन ने उन्हें प्रेम रस पिला दिया था। उनके बारे में अमेरिका से अमेरिकी लेखक की एक किताब छपाई गयी थी। जनरल के गुब्बारे में खूब हवा भरी गयी—संसदीय लोकतंत्र भारत में चलेगा नहीं। भारत पर संकट आयेगा तब जनरल थिमैया, आप देश को बचायेंगे। अमेरिका आपको पूरी मदद करेगा। थिमैया भारत लौटे तो अपने को भारत भाग्य विधाता समझने लगे और तैयारी करने लगे अफसरों के एक गुट से मिलकर। यह फौजी तानाशाही की तैयारी थी। जब १९५८ में कृष्णा मेनन रक्षामंत्री हुए तो उन्हें यह सब पहले से मालूम था ही, उन्होंने अफसरों के उस गुट को तोड़ दिया।

उन्होंने जनरल थिमैया के पंख काट लिये। थिमैया ने पंडित नेहरू से शिकायत की, पर मेनन ने महत्त्वाकांक्षी अमेरिका परस्त थिमैया के षड्यंत्र को खत्म कर दिया था।

साधो, यह क्या बात है कि कुछ सैनिक अफसरों को अमेरिका का प्रेम लपेट लेता है? रूसी प्रेम क्यों नहीं लपेटता? क्यों अमेरिकी

स्वाधीनता देवी के स्तनो से दूध जबरन निकलकर इन अफसरो के मुह में गिरने लगता है ? रूसी मा के स्तन मे भी तो दूध है। वह इनके मुह मे क्या नही आता ? जबकि फौजी मामलो मे हमारे रूस से सबसे विश्वासी सबध है। और साधो, यह क्या रहस्य है कि जब किसी अमेरिकी परस्त अफसर पर आरोप लगता है तब हमारे दक्षिणपथी दल उसके पक्ष मे क्यो शोर मचाते हैं ? इन दलो की देशभक्ति की व्याख्या की जाय ? इन्हें रोनाल्ड रीगन क्यो भारत का कल्याण करने वाला लगता है और इंदिरा गाधी देश का नाश करने वाली ? रीगन ने किस भारत माता का दूध पिया है ?

३० सितबर, १९८४

# माया महाठगिनी हम जानी

साधो, महाभारत मे एक प्रसग है जिसमे यक्ष युधिष्ठिर से कुछ प्रश्न करता है। एक प्रश्न करता है—धर्म क्या है? युधिष्ठिर जवाब देते हैं—धर्म का तत्त्व गुहा मे छिपा है। इसलिए महाजन जिस पथ पर चलते हैं वही सत्पथ है। उसी पर चलो। साधो, धर्म का तत्त्व सचमुच इतना गहरा छिपा है कि समझ मे नही आता। अब धर्म की यह उलटबासी देखो। स्वर्ण मंदिर परिसर म पुलिस और फौज के घुसने से प्रधान ग्रथियो की नजर मे मदिर अपवित्र हो गया था। मगर अभी जब भिंडरावाले के सिरफिरे चेला और खालिस्तानिया न प्रमुख ग्रथियो को ही खदेड दिया तब पुलिस ने आकर ग्रथियो की रक्षा की, उन्ह खदेडने वालो को गिरफ्तार किया और प्रमुख ग्रथियो को अकाल तख्त पर कब्जा दिलाया। तब क्या मदिर अपवित्र नही हुआ? इस बार तो पुलिस ग्रथियो की सहमति से आयी थी। प्रमुख ग्रथी कहते हैं—यह अपवित्रता दूर कर ली जायेगी? इसलिए कि यह पवित्र अपवित्रता है जिसने प्रमुख ग्रथियो को प्रापर्टी और पद पर कब्जा दिला दिया। यानी जिसमे स्वार्थ सिद्ध हो वही पवित्र है, वही धर्म है। वही सच्चा पथ है।

साधो भिंडरावाले और उनके हत्यारे गिरोह को खत्म करने के लिए जब सेना घुसी थी तब घोर अपवित्रता हो गयी थी। इसलिए कि प्रमुख ग्रथी अकाली दल की राजनीति खेल रहे थे। तब ये ग्रथ ही भूल गये थे जिसमे गुरुओ के उपदेश हैं कि अत्याचार पाप है। अत्याचारी का दमन होना चाहिए। ग्रथी अत्याचारी को धार्मिक सत और अत्याचार को धर्म

बता रहे थे। अकाल तरत को टूटी फूटी हालत में सजाकर रखना चाहते थे जिससे वह हिंसा और नफरत का दर्शनीय स्मारक बना रहे। यह भी अकाली दल की कुटिल राजनीति थी। जब बाबा संता सिंह ने पंथ के नाम पर किये गये इस पाप को ढाकने के लिये 'कारसेवा' शुरू की तो प्रमुख ग्रंथियों ने उन्हें 'तनखइया' बना दिया। पंथ का अपराधी बना दिया। उन्हें पंथ से निकाल दिया। गुरुओं ने दुराचार रोकने के लिए 'तनखइया' की व्यवस्था की थी। बुरे काम करने वाले को तनखइया' घोषित करके उसका सामाजिक बहिष्कार करने से बुरे काम रुकते हैं। मगर प्रमुख ग्रंथियों ने अच्छा काम करने वाले बाबा संता सिंह को ही 'तनखइया' कर दिया। मगर वह पापी अकाल तख्त की मरम्मत करके उसे वैसा ही शानदार बनाकर चला गया तो प्रमुख ग्रंथियों ने उस पर झट कब्जा कर लिया। यह नहीं कहा कि अकाल तख्त की मरम्मत पाप की और हम इस पाप की इमारत को छोड़ते हैं। साधो, माया महाठगनी हम जानी। धर्मस्य तत्व निहित गुहायाम।

साधो, युधिष्ठिर ने कहा था—महाजन जिस पथ से चलें वही धर्म-पथ है। महाजन तो हमारे यहां 'सूदखोर' को कहते हैं। जो लोग रुपया उधार देकर घर और खेत पर कब्जा कर लेता है। क्या इस महाजन के पथ पर चलना धर्म है? दूसरे महाजन महापुरुष हिटलर जैसे होते हैं जिनके पीछे उन्माद में लोग चलते हैं। इस महाजन हिटलर ने आधी दुनिया का नाश किया था। ऐसे ही महाजन भिंडरावाले हुए जिनके उन्मादी चेले हिंसा कर रहे थे। तब प्रमुख ग्रंथी उनसे डरते थे और समझते थे, वह पंथ की सेवा कर रहा है। तब न उसे अकाल तख्त से निकाला, न आतंकवादी की निंदा की। शांति होने के बाद भी न तो प्रमुख ग्रंथियों ने उस आतंकवाद की निंदा की, न खालिस्तानवाद की। अब जाकर प्रमुख ग्रंथियों ने आतंकवाद की निंदा की जब वे खुद खदेड़े गये। तो धर्म यही कहता है क्या—और गुरुओं का यही उपदेश है कि जब तक अत्याचारी दूसरे बेकसूरों को मारे, वह पुण्य है? मगर जब अपने को ही खदेड़ दे तब पाप है? धन्य है धर्म की इस सही समझ को।

प्रमुख ग्रंथियो के मन मे तो चोर बैठा है।

साधो, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी ने भी ऐसा पवित्र प्रबध किया था कि सारे हत्यारे मदिर मे छिप जाम्रो। यहा गोला-बारूद और हथियार जमा करो। और यहा से बेकसूरो, स्त्रियों और बच्चो की हत्या करते जाम्रो। हत्या करके फिर यही छिप जाम्रो। पुलिस यहा से तुम्हे नही पकडेगी क्योकि हम तो बठे हैं—सरकार को डराने के लिए कि खबरदार, मदिर को अपवित्र मत करना।

साधो, धम का कारोबार बहुत सधा हुम्रा चल रहा है। अगर किसी अपराध मे पकड लिये गये तो पुलिस अफसर के पावो पर पडना पुण्य है। और अगर वही पुलिस अपराध रोकने मदिर मे घुसे तो पाप हो गया। मदिर अपवित्र हो गया। अगर देखा जाये तो देश के सबसे बडे सिपाही राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह हैं। वे तीनो सेनाम्रो के प्रधान सेनापति हैं। वे स्वण मदिर अभी गये थे। उन्होंने ग्रथिया के मुख से अपनी ही सरकार की आलोचना सुनी। धमकिया भी सुनी। मगर मन्दिर तो अपवित्र हो ही गया। क्योकि जैलसिंह बिना वर्दी के देश के सबसे बडे सिपाही हैं।

साधो, अब अकाली दल का कार्यालय भी फिर मदिर परिसर मे आ गया। यह भी शुभ हुआ। यह भी पवित्रता को बढाने के काम मे सहायक होगा। मदिर में आदमी जब जाता है तो इसलिए कि थोडी देर, तो मन, स्वार्थ, छल, प्रपच, नफरत, फरेब से बरी होकर शुद्ध होगा। वरना जिंदगी मे चौबीसो घटे लगे रहते हैं। अकाली दल राजनीतिक दल है। सब राजनीतिक पार्टिया झूठ, फरेब, छल, प्रपच, षड्यत्र करती हैं तो मदिर मे अकाली दल का प्रधान कार्यालय क्यो? शायद इसलिए कि श्रद्धालुम्रो का मन ज्यादा शुद्ध होने लगे तो अकाली दल रोक लगा दे। अधिक शुद्ध होना भी धम के विरुद्ध होता है। साधो, मदिर सारे सिखो का है बल्कि सारी मनुष्य जाति का है। पर अकाली दल में सारे सिख नही हैं। सिखो का अल्प मत अकाली दल मे है। फिर इसे यहा जगह क्या दी गयी? इसलिए कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबधक कमेटी भी अकालियों के हाथ मे है। साधो, इससे पथ की पवित्रता यो सिद्ध होगी

कि पजाब के एक वग के स्वार्थों की माग यहा से उठेगी और उसे 'धमयुद्ध' कहा जायेगा। पिछली बार हिंसा इसी 'धमयुद्ध' के नारे से शुरू हुई थी—जो वास्तव में 'स्वार्थ युद्ध' था।

साधो, अब धर्म का चमत्कार देखो। खतरा टल गया, पुलिस ने ग्रथियो का फिर कब्जा दिला दिया, ग्रथियो की घबराहट मिटी तो उनके मुह से अकाली सकीण राजनीति बोलने लगी। व अब कहते हैं कि यह घटना तो सरकार ने करायी थी। इनके मुह से सत्य कब बोलेगा? इन्हे धम के कारण नहीं डर के कारण सत्य बोलने की आदत पड गयी है। कल ये पुलिस को धयवाद दे रहे थे। आज षड्यन्त्र का आरोप लगा रहे हैं। पता नही कल क्या कहेंगे। गुरुओ समव हो तो इन्ह थोडा विवेक दो।

७ अक्टूबर, १९८४

## हनुमानजी हडताल पर

साधो, दशहरा और मुहरम लगभग साथ पडे और बहुत मामूली विघ्न के साथ देश भर मे मना लिये गये। एक विघ्न तो यह पडा कि एन वक्त पर जब सुदरकाड चल रहा था, तब रावण, हनुमान और सीता ने हडताल कर दी। यह दुघटना दिल्ली के 'श्रीराम कला केंद्र' म हुई। एक बडे उद्योगपति हो गये हैं लाला सर श्रीराम। उनके बेटे हैं—भरत राम और चरतराम। दिल्ली क्लाथ मिल और 'श्रीराम' के नाम से दूसरे कई उद्योग हैं इनके। यह श्रीराम उद्योग समूह है। मगर लदन म बसे उद्योगपति स्वराजपाल ने इन उद्योगा तथा एस्काटस कपनी की पोल खोल दी। उसने कुल ग्यारह करोड के शेयर खरीदकर इन कपनियो को सकट मे डाल दिया। उसने बताया कि इन कपनियो के मालिको का कुल दो प्रतिशत पैसा लगा है। अग्रेजी मुहावरा है—बुल इन ए चाइना शाप, यानी चीनी मिट्टी के बतना की दुकान मे साड का घुस पडना। स्वराज्यपाल ने एसे ही साड का काम किया। ऊपर से वह कहता है—यह मेरा सिफ ग्यारह करोड का 'वेचरे' था। आगे आगे देखिए होता है क्या ?

मगर साधो, मैं बात कर रहा था श्रीराम कला केंद्र की रामलीला की। लाला भरतराम और चरतराम की पत्निया पढ़ी लिखी और कला प्रेमी हैं। पडित नेहरू न प्रोत्साहित किया, जमीन और सरकारी सहायता दी और उन लोगा ने श्रीराम कला केंद्र खोल दिया। इसमे सारा साल ऊचे स्तर के नृत्य, नाट्य और सगीत के कायक्रम होते हैं। नियमित

नौकरी पर कई कलाकार, संगीतज्ञ आदि हैं। साधो, इस साल राम-लीला मे एक वेतन-लीला हो गयी। यह माया 'रमैया की दुल्हन' बाजार लूटती फिरती है। यह रामलीला नत्य-नाट्य (बैले) बहुत मशहूर है। दिल्ली मे भी यह रामलीला होती है और दूसरे शहरो मे भी। इस साल जब सुदरकाड और लकाकाड होने थे, तब रावण, हनुमान और सीता ने हडताल कर दी। इनके बिना रामलीला पूरी हो नही सकती। हनुमान लका नही जलायेंगे, सीता से बात नही करेंगे, वानरो की सेना कमाड नही करेंगे, सजीवनी बूटी नही लायेंगे, मगर सीता? सीता तो अशोक वाटिका मे होगी नही। वे हडताल पर है। रावण भी हडताल पर है तो राम किसे मारें? विभीषण टापते रह गये। साधो, सीता हो, चाहे हनुमान, चाहे रावण—तनखा सबको चाहिए। बिना तनखा के क्या लीला? रोजी रोटी का इतजाम तो भगवान को भी करना पडता है। भक्ति मे कोई 'प्रोटीन' नही होता। साधो, इसी तरह कृष्ण लीला मे जब द्रोपदी नगी की जा रही थी और वह कृष्ण को पुकार रही थी, तब ऊपर साडी लेकर बैठे कृष्ण चिल्लाये—अब कृष्ण साडी नही देंगे। उन्हे तीन महीने से तनखा नही मिली।

साधो, उपट्रस्टी श्रीमती लाला चरतराम कहती हैं—यह कलाकारो द्वारा 'ब्लैकमेल' है। वे नही जानती कि मजदूर मांगें मनवाने के लिए ऐसा ही वक्त चुनते है। अगर केवट को रेट बढवाना होता, तो वह सरयू-तट पर खडे राम से कहता—पहले भरत से कहकर रेट बढवाइए। तब मैं आपको मुफ्त नदी पार करा दूगा। अन्यथा अयोध्या लौट जाइये।

साधो, रामलीला जगह-जगह हुई। ताजिये भी निकले। इनके साथ ही वे लीलाएं भी हुईं, जो करायी जाती हैं। मेरा मतलब 'साप्रदायिक दगो' से है। कुछ जगह हिंदू मुस्लिम दगे भी हुए। हुए नही कराये गये। नागदा मजदूरो की बस्ती है। ट्रेड यूनियन मजबूत है, तो मजदूरो को लडवाना और ट्रेड यूनियन तोडना भी धर्म की माग थी। धर्म की यह माग पूरी की गयी। बाकी जगह पत्थर फिकवा दिये। हजार रुपये दो तो चार गुडे पत्थर फेंक देंगे धार्मिक जुलूस पर। उत्तर प्रदेश मे मऊनाथभजन मे कई उद्योग हैं। वहा मजदूरो को लडवाना मालिको के

एजेंटो के लिए दुर्गाभक्ति और रामभक्ति था। पत्थर फिकवाकर यह अनुष्ठान किया गया, जिसे बढाया जा रहा है। सब मगल काय हैं। अयोध्या मे भगवान राम को अपनी जमीन पर कब्जा दिलाने राजनीतिक उचक्कों ने बिहार के सीतामढी से रथयात्रा निकाली। यह किस साम्प्रदायिक राजनीतिक दल और भारतीय सस्कृति के रखवाले किस चोर गिरोह का अभियान है, यह सब समझते हैं। जिन राम ने किष्किंधा से लका तक विजय करके राज सुग्रीव और विभीषण को दे दिया, उन्ही राम को अपनी जन्मभूमि पर कब्जा अब राजनीति के कीडे मच्छर और पिस्सू दिला रहे हैं। राम का यह काम अगले चुनाव मे सीटें जीतने के लिए किया जा रहा है। इसीलिए सारे उत्तर भारत मे रथयात्रा करके यह प्रचार किया जा रहा है कि देखो, इस पापी सरकार को कि भगवान राम की जन्म-भूमि म्लेच्छों को दे दी है। अब हमे मत दो तो हम धम की रक्षा करेंगे। यह रथयात्रा लखनऊ तक होगी क्योंकि कब्जा तो लखनऊ की सरकार पर करना है। इसके बिना राम को उनकी जन्मभूमि पर कब्जा दिलाना व्यथ है।

साधो, दूसरी तरफ शिया और सुन्नी मे सिर फुटौवल की अस्म अदा हो गयी। कोई विरादराने मुसलमीन नही है। शिया है, सुन्नी है, अहमदिया है, बहावी है। करीब चौदह शताब्दी पहले की खलीफा के पद की लडाई की घटना है जिसकी याद मे आज भी मुहरम पर शिया सुन्नियो को—'लानत है, लानत है' कहते हैं और सुन्नी हमला कर देते है। अब तो खिलाफत ही नही रही। वह ओहदा ही मुस्तफा कमाल पाशा ने खत्म कर दिया। मगर शिया-सुन्नी जहा भी हैं लडे जा रहे हैं।

साधो, तीन सालो से दशहरा और मुहरम साथ पड रहे हैं। एक बार तो एक ही दिन। इस बार दशहरा और मुहरम दो दिन के अतर से पडे। इस देश मे हिंदू और मुसलमान के त्योहारो का होना सहज नहीं माना जाता। न उसे सहज होने दिया जाता। दशहरा है तो हो जायेगा। मुहरम है तो ताजिये निकल जायेंगे। यह सहज मानसिकता बनने नही दी जाती। इससे ठीक उलटी मानसिकता महीने भर पहले से

बनायी जाती है। शासन में क्षेत्रा, खासकर पुलिस म घबडाहट मचती है—अरे बाप रे, इस साल तो दशहरा और मुहरम एक साथ हैं। कुछ हो न जाय! इस घबडाहट मे शासन 'ओवर एक्टिंग' करने लगता है। इधर दो दो कौडी के नेता बयान देने लगते हैं कि हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई हैं। इसलिए दोना पव शाति से मना लें। अपीलें निकलती हैं जिम्मेदार लोगो की कि शाति रखें, साप्रदायिक सद्भाव बनाये रखें। जिनकी बात उनका कुत्ता भी नही मानता, वे छुटभैया नेता भी अपील निकालते हैं। साधो, दगा आकस्मिक नही होता। कोई हिंदू या मुसलमान नागरिक घर से निकलकर परस्पर नही लडते। दगा हमेशा आर्थिक और राजनीतिक फायदे के लिए साप्रदायिक राजनीति के नेता कराते हैं। अगर इन्हे दगा कराना हो, तो क्या वह इन अपीलों से रुक जायेगा?

मगर साधो, दोनो सप्रदाया को याद दिलायी जाती है कि परपरा से ऐसे मौके पर लडना तुम्हारा घम है। तुम लडोगे तो वह स्वाभाविक और नीतिगत होगा। इस तरह साप्रदायिक जहर उभारकर ये अपीलो और बयानो वाले झगडे की मानसिकता बनाते है। सोचो, इससे क्या दगा को प्रोत्साहन नही मिलता? चुप रहकर दशहरा और मुहरम हो क्या नही जाने देते? मगर चुप रह तो बताए कब कि हम तुम्हारे नेता हैं?

१४ अक्टूबर, १९८४

## उत्तर की डी० एम० के०

साधो, मगरमच्छ भैंस निगलने की महत्त्वाकांक्षा लिये मुह फाड़े बैठा था, मगर भैंस हर बार खिसक जाती थी। आखिर मगरमच्छ ने घोड़ा और बिल्ली, खरगोश, चूहा निगलकर सतोष कर लिया। बिल्ली, खरगोश, चूहा मगर के पेट को सुरक्षित समझकर चले गये है। मगर जब मगरमच्छ इन्हे चबाने लगेगा तब कोई तो नाक या मुह म से खिसककर बच जायेगा, और कोई चबाया जाकर पचा लिया जायेगा। साधो, चरण सिंह चद्रशेखर से कह रहे थे कि गठबधन नही, विलयन होना चाहिए—यानी मेरे पेट मे जनता पार्टी आ जाय। चद्रशेखर के अगमग हो रहे थे मगर वे मगरमच्छ के मुह मे 'विलयन' के लिए नही गये। आखिर अभी अभी बहुगुणा लोकतांत्रिक समाजवादी दल लेकर चरणसिंह मे विलय कर गये। गुजरात के रतुभाई अदानी आ गये। जनता पार्टी के काफी नेता आ गये। और आ रहे हैं। शरद पवार की पार्टी लगभग पेट में चली गयी। देवीलाल वगैरह को, समाजवादियो को डेढ साल पहले चौधरी ने 'गेट आउट कर' दिया था। अब उन्हें 'गेट इन' का हुक्म दे दिया। चौधरी साहब का पार्टी चलाने का यही लोकतान्त्रिक तरीका है—डिसमिस ! गेट आउट ! कम इन ! साधो, तुम पूछोगे कि गुरु, ये लोग आ क्यो गये। बात यह है कि इन्हें कही और जाने को नही था। इनमे कोई राष्ट्रीय नेता नही हो सका। बहुगुणा राष्ट्रीय नेता होने की महत्त्वाकांक्षा रखते थे, मगर वे क्षेत्रीय ही रह गये। चौधरी चरणसिंह रेडीमेट और स्थायी राष्ट्रीय नेता हैं। हालाकि उनके अनुयायी उत्तर के तीन राज्यो मे जाट और यादव बड़े किसानो मे से ही हैं।

साधो, चौधरी साहब ने 'दलित मजदूर किसान पार्टी' बना ली है। चुनाव की घोषणा होते होते वे दो बार और दूसरे नामो से पार्टिया बना सकते हैं। जिंदगी भर वे यही करते रहे हैं। वे बहुत मुलायम लौह-पुरुष हैं। अब एकदम चुनाव हो जायें तो यह पार्टी काम की है। देर हुई तो यह नयी पार्टी बेकाम हो जायेगी। चौधरी सीमेंट की तरह हैं। सीमेंट मे पानी डालकर उस घोल को फौरन फर्श या दीवार पर या जोड मे लगाना पडता है। तब वह जकडती और जोडती है। देर हो जाये तो सीमेंट पत्थर होकर बेकार हो जाती है। अगर चुनाव मे देर हुई तो यह दलित मजदूर किसान पार्टी की बोरी की सीमेंट बेकार हो जायेगी और चौधरी नयी पार्टी की नयी सीमेंट की बोरी ले लेंगे।

साधो, यह दलित मजदूर किसान पार्टी है। दलित कौन हैं, यह चौधरी तय करेंगे। दलित का इतना ही अधिकार और कर्त्तव्य है कि वह बडे भूमिपतियो की निष्काम सेवा करें और कभी कभी उत्सव के लिए उनसे सिर फुडवायें और अपनी झोपडियो मे आग लगवाकर होली मनाए। मजदूर को चौधरी चोर और डाकू समझते हैं। उनका कहना है कि मजदूर सगठित होकर मजदूरी बढवाते हैं। बोनस लेते हैं—तो इस तरह पूजी पर डाका डालते हैं। लीजिए, हो गया मजदूरो का भला। अब किसान चौधरी, अपने को किसान नेता मानते हैं। मगर किसान कौन? छोटे किसान को वे किसान नही मानते। बडे किसानो को इनकी जमीन छीन लेना चाहिए और इनसे अपने खेतो पर बेगार कराना चाहिए। चौधरी सहकारी खेती के घोर विरोधी हैं क्योकि इसमे छोटे किसान मिलकर पनपते हैं। ये सब सिद्धात चौधरी साहब के पहले से तय हैं, इसलिए पार्टी का घोषणा पत्र बनाने और कार्यक्रम तैयार करने का पाखड करने की जरूरत नही है। सिद्धात, झडा कार्यक्रम—सब चौधरी हैं।

साधो, मैंने पहले कहा है कि अभी मगरमच्छ निगल रहा है। इसके बाद वह एक-एक को चबायेगा। कर्पूरी ठाकुर वगैरह समाजवादी निगले जायेंगे। भूतपूर्व साम्यवादी चद्रजीत यादव भी पेट मे पहुचेंगे। जब

चबाये जायेंगे तब बहुगुणा का रूस समथन, अल्पसख्यक प्रेम, समाजवाद कचूमर हो जायेंगे। चरणसिंह बहुगुणा को के०जी०बी० एजेंट कहते रहे हैं। चालाकी मे इदिरा गाधी से हार खाकर बहुगुणा काग्रेस छोडकर खुद राष्ट्रीय नेता बनने लगे। इदिरा विरोध ने उन्हे पागल बना दिया और उन्होने बयान दे दिया कि सोवियत नेता भारतीय जनता से नहीं, एक व्यक्ति इदिरा गाधी से मित्रता रखे हैं। यह परिपक्व और बुद्धिमान रूसी नेता वग का अपमान तो है ही, भारत की जनता का भी अपमान है। हताशा मे बहुगुणा चौधरी के पेट म चले गये। चौधरी इनके समाजवाद, रूस प्रेम, मुस्लिम समथन, धम निरपेक्षता को चबाकर पचा लेंगे। लोहिया समाजवादियो के समाजवाद और वण-समानता को भी चौधरी पचाकर दस्त के रास्ते से निकाल देंगे। चद्रजीत यादव के वैज्ञानिक समाजवाद को चौधरी थूक देंगे।

साधो, इसके बाद चौधरी चुपचाप भारतीय जनता पार्टी से समझौता करेंगे। ये पेट मे जाने वाले अभी अभी तक इस पार्टी को साम्प्रदायिक कहते हैं जो वह है मगर जब चौधरी अटलबिहारी से समझौता करेंगे तब इन समाजवादियो और धमनिरपेक्ष लोगो को अटलबिहारी की शरण मे जाना होगा। आखिर ये चौधरी के पेट में हैं, बाहर स्वतत्र नही है।

साधो, सिद्धातहीन इस राजनीति को देखकर मुझे इन लोगो पर गुस्सा भी आता है और दया भी आती है। अपना क्या हाल कर लिया इन लोगो ने! अधी राजनीति, अधी नफरत, अधी कुर्सी दौड मे ये कभी के क्रातिकारी अब हास्यास्पद विदूषक हो गये हैं। चौधरी मस्त हैं—

सबसे भले विमूढ़ मति जिनहिं न व्यापे जगत गति!

**२८ अक्टूबर, १९८४**

## देशभक्ति विभाजित

साधो, अब यह स्पष्ट हो गया है कि 'दक्षिणपथी राजनीतिक दल' यह मानते हैं कि जो भारत देश नाम की जायदाद है, इस पर इंदिरा गांधी ने कब्जा कर रखा है। यह उन्होने व्यक्तिगत जागीर बना रखी है। ये दल यह भी मानते हैं कि यह कब्जा नाजायज है और इस जागीर पर असली हक उनका है। वे इस जागीर पर एक बार कब्जा कर चुके थे, पर यह सिर्फ ढाई साल रहा। अब वे स्थायी रूप से इस जागीर पर कब्जा करने की कोशिश मे लगे हैं। जब तक यह जागीर इंदिरा गांधी के कब्जे मे है तब इसकी रक्षा की जिम्मेदारी भी सिर्फ उन्हीं की है। पाकिस्तान अमेरिका चीन से अगर भारत जागीर को खतरा है तो उससे इंदिरा गांधी निपटे। हम क्या दूसरे की जागीर की रक्षा करें? बल्कि हम तो चाहेंगे कि भीतर और बाहर से यह इतनी तंग हो जायें कि कब्जा छोड़ दें तो हम जागीर पर कब्जा कर लें।

साधो, बड़ी साफ और सुखदायक स्थिति है। तुम चाहो तो इसे देशभक्ति भी कह सकते हो, राष्ट्रभक्ति भी कह सकते हो, राजनीतिक विवेक भी कह सकते हो। मगर वास्तविक स्थिति बिलकुल यही है। साधो, प्रधानमंत्री लगभग रोज ही बाहरी खतरे से देश को सावधान कर रही हैं। अगर वे झूठा डर पैदा कर रही हैं, युद्ध का उन्माद पैदा कर रही हैं, व्यर्थ उलझ रही हैं तो सचमुच बुरा कर रही है। मगर यह तय कौन करे कि वे झूठा हौआ खड़ा कर रही हैं? ये दक्षिणपंथी दल कहते हैं कि वे खतरे का हौआ खड़ा करके चुनाव जीतना चाहती हैं। अगर

वे सचमुच यह कर रही है, तो बहुत गलत कर रही हैं। मगर यह कसे जाने कि वे ऐसा कर रही हैं? साधो, इसका एक पक्का तरीका तो यह है कि यह मान लिया जाय कि इंदिरा गांधी हर बात झूठ बोलती हैं और चंद्रशेखर, जार्ज फर्नांडिस, बीजू पटनायक, अटलबिहारी वाजपेयी वगैरह हर बात सच बोलते हैं। यह मान लो कि इस देश मे जैसे धान और गेहू और चने की नस्लें हैं वैसे ही राजनीतिज्ञो की भी नस्लें है। यहा सच्चे राजनेता और झूठे राजनेता के बीज अलग अलग हैं। झूठ के बीज से पैदा हुए हैं कांग्रेस नेता तथा दोनों कम्यूनिस्ट पार्टियो के नेता और चंद्रजीत यादव जैसे कुछ वामपंथी। ये सच्चे हो ही नही सकते क्योकि ये झूठ के बीज से पैदा हुए हैं। बाकी दक्षिणपंथी सच के बीज से पैदा हुए हैं। अटलबिहारी वाजपेयी वगैरह सधी भाजपाई की विकसित नस्ल है—संकर नस्ल। ये पहले घोर पाकिस्तान विरोधी थे, मगर अब पाकिस्तान समर्थक। झूठ और सच और पाखंड के संकर बीज से यह फसल आयी है। अच्छी है। साधो, अगर झूठो और सच्चो की ये दो नस्लें मान लें तो बात समझ मे आ जाती है।

मगर साधो, तुम लोग हो काइयां। इतनी सहज बात मानोगे नही। दांव पेंच मे सोचोगे। तुम पूछोगे, गुरु यह बताइए कि जब भी प्रधानमंत्री पाकिस्तान का नाम लेती हैं, तब देशी मुहावरे के अनुसार इन्हे मिर्ची क्यो लग जाती है? अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा था—मैं पंजाब मे कोई विदेशी हाथ नही देखता। जो है, वे देशी हाथ है जिनमे एक दस्ताने पहने कोमल हाथ भी हैं। इसका क्या अर्थ है? क्या अटलबिहारी को यह भी बरदाश्त नही है कि यह कहा जाए कि पाकिस्तानी हथियार मिले हैं पाकिस्तानी मुद्रा मिली है पाकिस्तानी मदद के सबूत मिले हैं? तुम पूछोगे—गुरु जो तथ्य है, जो शक है, वह क्यों न कहा जाय? अटलबिहारी वाजपेयी जैसे राष्ट्रभक्त अपनी मातृभूमि भारत माता की चिंता छोडकर पाकिस्तान की चिंता मे क्या लगे हैं। चंद्रशेखर कहते हैं—इंदिरा गांधी पाकिस्तान से खतरे का झूठा हौआ खडा कर रही हैं, हालाकि मैं भी इस खतरे को कम करके नही

थांकता। मैया चद्रशेखर, तू भी खतरे को कम नही आक्ता। फिर अगर देश की प्रधानमत्री आगाह कर रही हैं, तो क्या बुरा कर रही हैं। तू अगर प्रधानमत्री होता तो तू भी आगाह करता।

साधो, तुम पूछोगे कि पाकिस्तान इतने हथियार क्यो एकत्र कर रहा है ? हिंद महासागर मे अमेरिकी फौजी बेडे किसके लिए घूमते हैं ? अमेरिका ने झूठी खबर उडा दी कि भारत के जगुआर विमान आगे के मोर्चे पर पहुच गये हैं और वे पाकिस्तान के अणु ठिकानो को नष्ट करने वाले हैं। इस झूठी खबर से रीगन प्रशासन ने अमेरिकी जनता सीनेट और कांग्रेस को धोखा देकर पाकिस्तान को नयी हथियार पूर्ति के आदेश पर दस्तखत कर दिये। और फिर कह दिया कि बादलो के कारण हमारे उपग्रह को गलत दिख गया था। अब रीगन कहते है कि अगर भारत ने पाक पर हमला किया तो अमेरिका पाक की मदद करेगा। सवाल है कि कौन तय करेगा कि भारत ने हमला किया ? वही अमेरिकी उपग्रह बतायेगा जिसने अभी बादलो मे जगुआर विमान देख लिये थे ? जब यह सब हो रहा है, तब अगर प्रधानमन्त्री कहती हैं कि सावधान रहो, तो ये दक्षिणपथी दल क्यो चिढ जाते है ?

साधो, इस देश मे देशभक्ति सीधे सीधे विभाजित हो चुकी है। रिटायर्ड लेफ्टिनेंट जनरल सिन्हा, जिनकी तबियत का हाल पूछने कलकत्ता से अमेरिकी कूटनीतिज्ञ पटना आये और बात करके सीधे अमेरिका चले गय। वे जनरल सिन्हा अपनी ठीक जगह आ गये। वे पूना मे भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय परिषद मे अतिथि की हैसियत स बोलेंगे। वे चुनाव भी लडेंगे। साधो, साफ है कि जनरल सिन्हा जब नौकरी पर थे, तभी से अमेरिकी कूटनीतिज्ञ से उनके सबध थे। यह अनुशासन भग था।

साधो, तो देशभक्ति का विभाजन इस तरह हो गया है। दक्षिण-पथी उस अमेरिकी योजना के हिसाब से काम कर रहे हैं जिसमे एशिया मे अमेरिका द्वारा मोर्चाबदी है। ये भारत की स्वाधीनता को सीमित करके देश को इस अमेरिकी जाल मे डालना चाहते हैं। तभी उन्हे सब

कुछ प्यारा लगता है, जो अमेरिकी हो—यहा तक कि पाकिस्तान को दिये जा रहे हथियार भी। इन पवित्र हथियारो से मरने से स्वग मिलता है। यह देशभक्ति भारत की पक्षधर न होकर अमेरिका की पक्षधर है। दूसरी देशभक्ति है—देश स्वाधीन व गुट निरपेक्ष रहे, अमेरिका की अधीनता स्वीकार न करे, आत्म-सम्मान बनाये रखे और समाजवादी देशो से मित्रता रखे। आगामी चुनाव इन दो प्रकार की देशभक्ति की आपसी लडाई है। इसीलिए अमेरिकी डालर यहा बह रहे हैं। एक देशभक्ति है अमेरिकी साम्राज्यवाद का साथ देना और दूसरी उसका विरोध करना।

३० अक्टूबर, १९८४

□□□